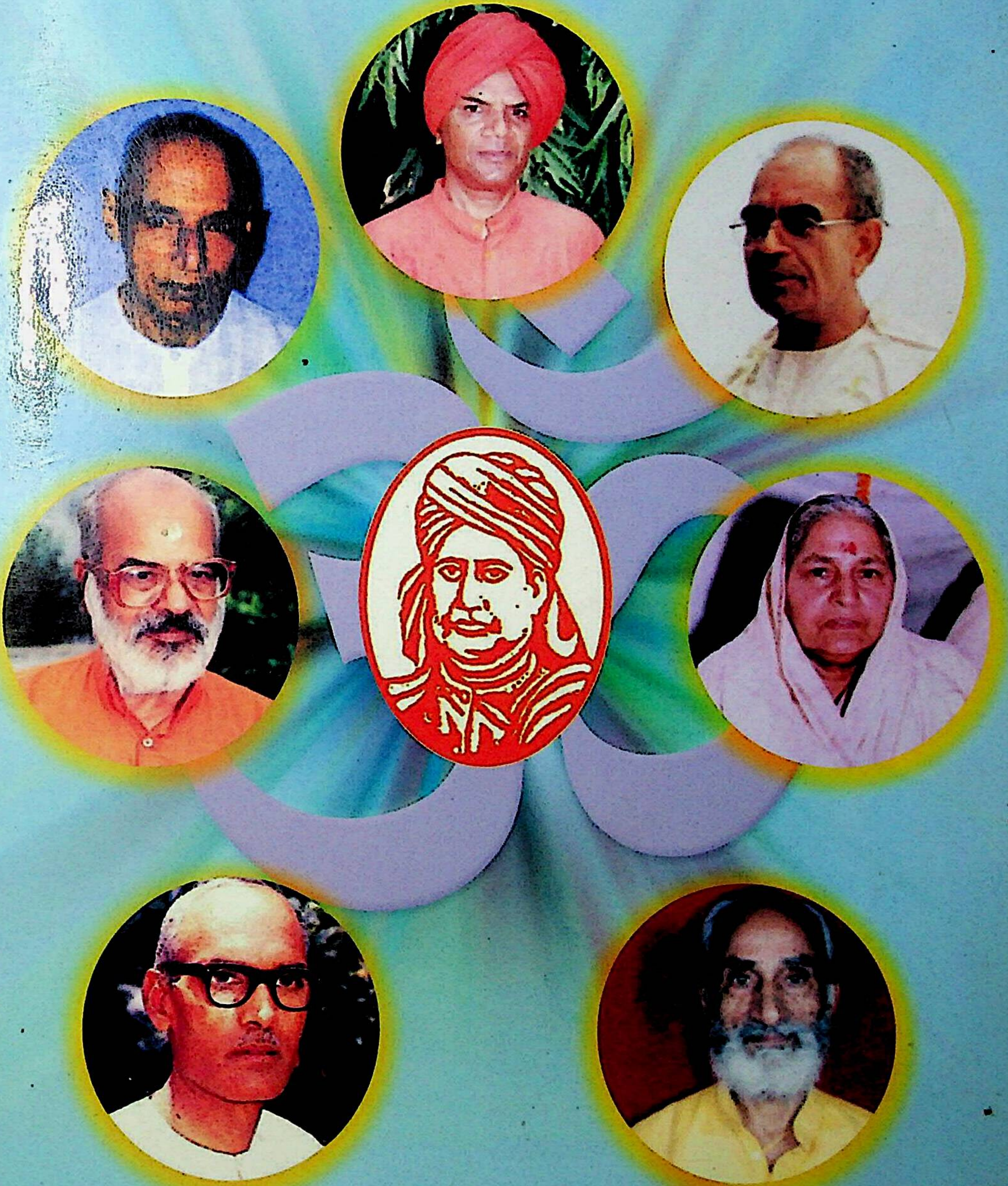
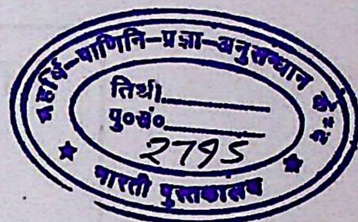
ओ३म्

आर्य-विद्वत्-परिचय



-आचार्य आनन्दप्रकाश

आर्ष-विद्या-प्रचार-न्यास, ग्रन्थमाला - ३



ओ३म्

आर्य-विद्वत्-परिचय

(आर्य-संन्यासी, गुरुकुलों के आचार्य, उपदेशक/शिक्षक, आर्य-लेखक, आर्य-पुरोहित, वानप्रस्थी, आर्य-भजनोपदेशक)

लेखक / सम्पादकः
आचार्य आनन्दप्रकाश
व्याकरण-निरुक्त-दर्शनाचार्य, वेदवागीश
संस्थापक : आर्ष-शोध-संस्थान
प्रबन्धक-न्यासी : आर्ष-विद्या-प्रचार-न्यास (पं.)

आर्ष - शोध - संस्थान
अलियाबाद

प्रकाशक :

आर्ष-विद्या-प्रचार-न्यास

आर्ष - शोध - संस्थान

(कन्या - गुरुकुल)

अलियाबाद, शामीरपेट

जि. रंगारेड्डी - ५०० ०७८ (आन्ध्र - प्रदेश)

दूरभाष : ९२८-२४४९५३, २४४९९७

एस.टी.डी. (०८४१८) - २४४९५३, २४४९९७

प्रथम संस्करण - २००० प्रतियाँ

पौष, २०५९ वि.सं.

जनवरी सन् - २००३

ISBN : 81 - 87931 - 02 - 7

अन्तर्राष्ट्रिय मानक पुस्तक - संख्या : ८१-८७९३१ - ०२ - ७

मूल्य : ७५-०० रुपये

मुद्रक :

युनिवर्सल ग्राफिक्स

सिकन्दराबाद - १५.

ARYA-VIDWAT-PARICHAYA

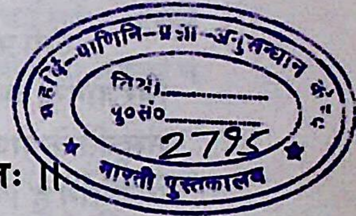
By : ***Acharya Anand Prakash***

भूमिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा." -(यजु.७/१४)

अर्थात् जो वैदिक-संस्कृति / सभ्यता संसार की सर्वप्रथम, विद्या एवं सुशिक्षा से युक्त, सर्वहितकारिणी है; वह सब स्वीकार करने योग्य है ।

इसी संस्कृति के अनुसरण से ऐहलौकिक एवं पारलौकिक उन्नति हो सकती है । इसी संस्कृति के अनुसरण से सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा । राजा और प्रजा दोनों समृद्धि एवं धार्मिकता की पराकाष्ठा तक पहुँचे । इसी संस्कृति का आचरण करते हुए अश्वपति जैसे राजाओं ने घोषणा की थी, कि :-



न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्, न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ।।

-छान्दो.उ.५/११/५

अर्थात मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, कोई शराबी नहीं है, कोई नित्य अग्निहोत्र न करने वाला नहीं है, कोई अविद्वान् नहीं है, व्यभिचारी नहीं है, फिर व्यभिचारिणी तो हो ही कैसे सकती हैं ।

वस्तुतः यही मानवता की चरमसीमा है । परन्तु महाभारत के विश्वयुद्ध से वह वैदिक-संस्कृति बाधित हुई । वेद-वेदाङ्गों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने वाले ऋषि-मुनियों एवं उनके विद्यालयों का पोषण तथा संरक्षण करने वाले बहुत से राजाओं एवं विद्वानों के उस युद्ध में मारे जाने से वैदिक-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में बाधा पड़ने लगी । लोभ, आलस्य, प्रमाद, विषयासक्ति, अहंकार आदि दोषों तथा पोषण एवं संरक्षण की कमी से ऋषि-मुनियों के अभाव में वह वैदिक-संस्कृति और विद्या लुप्त होने लगी । जो बलवान् हुआ वह देश को दबाकर राजा बन बैठा । जब ब्राह्मण लोग भी विद्याहीन हो गये तब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के अविद्वान् होने का तो कहना ही क्या । ब्राह्मण लोग केवल जीविकार्थ

पाठमात्र पढ़ने लगे । वह भी स्त्री, शूद्र आदि को नहीं पढ़ाया ।

ऐसी स्थिति में जैसा जिसके मन में आया वैसा मत-पन्थ चला दिया । इस प्रकार अन्धपरम्परा चलने लगी । जैसा कि महर्षि कपिल ने कहा है :-

उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः ॥

इतरथाऽन्धपरम्परा ॥ - सांख्य.३/७९,८१

अर्थात् जिज्ञासु उपदेश्य(=श्रोता, पाठक आदि) और तत्त्वज्ञानी उपदेष्टा के होने पर जीवन्मुक्ति, मानवता, वैदिक-संस्कृति की प्रसिद्धि होती है, अन्यथा समाज में अन्ध -परम्परा फैल जाती है । स्वयं भ्रमयुक्त उपदेष्टा जिज्ञासुओं को भी भ्रम में डाल देता है ।

उसी प्राचीन वैदिक-संस्कृति, विद्या का महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महर्षि विरजानन्द दण्डी की प्रेरणा से पुनः प्रचार-प्रसार आरम्भ किया । उसी वैदिक-संस्कृति के पोषण में गत १२७ वर्षों से आर्य-जगत् के सैकड़ों विद्वानों का इतिहास विद्यमान है । वर्तमान में भी सैकड़ों विद्वान् कार्यरत हैं ।

परन्तु साधारण आर्य-जनता विशेष जानकारी / परिचय की कमी से उन विभिन्न प्रकार के विद्वानों का यथावसर उपयोग नहीं कर पाती । परिचय न होने से विशेष अवसर पर अपेक्षित उपदेशक, संन्यासी, पुरोहित आदि का लाभ नहीं उठा पाती ।

इधर अनेक विद्वानों द्वारा मिलकर सम्पन्न होने वाले कार्य भी उपयोगी व्यक्ति न मिलने से अधूरे रह जाते हैं । अनेक पुरोहित उपदेशक आदि का प्रतिदिन सदुपयोग नहीं हो पाता ।

इन सब परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मेरे मन में विचार उठता रहता था, कि इस प्रकार के वर्तमान / जीवित विद्वानों का, जो अपना जीवन वैदिक-विद्या / वैदिक-संस्कृति / मानवता के पोषण एवं वृद्धि में लगा रहे हैं, उनका संक्षिप्त-परिचय लिखना चाहिए । इसी विचार का अनुकूल श्री डॉ.बी.एम्. मेहत्रे ने अपेक्षा प्रकट की, कि इस प्रकार के विद्वानों का संक्षिप्त-परिचय हो, तो अच्छा रहेगा । दोनों के विचार मिलते ही कार्य प्रारम्भ हो गया । आपने मुद्रण-व्यय का भार वहन करने का आश्वासन देकर आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर दिया ।

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से, व्यक्तिगत पत्र लिखकर तथा दूरभाष आदि के द्वारा तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया । बहुत से महानुभावों ने सूचना

मिलते ही जानकारी भेज दी। परन्तु बहुत से प्रसिद्ध एवं योग्य महानुभावों ने वार-वार पत्र लिखने, दूरभाष करने, मिलने पर भी संकोचवश अथवा लोकैषणा न होने से अथवा अनावश्यक समझकर अपेक्षित जानकारी नहीं भेजी।

ऐसी स्थिति में यह जानते हुए भी, कि इस संग्रह में बहुत से उपयोगी विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों का परिचय संगृहीत नहीं हुआ है, यह अपेक्षा से छोटा प्रथम-खण्ड प्रकाशित किया जा रहा है।

आर्य-जनता से निवेदन है, कि इस प्रकार के विद्वानों का यथोचित स्वागत, सम्मान एवं सहयोग करें। इनके सुख- दुःख में सहानुभूति रखें। जिससे ये महानुभाव अपने कार्य में लगे रहें तथा अपनी सन्तति अथवा अनुचरों को इस वैदिक-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगने के लिए प्रोत्साहित कर सकें। जिससे वैदिक-संस्कृति के लुप्त होने तथा अन्धपरम्पराओं के प्रचलित होने का अवसर न आने पावे।

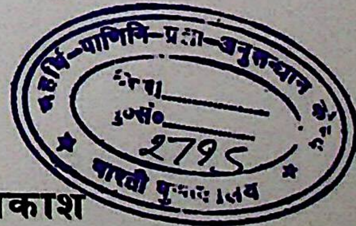
इस संग्रह से अवशिष्ट विद्वानों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों एवं संन्यासी आदि महानुभवों से पुनः निवेदन है, कि वे अपने जीवन एवं कार्यों के विषय में जानकारी (लगभग दो पृष्ठों में) लिखकर पासपोर्ट आकार के रंगीन छायाचित्र के साथ भिजवा देवें।

आभार :-

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ जिन महानुभावों ने अपेक्षित जानकारी भेजी, उपयोगी सुझाव एवं तथ्य प्राप्त कराये, हम हृदय से उनके आभारी हैं।

इसके प्रकाशन में आर्थिक-सहयोगी डॉ.बी.एम्.मेहत्रे जी का भी हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं, जिनके सौजन्य से यह प्रथम-खण्ड प्रकाशित हो सका।

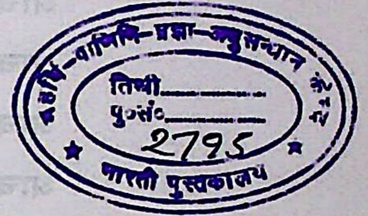
आशा है, आर्य-जनता इस 'आर्य-विद्वत्-परिचय' पुस्तक में लिखे विद्वानों के परिचय से प्रेरणा एवं लाभ प्राप्त कर सकेगी। उनका यथोचित सम्मान एवं सहयोग करेगी।



आषाढ़-पूर्णिमा २०५९ वि.सं. — विनीत :-

बुधवार, २४/७/२००२ई. — आचार्य आनन्दप्रकाश

विषय सूची



डॉ. सत्यव्रत राजेश

आचार्य आर्यनरेश

डॉ. देवव्रत आचार्य

श्री- जगवीर सिंह

डॉ. कमलेशकुमार छ. शास्त्री

डॉ. सोमदेव शास्त्री

डॉ. धर्मवीर आचार्य

डॉ. दिवाकर आचार्य

आचार्य रामकिशोर शर्मा

डॉ. ओम्प्रकाश वेदालंकार

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी

पं. विशिकेसन शास्त्री

वेदप्रकाश ' श्रोत्रिय '

पं. महेन्द्रपाल आर्य

आचार्य भगवान् देव ' चैतन्य '

श्री. विट्ठलराव आर्य

आचार्य अमृतलाल शर्मा

ब्र. वीरेन्द्र आचार्य

पं. यशःपाल आर्यबन्धु

ब्र.नचिकेता शास्त्री

ब्र. जीवानन्द ' नैष्ठिक '

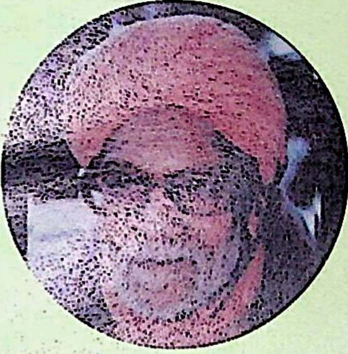
आचार्य भद्रसेन

पं. भूदेव शास्त्री

पं. मोहित शुक्ल

डॉ. विष्णुमित्र आचार्य

आर्य - संन्यासी



स्वामी सर्वानन्द सरस्वती



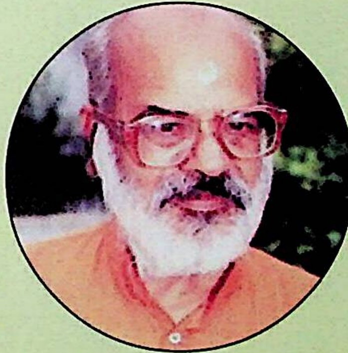
स्वामी ओमानन्द सरस्वती



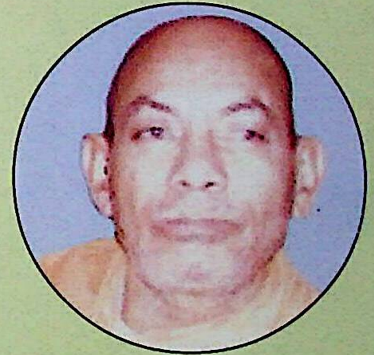
स्वामी सत्यपति परिव्राजक



स्वामी विद्यानन्द सरस्वती



स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती



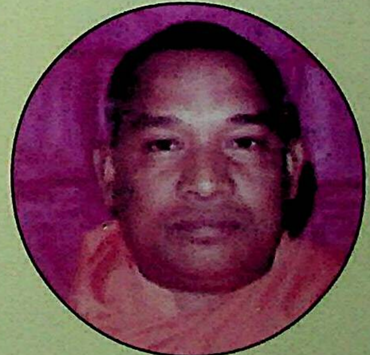
स्वामी धर्मानन्द सरस्वती



स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

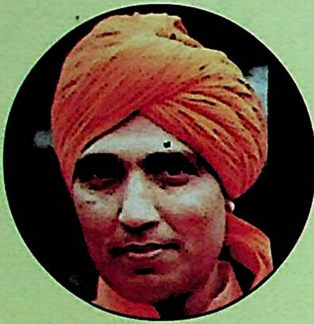


स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

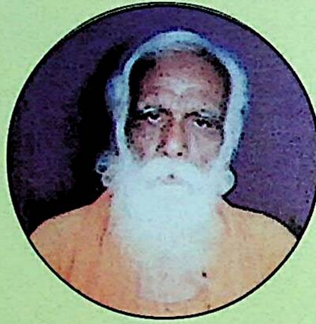


स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

आर्य - संन्यासी



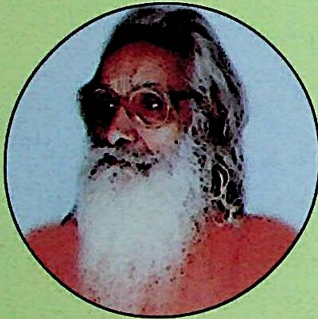
स्वामी अग्निवेश



स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती



स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती



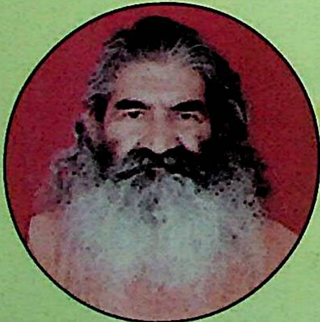
स्वामी वेदमुनि परिव्राजक



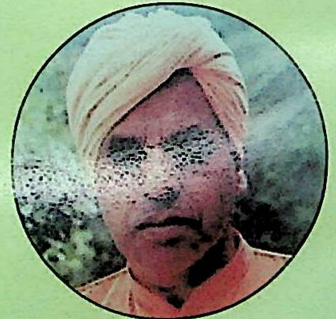
स्वामी वेदानन्द सरस्वती



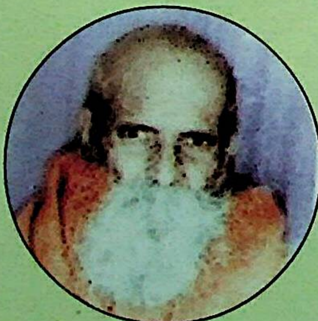
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती



स्वामी धर्ममुनि



स्वामी सुमेधानन्द



स्वामी इन्द्रदेव यति



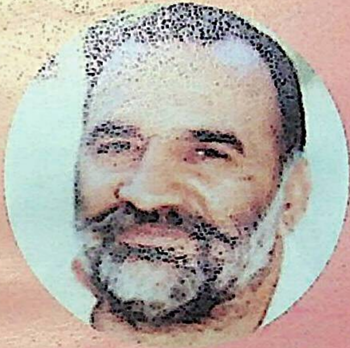
स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

गुरुकुलों के आचार्य


आचार्य डॉ. विजयपाल

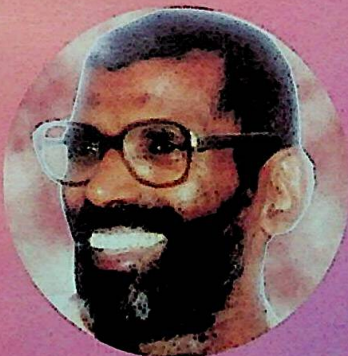

आचार्य विश्वदेव शर्मा


आचार्या मेधादेवी


आचार्य विजयपाल योगार्थी


आचार्या डॉ. सुमेधा


आचार्या डॉ. सुकामा

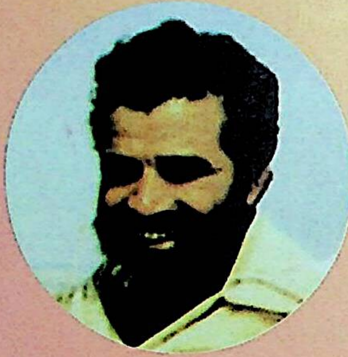

आचार्य वेदव्रत मीमांसक


आचार्या प्रियंवदा ' वेदभारती '

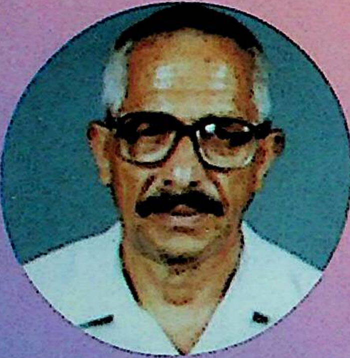

आचार्य प्रद्युम्न

गुरुकुलों के आचार्य


आचार्य ज्ञानेश्वरार्य


आचार्य डॉ. धर्मपाल


आचार्य हरिदेव


आचार्य डॉ. जयदत्त उप्रैती


आचार्य सुभाषचन्द्र शास्त्री


आचार्य चन्द्रदेव जी


आचार्य डॉ. हरिवीरसिंह (पं. बुद्धदेव)


आचार्य रवीन्द्र


आचार्य सत्यजित्

गुरुकुलों के आचार्य



ब्र. सत्येन्द्रार्य



आचार्य जगद्देव नैष्ठिक



आचार्य विद्यादेव



आचार्य नागेन्द्र कुमार

उपदेशक / शिक्षक



आचार्या सूर्यादेवी



आचार्या नन्दिता शास्त्री



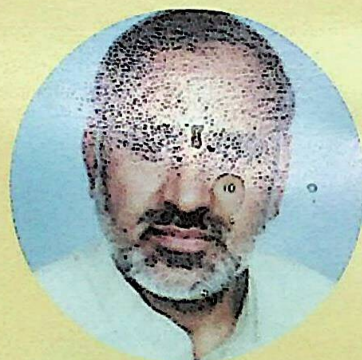
डॉ. सत्यव्रत राजेश



आचार्य आर्यनरेश



डॉ. देवव्रत आचार्य



जगवीर सिंह एडवोकेट



डॉ. कमलेशकुमार छ. शास्त्री



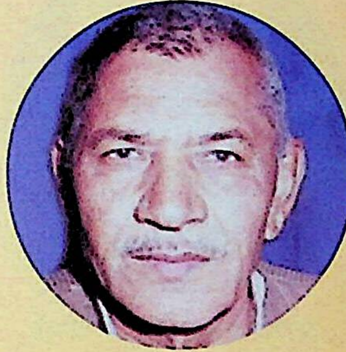
डॉ. सोमदेव शास्त्री

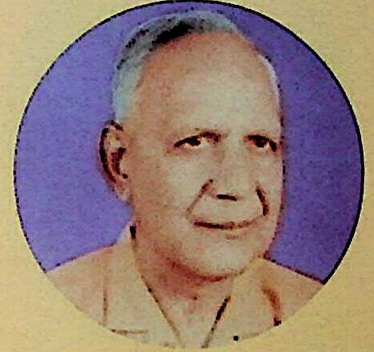


डॉ. धर्मवीर आचार्य

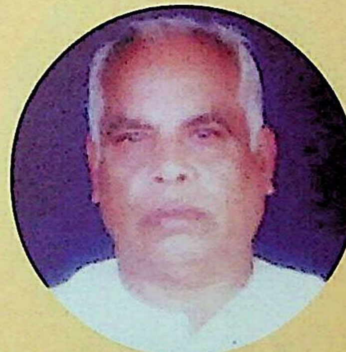
उपदेशक / शिक्षक


डॉ. दिवाकर आचार्य


आचार्य रामकिशोर शर्मा


डॉ. ओम्प्रकाश वेदालंकार


आचार्य अर्जुनदेव वर्णी


पं. विशिकेसन शास्त्री


वेदप्रकाश 'श्रोत्रिय'

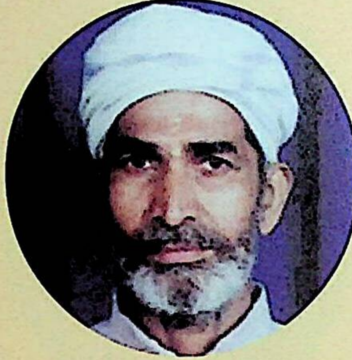

पं. महेन्द्रपाल आर्य

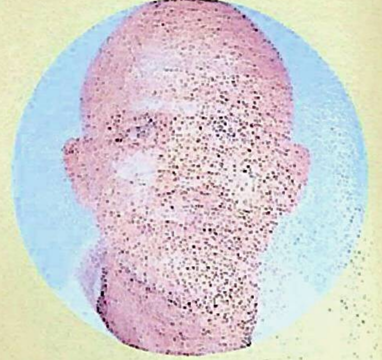

आचार्य भगवान् देव 'चैतन्य'


श्रीमती सत्यप्रिया

उपदेशक / शिक्षक


श्री - विट्ठलराव आर्य

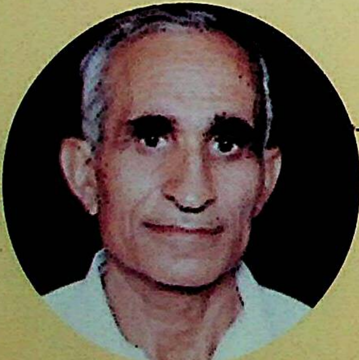

आचार्य अमृतलाल शर्मा


ब्र. वीरेन्द्र आचार्य


पं. यशःपाल आर्यबन्धु


ब्र.नचिकेता शास्त्री

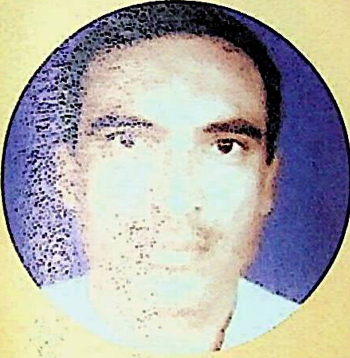

ब्र. जीवानन्द 'नैष्ठिक'


आचार्य भद्रसेन


पँ. भूदेव शास्त्री


पं. मोहित शुक्ल

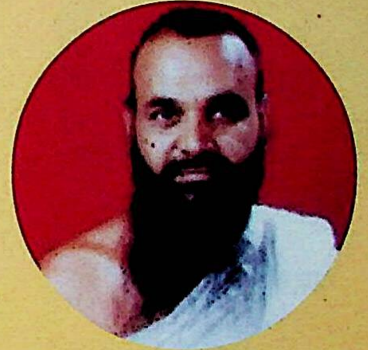
उपदेशक / शिक्षक



डॉ. विष्णुमित्र आचार्य



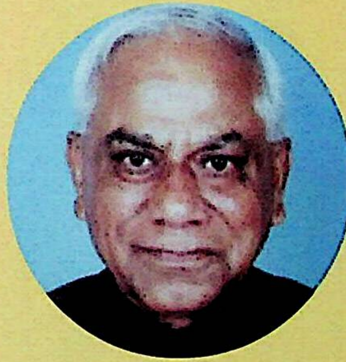
वाचोनिधि आर्य



ब्र. ओंस्वरूपार्य



डॉ. दुलालचन्द्र शास्त्री



ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त



आशुतोष आर्य



डॉ. देवशर्मा वेदालंकार



डॉ. विश्वमित्र शास्त्री



श्रीमती डॉ. प्रतिभा शास्त्री

उपदेशक / शिक्षक



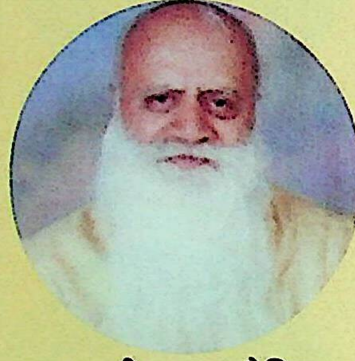
आचार्य चन्द्रपाल



श्रवणकुमार शास्त्री



ब्रह्मचारी [illegible]



जगदीशप्रसाद वैदिक



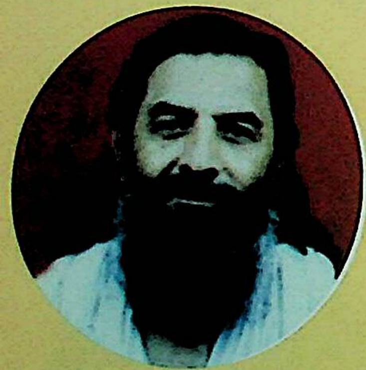
डॉ. दीनानाथ आचार्य



डॉ. ईश्वरचन्द्र शास्त्री



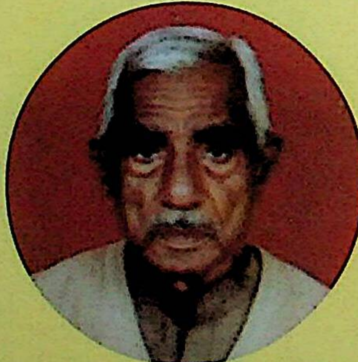
आचार्य विश्वबन्धु



पं. सुखदेव ' आर्य-तपस्वी '

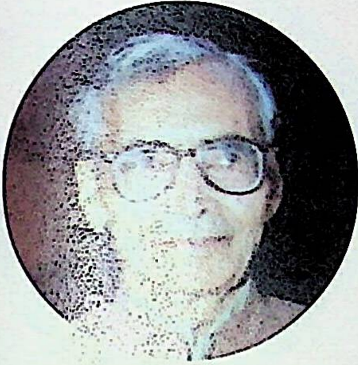


सम्भाजीराव माणिकराव पवार



ला. श्यामसुन्दर आर्य

आर्य - लेखक



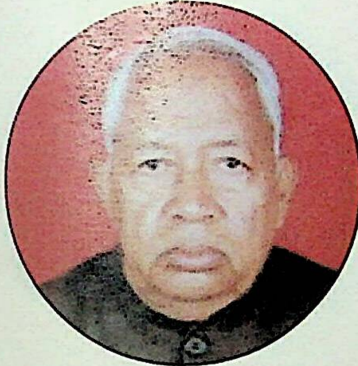
आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र



पं. सत्यानन्द वेदवागीश



डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य



डॉ. भवानीलाल भारतीय



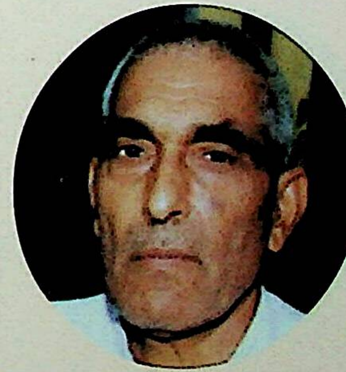
प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु



पं. राजवीर शास्त्री



डॉ. रघुवीर वेदालंकार

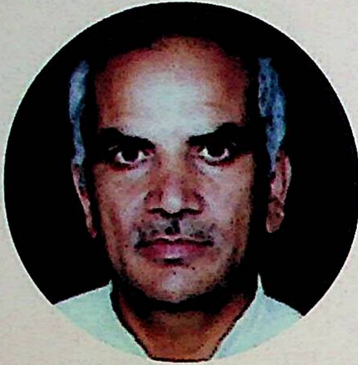


पं. वेदव्रत शास्त्री

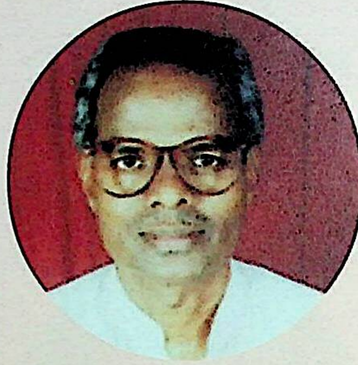


श्री अशोक कौशिक

आर्य - लेखक



आचार्य विरजानन्द दैवकरणि



प्रा. (डॉ.) कुशलदेव शास्त्री



डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री



आचार्य नन्दकिशोर ब्रह्मचारी



श्री राधेश्याम आर्य



छाजूराम शर्मा शास्त्री



प्रो. उमाकान्त उपाध्याय



यशःपाल शास्त्री



श्री गजानन्द आर्य

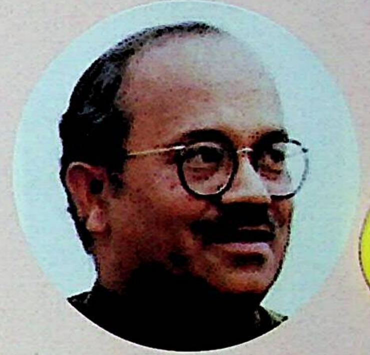
आर्य - लेखक



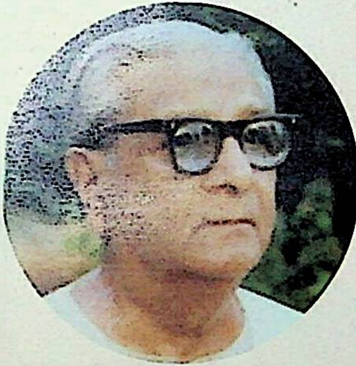
ब्र. अग्निव्रत नैष्ठिक



देवनारायण भारद्वाज



डॉ. वेदप्रताप वैदिक



डॉ. सत्यदेव आर्य



डॉ. कोडूरि सुब्बाराव



डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री



गोविन्द मैंदरकर

आर्य - पुरोहित


पं. कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री

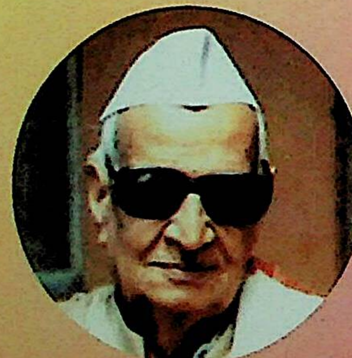

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री


ब्र. [illegible]


पं. वेदप्रकाश वैदिक


श्रीमती आशा ढींगरा


पं. अर्जुनदेव स्नातक


पं. मदनमोहन विद्यासागर


पं. प्रियदत्त शास्त्री


श्रीमती डॉ. सुनीति

आर्य - पुरोहित



श्रीमती डॉ. सन्ध्यावन्दनं लक्ष्मीदेवी



श्रीमती डॉ. वसुधा शास्त्री



पं. अरविन्द शास्त्री



पं. मुरली ब्रह्मचारी

वानप्रस्थी



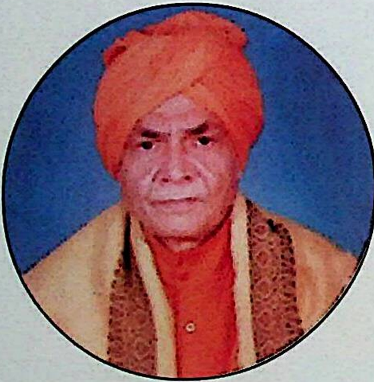
आचार्य आनन्दमुनि



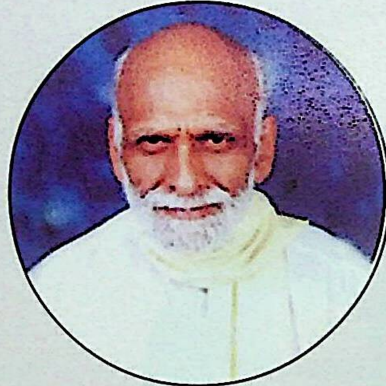
महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी



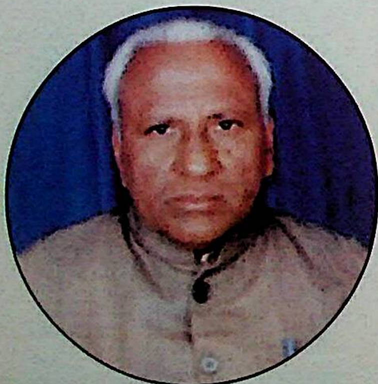
डॉ. [illegible]



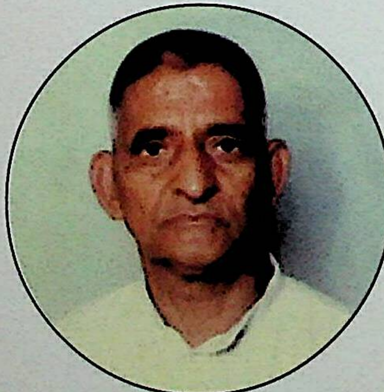
डॉ. अग्निव्रत वानप्रस्थ



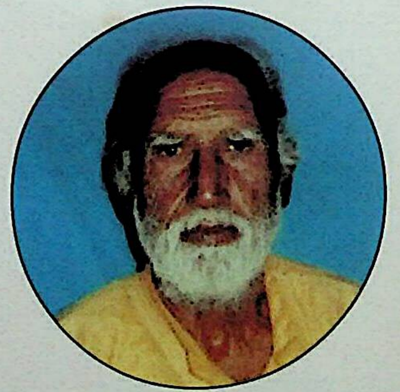
श्री बलेश्वर वानप्रस्थ



श्री आदित्यमुनि



श्री आर्यमुनि



राजपाल आर्य 'भारत-यात्री'

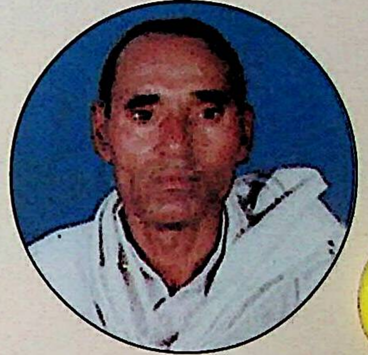
आर्य - भजनोपदेशक



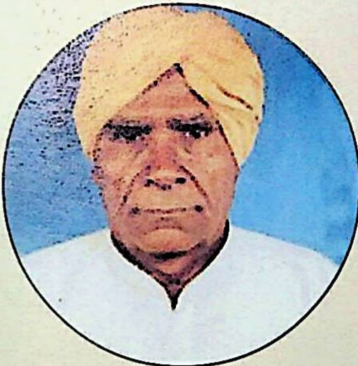
कवि नरदेव आर्य



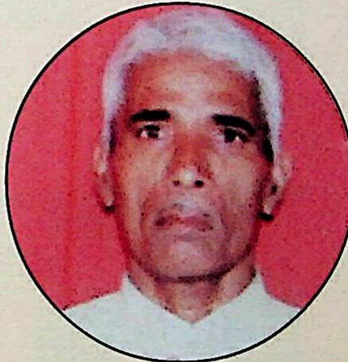
पं. कमलदेव जी



पं. नन्दलाल 'निर्भय'



पं. चन्द्रभानु आर्य



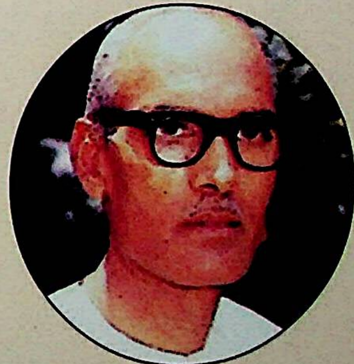
पं. सोमदेव आर्य



पं. प्रेमचन्द्र 'प्रेम'



श्रीमती पुष्पा शास्त्री



श्री सत्यपाल 'पथिक'


आर्ष - शोध - संस्थान
ओ३म्
खं ब्रह्म

१
आर्य - संन्यासी

संन्यासी योगाभ्यास करते हुए स्वार्थ, भय, क्रोध आदि से दूर हटकर प्राणिमात्र की सेवा करते हैं ।

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती

आपका जन्म १३ अप्रैल १९०० ई. को हरयाणा में झज्जर जिले के सासरौली ग्राम में श्री हरदयाल एवं श्रीमती फूलादेवी के किसान परिवार में हुआ। आपका पूर्व नाम रामचन्द्र था।

रोहतक से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करके दिल्ली में संस्कृत का अध्ययन किया। पश्चात् दयानन्द-उपदेशक -विद्यालय लाहौर में छह वर्ष तक संस्कृत वेद-वेदाङ्गों, धर्मशास्त्रों तथा आर्य -सामाजिक साहित्य की उच्च शिक्षा प्राप्त की।

आप आठ वर्ष तक आर्य-प्रतिनिधि-सभा पंजाब के उपदेशक रहे और दो वर्ष उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्यापन कार्य किया। अपने गुरु स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की आज्ञा से सन् १९४१ में दीनानगर चले गये। वहाँ चिरकाल तक अध्यापक, वैद्य तथा प्रबन्धक के रूप में दयानन्द मठ की सेवा की।

१ मई १९५५ को स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ से संन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्दमठ दीनानगर के अध्यक्ष - पद पर नियुक्त हुए।

सन् १९७३ में पंजाब - हरयाणा हाईकोर्ट द्वारा आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के रिसिवर नियुक्त किये गये। गोरक्षा आन्दोलन में स्वामी जी ने दो बार जेलयात्रा की।

आर्य - जगत् में स्वामी जी की उच्च एवं प्रतिष्ठित स्थिति है। स्वामी जी सच्चे अर्थों में आर्यसन्यासी हैं। आप धर्म और समाज की सेवा में निष्ठापूर्वक संलग्न रहते हैं। आर्य -जगत् ने ४ नवंबर १८८५ को ऋषिमेला अजमेर के अवसर पर अभिनन्दन करते हुए ५१ लाख रु. की राशि भेंट की, जिसे आपने वैदिकधर्म के प्रचारार्थ परोपकारिणी सभा को सौंप दिया। आप दीर्घकाल तक परोपकारिणी सभा के प्रधान भी रहे।

सार्वदेशिक-सभा के पूर्वप्रधान स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा), स्वामी सुमेधानन्द जी (राज.) स्वामी सदानन्द जी (दीनानगर), स्वामी वेदानन्द जी (उत्तरकाशी) आदि ने आपको गुरु मानकर संन्यास ग्रहण किया।

'राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट' नागपुर द्वारा २४ मार्च २००२ को 'आर्यरत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया।

पता :- दयानन्द मठ, दीनानगर, जि. गुरुदासपुर-१४३५३१ (पंजाब)
दूरभाष : (०१८७५) - २०११०

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

आपका जन्म चैत्र कृ० ८ सं. १९६७ वि. (९ मार्च १९१० ई.) को दिल्ली के निकटवर्ती नरेला नामक ग्राम में चौ. कनकसिंह एवं श्रीमती नान्ही देवी के धनाढ्य जमींदार परिवार में हुआ। आपका बचपन का नाम भगवान्सिंह था।

आपने सेंट स्टीफन कॉलेज दिल्ली से एफ.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् अंग्रेजी सरकार के अत्याचारों से दुःखी होकर कॉलेज शिक्षा छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। कालान्तर में आपने दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली में अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। कुछ काल तक गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में भी शास्त्राध्ययन करते रहे। गुरुकुल रावलपिण्डी में योगदर्शन, यौगिक - क्रिया तथा आयुर्वेद आदि की शिक्षा प्राप्त की।

अध्ययन के मध्य में ही आपने कांग्रेस एवं आर्य-समाज की गति विधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। आपने गुरुजनों के आदेशानुसार आजीवन ब्रह्मचारी रह कर आर्ष-शिक्षा-प्रणाली, संस्कृत-भाषा एवं आर्य-संस्कृति की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया।

१९४२ में आपने झज्जर -गुरुकुल का आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता पद स्वीकार किया और इस शिक्षण संस्थान को उत्तरोत्तर उन्नत बनाते रहे। फलस्वरूप झज्जर गुरुकुल एक आदर्श शिक्षणालय एवं आर्ष विद्या के आदर्शप्रतिष्ठान के रूप में विकसित हो सका। आपके परिश्रम और तप के प्रभाव से इस गुरुकुल से सैकड़ों विद्वान् तैयार हुए, जो देश विदेश की विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से संस्कृत और वैदिक संस्कृति की रक्षा एवं प्रसार कर रहे हैं।

आपकी जन्मभूमि नरेला में आपके संरक्षण में कन्या गुरुकुल नरेला चल रहा है। आपने १०० बीघा भूमि इस गुरुकुल के लिए अपनी भूमि में से दान की है। ४ अप्रैल १९७० को आप स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास-दीक्षा लेकर आचार्य भगवान् देव के स्थान पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

परोपकारिणी सभा ने आपको अपना प्रधान निर्वाचित किया। आपने यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, पूर्वी एशिया के अनेक देशों का भ्रमण किया है। प्राचीन इतिहास और पुरातत्व में आपकी गहरी रुचि है। १९९९ - २००१ में आप सार्वदेशिक आर्यप्रितिनिधि सभा के प्रधान रहे।

आपके लेखन का प्रमुख क्षेत्र इतिहास, पुरातत्त्व तथा प्राचीन सिक्कों, मुद्राओं आदि पर गवेषणापूर्ण ग्रन्थरचना रहा है। आपके अन्य ग्रन्थ हैं -

आर्यसमाज के बलिदान, ब्रह्मचर्य के साधन (११ भाग), विदेश यात्रा, नैरोबी यात्रा, जापान यात्रा, कालापानी यात्रा आदि । आपने अनेक दुर्लभ ग्रन्थों को प्रकाशित किया है ।

आप नैष्ठिक, ब्रह्मचारी, वीतराग संन्यासी, सन्तशिरोमणि, परम तपस्वी, संस्कृत - भाषा के मर्मज्ञ, महान् इतिहास वेत्ता, महान् आचार्य, एक दिव्य पुरुष हैं । आप एक व्यक्ति ही नहीं अपितु एक संस्था हैं ।

आपकी सेवाओं के फलस्वरूप हरयाणा सरकार ने आपको 'संस्कृत-पंडित' तथा भारत-सरकार ने 'राष्ट्रिय पण्डित' की उपाधि से पुरस्कृत किया ।

पताः गुरुकुल झज्जर महाविद्यालय, जि० झज्जर - १२४ १०३ (हरयाणा)
दूरभाष - (०१२५१) ५२०४४

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

आपका जन्म वि. सं. १९८४ (सन् १९२७) में हरयाणा प्रान्त में रोहतक जिले के फरमाना ग्राम में एक इस्लाम मतानुयायी परिवार में हुआ ।

१९ वर्ष तक का समय गाय आदि पशु चराने तथा कृषि-कार्य में व्यतीत हुआ । सन् १९४७ में विभाजन की हिंसक घटनाओं को देखकर संसार से वैराग्य हो गया। कालान्तर में हिन्दुमत स्वीकार करके नया नाम मनुदेव रख लिया । २२ वर्ष की अवस्था में गुरुकुल झज्जर में प्रवेश लिया । वहाँ आर्ष वाङ्मय का अध्ययन करके व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य, वेदवाचस्पति की उपाधियां प्राप्त कीं । आचार्य वेदव्रत मीमांसक जी के साथ मिलकर आपने महामहोपाध्याय पं.युधिष्ठिर मीमांसक जी से अजमेर में शाबरभाष्य - सहित सम्पूर्ण मीमांसा दर्शन का अध्ययन किया ।

१९७० में स्वामी ब्रह्ममुनि जी से ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास - दीक्षा ली ।

पिछले ४० वर्षों से आप देश भर में निरन्तर भ्रमण करते हुए वैदिकधर्म, संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं । विशेषकर सैकड़ों क्रियात्मक योगशिविरों का आयोजन करके ब्रह्मप्राप्ति - हेतु हजारों लोगों में रुचि उत्पन्न की है । योगमीमांसा, सरल योग से ईश्वर - साक्षात्कार, योगदर्शन (योगार्थप्रकाश व्याख्या) आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की है ।

त्यागी, तपस्वी, वैराग्यवान्, पठित, युवा दार्शनिक विद्वानों के निर्माण और उनको आर्थिक सहयोग करने हेतु दर्शन - योग - महाविद्यालय, विश्व -

कल्याण - धर्मार्थ - न्यास, आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर जैसे आदर्शसंस्थानों की स्थापना की । सेवा, साधना और स्वाध्याय के माध्यम से गृहस्थ - कार्यों से निवृत्त, प्रौढ, धार्मिक सज्जनों के लिए वानप्रस्थ -साधक - आश्रम की स्थापना की । आप वैदिकधर्म - प्रचारार्थ मोरीशस एवं आस्ट्रेलिया देशों में भी गये ।

सन् १९९९ में आपका आर्यवन रोजड़ में देश - विदेश के आर्यसज्जनों द्वारा ५१ लाख से भी अधिक रुपयों की राशि से सार्वजनिक सम्मान किया गया । वह राशि आपने वानप्रस्थ - साधक - आश्रम को प्रदान कर दी। विस्तृत जानकारी के लिए आपकी 'मेरा संक्षिप्त जीवन-चरित्र' पुस्तक द्रष्टव्य है।

पताः- दर्शन - योग - महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़,
पो० सागपुर, जि०-साबरकांठा - ३८३३०७ (गुजरात)
दूरभाष - (०२७७४) - ७७२१७, ७७७१७

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आर्य समाज के प्रख्यात विद्वान्, लेखक, विचारक तथा शिक्षा शास्त्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का जन्म २० जनवरी १९१४ को उ०प्र०में बिजनौर जिले के अस्करीपुर गाँव में हुआ । आपका पूर्व नाम पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित था ।

डी.ए.वी. कॉलेज होशियारपुर से बी.ए., तथा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की ।

आपने होशियारपुर, दिल्ली तथा पानीपत के कॉलेजों में दीर्घकाल तक अध्यापन किया । लगभग २० वर्ष तक होशियारपुर तथा पानीपत के कॉलेजों में प्रिंसिपल के पद पर रहे । सन् १९७२ मे पंजाब विश्वविद्यालय के फैलो मनोनीत किये गये । कुछ समय तक वृन्दावन गुरुकुल के आचार्य भी रहे ।

आपका विवाह आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थमहारथी पं. मुरारीलाल शर्मा की पौत्री तथा पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री की पुत्री श्रीमती शकुन्तला देवी काव्यतीर्थ से हुआ ।

आर्य समाज के संगठनों तथा सभा संस्थाओं से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । आप आर्य - प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत संचालित आर्य-विद्यापरिषद् के संस्थापक प्रस्तोता रहे । सन् १९४४ में 'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली' की स्थापना की तथा समस्त आर्यसमाजों को एक सूत्र में पिरोया । सन् १९५६ तक आप इस संस्था के मन्त्री रहे । बाद में भी अनेक वर्षों तक उपप्रधान एवं

अन्तरंग सदस्य रहे। सन् १९४७ से १९५२ तक आप सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के संयुक्तमन्त्री रहे। इसी प्रकार आप आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर - प्रदेश, पंजाब तथा हरयाणा की अन्तरंग सभाओं के सदस्य भी रहे।

आर्य समाज द्वारा समय - समय पर चलाये गये आन्दोलनों में भी आपने भाग लिया। सन् १९३९ में आपने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने के लिए सेवा से त्यागपत्र दिया और विवाह को स्थगित कर सत्याग्रह में भाग लिया तथा कारावास की यातनाएं सहन कीं। सन् १९४४ में 'सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति' दिल्ली के मन्त्री निर्वाचित हुए।

१९५६ में पंजाब में चलाये गये हिन्दी - रक्षा आन्दोलन के संचालनार्थ नियुक्त 'केन्द्रीय संघर्ष समिति' तथा 'पंजाब-हिन्दी-रक्षा समिति' के आप सक्रिय सदस्य रहे।

२७ जुलाई १९८० ई. में संन्यास लेने के पश्चात् आप प्रायः दिल्ली में ही रहते हैं तथा प्रचारार्थ यत्र तत्र जाते हैं।

सरलता, निर्लोभता, सिद्धान्तप्रियता, सत्यवादिता, अनुशासन की कठोरता, स्पष्टवादिता, निःस्वार्थभावना आदि आपके स्वाभाविक गुण हैं।

आपने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी में विविध विषयों पर तीन दर्जन से भी अधिक ग्रन्थ लिखे हैं। ये ग्रन्थ सर्वत्र समादृत हुए हैं। आपने प्राचीन परम्परा के अनुसार दर्शन शास्त्र पर सूत्रात्मक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

स्वामी जी की प्रमुख रचनाएं हैं -भूमिका-भास्कर (दो खण्ड), सत्यार्थभास्कर (दो खण्ड), संस्कार-भास्कर, तत्त्वमसि, अनादि तत्त्व दर्शन (सूत्रात्मक), वेदमीमांसा (सूत्रात्मक), रामायण में भ्रान्तियां, दीप्ति, आर्यों का आदि देश एवं उनकी सभ्यता, दिव्यज्ञान, The Brahma Sutras, Theory of Reality, Vedic Concept of God, Age of Shanker आदि। आपकी कुछ कृतियों का भारत की अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुका है।

अनेक राजकीय एवं सामाजिक संस्थाओं से पुरस्कृत स्वामी जी को अनादि तत्वदर्शन पर गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से अलंकृत किया गया। आर्य - समाज सान्ताक्रुज मुम्बई द्वारा 'वेद - वेदाङ्ग पुरस्कार' तथा सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा ५१ लाख रु. की राशि (जिसे आपने वहीं पर दान कर दिया) से सम्मानित किया गया।

पता :- डी. १४ / १६, माडल टाउन, दिल्ली ११० ००९
दूरभाष - (०११) - ७४३०४९९, ७१२७९२८

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

आपका जन्म २० जनवरी १८३१ को हरयाणा में गुड़गांव जिले के अलावलपुर ग्राम में श्री ग्यासीराम एवं श्रीमती भगवती देवी के घोर पौराणिक परिवार में हुआ ।

आपने प्रभाकर (हिन्दी आनर्स), एम.ए. (संस्कृत) महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य से लेकर छोटे - बड़े सभी ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया । सत्यार्थप्रकाश का ४५ बार अध्ययन किया । वाल्मीकि रामायण, महाभारत, सभी पुराणों, स्मृतियों, दर्शनों, उपनिषदों का अध्ययन कर वैदिक सिद्धान्तों का गम्भीर ज्ञान प्राप्त किया । वैदिक कर्मकाण्ड में दक्षता प्राप्त की ।

१६ फरवरी १९७५ को वसन्तपंचमी के दिन आपने ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे संन्यास की दीक्षा ली । तब से आप जगदीश विद्यार्थी के स्थान पर स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए ।

आपने भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में वैदिक - सिद्धान्तों का प्रचार किया है ; विषेश रूप से दिल्ली, हरयाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर - प्रदेश, बिहार, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र में । सुरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड, हालैण्ड, फिजी , टवैगो, श्रीलंका आदि विदेशों में भी वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाई।

चारों वेदों का एक जिल्द में भव्य प्रकाशन किया । २५-३० ग्रन्थों का सम्पादन किया है । सामवेद भाष्यम्, वाल्मीकि रामायण, महाभारत के शुद्ध संस्करण, षड्दर्शन अर्थसहित, ईशोपनिषद्, वैदिक उदात्त भावनाएँ, वेद सौरभ, वैदिक प्रश्नोत्तरी, चारों वेदों के शतक, चारों वेदों की सूक्तिसुधा, विद्यार्थियों की दिनचर्या, कुछ करो कुछ बनो, ब्रह्मचर्य गौरव, स्वर्ण-पथ, बाल सत्यार्यप्रकाश, भूमिका प्रकाश, चाणक्य नीति, भर्तृहरि शतकम्, विदुरनीति (हिन्दी और अंग्रेजी में), घरेलू औषधियाँ, दिव्य औषधियाँ, चमत्कारी औषधियाँ आदि छोटे - बड़े ८० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं ।

आप अत्यन्त विनोदी एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं । ७२ वर्ष की अवस्था में भी १२ से १८ घंटे पठन और लेखन में संलग्न रहते हैं । यात्रा में भी पुस्तकें और प्रूफ पढ़ते रहते हैं ।

आपके सारे लेखन एवं प्रचार - प्रसार का एक मात्र उद्देश्य है — वैदिक -धर्म एवं वैदिक साहित्य को घर - घर और जन - जन तक पहुँचाना ।

वर्तमान में आप दयानन्द संस्थान करौल बाग दिल्ली के आचार्य हैं । सार्वदेशिक दयानन्द संन्यास-वानप्रस्थ मण्डल, ज्वालापुर (हरिद्वार) के अध्यक्ष हैं । आप लेखक, उपदेशक, सम्पादक और प्रकाशक हैं । इस प्रकार एक साथ अनेक विशेषताओं को संजोये हुए हैं, जो एक ही व्यक्ति में कम मिलती हैं ।

पता :- वेद - मन्दिर, इब्राहिमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली - ११० ०३६.
दूरभाष - (०११) ७२०२२४९

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आपका जन्म १६ जून १९४३ को हरयाणा में रोहतक जिले के हुमायूँपुर गांव में चौ. जुगलसिंह तथा दाखो देवी के यहां हुआ ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव के स्कूल में हुई थी । एक दिन गांव के स्कूल में स्वामी ओमानन्द जी का आगमन तथा भाषण हुआ । जिसे सुनकर आपमें गुरुकुल जाने की तीव्र इच्छा हुई । आप ६ सितम्बर १९५६ को गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए । तीव्र बुद्धि होने के कारण चार वर्ष की अल्पावधि में ही मध्यमा, शास्त्री, आचार्य पर्यन्त सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं । आपने १९६२ में नैष्ठिक दीक्षा ली ।

दीक्षा के पश्चात् उसी गुरुकुल में २ वर्ष अध्यापन और ४ वर्ष प्रबन्ध का कार्य किया । १९६० के गोरक्षा आन्दोलन में भाग लिया, कई महीने जेल में बिताये । आपकी इच्छा ऐसी जगह प्रचार कार्य करने की थी, जहां ऋषि-मिशन का नाम तक कोई न जानता हो, क्योंकि उत्तर भारत में उस समय आर्य समाज युवावस्था में था । आपकी इस इच्छा को मूर्त रूप दिया उड़ीसा के संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने ।

जब आप उड़ीसा में आये तब घूम - घूमकर यहां के निवासियों की हृदय विदारक दशा को देखा, तो आप से रहा नहीं गया । फलस्वरूप मन ही मन आपने उनके उद्धार की योजना बनाई तथा ७ मार्च १९६८ को गुरुकुल आमसेना की स्थापना की । उस समय दान में केवल ६८रुपये व आधी बोरी चावल प्राप्त हुआ था । गुरुजनों परिवार वालों से दूर अलग प्रदेश, अलग भाषा, रहन - सहन आदि सब

कुछ अलग होते हुए अपने त्याग, तपस्या, कठोर परिश्रम व महान् पुरुषार्थ के कारण आज वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो एक संस्था को चाहिए ।

उड़ीसा में आर्य समाज को गति देने हेतु आपने गांव - गांव घूमकर व्याख्यान दिये एवं आर्य समाज गठित किये । आपके द्वारा सार्वदेशिक सभा के आदेश पर १९७५ में उत्कल-आर्य-प्रतिनिधि - सभा का गठन हुआ । जिसके अन्तर्गत सैकड़ों समाज व अनेकों प्रचारक हैं । १९७५ से १९९७ तक लगातार २२ वर्ष तक आप प्रधान पद पर कार्यरत रहे एवं सभा को एक नई गति प्रदान की । उड़िया और हिन्दी में कुलभूमि पत्रिका एवं अन्य साहित्यों का प्रकाशन किया । फलस्वरूप इस समय ६० से भी अधिक उड़िया भाषा में पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

१९७८ में कन्या गुरुकुल प्रारम्भ किया । अब वहां पर विभिन्न प्रान्तों की ९० से अधिक कन्याएँ मध्यमा, शास्त्री, आचार्य कक्षा में पढ़ रही हैं । इनमें से अधिकतर वनवासी आदि पिछड़े वर्ग की छात्रायें हैं । इनकी पूर्ण व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होती है । इस समय १६० छात्र सभी कक्षाओं में पढ़ रहे हैं । इनमें से अधिकांश छात्र निर्धन, अनाथ या वनवासी हैं । सब की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होती है । अब तक सैकड़ों शास्त्री, आचार्य की कक्षा उत्तीर्ण कर सुयोग्य स्नातक निकल गये हैं । इनमें से कई तो निः शुल्क समाजसेवा में लगे हैं ।

इस क्षेत्र में जब - जब अकाल पड़े हैं गुरुकुल की ओर से जनता का भरपूर सहयोग किया गया है । जब लातूर में भयंकर भूकम्प आया तो गुरुकुल एवं खरियार रोड़ की ओर से १०० क्विंटल अनाज, दवाइयां आदि लेकर सबसे पहले यहां का ट्रक बांटने पहुँच गया था । इसी प्रकार उड़ीसा में आये भयंकर विनाशकारी तूफान में पीड़ित लोगों की सहायता के लिये वहां दो माह तक स्वामीजी के नेतृत्व में १० ब्रह्मचारी चुड़ा, चावल, कम्बल, बर्तन, त्रिपाल, दवाई, नये पुराने वस्त्र बांटते रहे । इस सहायता पर गुरुकुल की ओर से दस लाख रुपए स्वामी जी ने खर्च किये थे ।

सन् २००१ के वर्षान्त में जब उड़ीसा के पूर्वांचल में बाढ़ ने विनाश लीला की , तो गुरुकुल के अधिकारियों को एम्बुलेंस में चुड़ा, गुड़, दाल, चावल आदि भरकर भेजा । स्वामी जी की प्रेरणा से दिल्ली निवासी श्री बृजकिशोर जी अग्रवाल तथा उनकी धर्मपत्नी ने ३० शय्या का एक धर्मार्थ हस्पताल १०लाख रुपये की लागत से बनवाया और उसका उद्घाटन मार्च १९९९ में हुआ।

गुरुकुल के स्नातक स्वामी व्रतानन्द सरस्वती की देखरेख में इस चिकित्सालय का संचालन हो रहा है। प्रतिदिन सैकड़ों मरीज चिकित्सा का लाभ उठा रहे हैं। अनेक संस्थाओं ने आपका हृदय से सम्मान किया है। आप आर्यसमाज की शीर्षस्थ संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान के पद पर कार्यरत रहे। आर्यजगत् भविष्य में आपसे अनेक अपेक्षायें करता है।

पता : गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, नवापारा
(उड़ीसा) ७६६१०९, दूरभाष : (०६६७८) २२५६१, २२४४१

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

आपका जन्म १२ अप्रैल १९३९ ई० को देवनगर, मैनपुरी (उ.प्र.) में पिता - श्री नाथूराम आर्य, माता - श्रीमती द्रोपदी देवी के यहाँ हुआ। संन्यास से पूर्व आपका नाम योगेन्द्र पुरुषार्थी था।

आपने पैतृक गृह में बारहवीं कक्षा तक अध्ययन करके १९५९ ई. में गृहत्याग के पश्चात् गुरुकुल झज्जर से व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य, वेदाचार्य की तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम. ए. (वेद, दर्शन) एवं पी-एच.डी. (वेदों में योगविद्या) की उपाधियाँ प्राप्त कीं। गोरखपुर से प्राकृतिक - चिकित्सक की उपाधि प्राप्त की।

आपके लिखे हुए गीत कुसुमांजलि (हिन्दी, संस्कृत), वेदों में योगविद्या, योगाचरण एवं शिष्टाचार, योगदर्पण, यज्ञ-योग विद्या, श्रद्धा सोपान, दिव्य गीताञ्जलि, अनेक लेख एवं कविताएं प्रकाशित हो चुके हैं।

आप वेदानुकूल योगविद्या के प्रशिक्षण एवं देश-विदेश में वैदिक -धर्म के प्रचार-प्रसार में प्रसन्नता और कुशलता से तत्पर रहते हैं। आपकी उत्साहवर्धक मधुर वाणी बहुत ही प्रभावकारी होती है।

१९८३ में संन्यास ग्रहण कर लेने के पश्चात् डॉ. पुरुषार्थी, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हैं। आप 'पातञ्जल योगधाम' ज्वालापुर के संचालक हैं।

पता :- योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार - २४९४०७ (उत्तरांचल)
दूरभाष : (०१३३) - ४५४०३८

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्म १९१८ ई. में उत्तर-प्रदेश में हुआ।

आरम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने दयानन्द उपदेशक-विद्यालय लाहौर में प्रवेश लिया। आपके प्रमुख गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) थे।

कुछ दिनों तक आप गुरुकुल भटिण्डा में आचार्य पद पर रहे। संन्यास ग्रहण करने से पूर्व आप आचार्य कृष्ण के नाम से जाने जाते थे। आचार्य कृष्ण ने १९७५ ई. में आर्य समाज के शताब्दी समारोह में स्वामी सत्यप्रकाश जी से संन्यास की दीक्षा ली। सम्प्रति आप समर्पण - शोध-संस्थान द्वारा बहुत से महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन कर रहे हैं।

आपके द्वारा लिखित प्रमुख ग्रन्थ मृत्युञ्जय सर्वस्व, उपनयन सर्वस्व, अग्निहोत्र सर्वस्व, उपहार सर्वस्व, A Loving Token, वाल्मीकि के पुरुषोत्तम राम आदि हैं। इनके अतिरिक्त आपने समर्पण-शोध-संस्थान के माध्यम से दर्जनों पुस्तकों का सम्पादन एवं प्रकाशन किया है। आपने देश के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार के एवं सारगर्भित ढंग से यज्ञ सम्पन्न कराने के साथ-साथ मौरिशस, दक्षिण-अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में जाकर वेद-प्रचार की दुन्दुभि बजायी। आप प्रभावपूर्ण अद्वितीय वैदिक प्रवक्ता हैं। अपनी बात को श्रोता के हृदय में बिठा देते हैं। २६-२८ फरवरी २००० में सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर (राज.) के वार्षिकोत्सव पर आपको ३१ लाख रु. की राशि से सम्मानित किया गया। वह राशि आपने उक्त न्यास को ही समर्पित कर दी।

पता :- समर्पण-शोध-संस्थान, ५/४२, सेक्टर-५, राजेन्द्रनगर,
साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.) - २०१००५
दूरभाष :- (०५७३१) - ४६२३०२६

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

आपका जन्म उड़ीसा के बरगड़ जिले के नुआपाली ग्राम में १९५३ में एक मध्यम किसान श्री कुबेर नायक आर्य एवं श्रीमती उकिया देवी के यहाँ हुआ। आपका पूर्व नाम वामदेव आर्य था।

सातवीं कक्षा तक घर पर अध्ययन के पश्चात् ब्र. वामदेव आर्य ने ८ दिसम्बर १९६८ को गुरुकुल आश्रम आमसेना में प्रवेश लिया। गुरुकुल झज्जर एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से व्याकरण-साहित्य-दर्शन एवं वेद विषय से आचार्य की परीक्षाएं दीं। दो बार स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। फिर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से वैद्यविशारद, आयुर्वेद रत्न और शिक्षा विशारद की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। बार बार दिल्ली जाकर चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया।

आप सिद्ध हस्त वैद्य है। गुरुकुल के आस पास का सारा क्षेत्र आपको डॉक्टर के नाम से जानता है। आपकी देखरेख में गुरुकुल में सर्वसुविधायुक्त ३० शय्याओं का चिकित्सालय चल रहा है। आप आयुर्वैदिक, ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक तीनों प्रकार की चिकित्सा के अच्छे जानकार और सफल चिकित्सक हैं।

प्रारम्भ से ही आपकी गुरुकुल के आचार्य श्री स्वामी धर्मानन्द के प्रति अतिशय श्रद्धा भक्ति है। उनकी प्रत्येक आज्ञा को मानने में गौरव अनुभव करते हैं। इसलिए विद्याध्ययन के पश्चात् अपने गुरु की आज्ञा से अपना जीवन गुरुकुल की सेवा के लिए सौंप दिया और १९९२ में अपने गुरुदेव से संन्यास लेकर अपना जीवन समाज की सेवा के लिए अर्पित कर दिया। आप सैकड़ों रोगियों की चिकित्सा निःस्वार्थभाव से करते हैं। अब आप आर्य-प्रतिनिधि - सभा उड़ीसा के प्रधान भी हैं। स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देश पर आपकी देख रेख में शुद्धि एवं प्रचार का कार्य निरन्तर आगे बढ़ रहा है। गुरुकुल आमसेना एवं उड़ीसा के आर्य जगत् को आप पर गर्व है।

पता : गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड
नवापारा - ७०० १०९ (उड़ीसा)
दूरभाष - (०६६७८) - २२५६१, २२४४१

स्वामी अग्निवेश

आपका जन्म २१ दिसम्बर १९३९ को आन्ध्र प्रदेश में हुआ। पूर्वाश्रम में आपका नाम श्री श्यामराव था।

आपकी शिक्षा कोलकाता में हुई। जहाँ से आपने एम. कॉम. तथा एल. एल. बी. की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

कुछ समय तक कोलकाता के ही एक कॉलेज में आपने अध्यापन कार्य किया।

पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द जी) के सम्पर्क में आकर आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए और हरयाणा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

आपने स्वामी ब्रह्ममुनि जी से ७ अप्रैल १९७० को संन्यास की दीक्षा ली तथा आर्यसमाज को सामाजिक एवं राजनैतिक प्रगतिशील कार्यक्रमों को अपनाने की प्रेरणा करते रहे। आपने आर्य युवक परिषद् का संगठन किया तथा 'राजधर्म' नामक एक विचार - प्रधान पत्र निकाला। सक्रिय राजनीति में भी आपकी रुचि रही और कुछ काल तक आप हरयाणा के शिक्षामन्त्री भी रहे।

आर्यसमाज की विचार धारा में समाजवाद पर आधारित आर्थिक चिन्तन को समायोजित करना आपका प्रमुख अवदान है। शराब, गोहत्या, बंधुआ - मजदूरी, आदि के विरूद्ध आपके प्रबल अभियानों से समाज में नई चेतना आयी है।

आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं - वैदिक समाजवाद, आर्य समाज क्या करे, किधर जाये ? आर्य राष्ट्र। आजकल आप 'क्रान्तिधर्मी' नामक पाक्षिक पत्र निकाल रहे हैं।

देश-विदेश की मानवाधिकार संस्थाओं से आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

पता : ७ जन्तर मन्तर मार्ग, नई दिल्ली - ११० ००१
दूरभाष : (०११)- ३३२६७६५, ३३२९०४३

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

स्वामी जी (पूर्वनाम हरिश्चन्द्र गुरुजी) का जन्म सन् १९२४ की मार्गशीर्ष अमावस्या को महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के औराद नामक छोटे से ग्राम में श्री रामराव पांडुरंग सूर्यवंशी एवं श्रीमती प्रयागबाई के घर हुआ।

विद्यालय की शिक्षा आपने सातवीं कक्षा तक प्राप्त की । सन् १९४४ में सत्यार्थ - प्रकाश के स्वाध्याय से हरिश्चन्द्र की काया पलट गयी और वे आगे चलकर ऋषि दयानन्द के अनुयायी एवं छात्रों के मार्गदर्शक बने ।

अपने जीवन का अन्तिम उद्देश्य निश्चित करने के लिए निरन्तर चिन्तन करने पर अन्तः प्रेरणा हुई, कि - " तेरा जन्म भारत के भावी कर्णधार छात्रों के नवनिर्माण के लिए हुआ है, अतः तू उन्हें सुसंस्कारित करने तथा उन्हें वैदिक धर्म का अनुयायी बनाने में ही अपना जीवन लगा "।

इसी विचार को लेकर आपने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का निर्णय लिया। विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं छात्रावासों में जहाँ कहीं विद्यार्थी मिलते वहीं गुरुजी का उपदेशक विद्यालय लगता । आप बच्चों और युवाओं को एक ईश्वर, एक धर्म, एक जाति आदि का उपदेश मीठे शब्दों में देते रहते । नानाविध बुराइयों, दोषों, कुसंस्कारों एवं दुर्व्यसनों को दूर कर उनका जीवन परिष्कृत करते । आपके अमृतोपम उपदेशवचनों से असंख्य विद्यार्थियों की काया पलट गयी । अनेक दिशाहीन युवा छात्र सन्मार्ग के राही बने । आज आपके बहुत से शिष्य शासकीय, अशासकीय एवं शैक्षणिक क्षेत्र में प्रामाणिक रूप से कार्यरत हैं ।

आपके ही सान्निध्य से रघुराम गायकवाड, शिवाजीराव गायकवाड, अन्नाराव पाटिल (विज्ञानमुनि), शिवमुनि, डॉ.सु.ब. काले आदि आर्य कार्यकर्त्ता पक्के आर्य बने । हैदराबाद रियासत के अत्याचारी रजाकारों का आपने दृढ़ता से संगठनपूर्वक विरोध किया ।

"श्रेष्ठ मानव बनो, मानवता में वृद्धि करो " इस पावन बोध वाक्य को छात्रों में दृढ़ करने के लिए आप अनेकों वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित करके उनके प्रवचनों एवं उपदेशों से उनमें वैदिक सिद्धान्तों को धारण कराते रहे। विद्यार्थियों की शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए एवं राष्ट्र के सच्चे आदर्श नागरिक बनाने के लिए शिबिरों के माध्यम से आज भी प्रयत्नशील हैं । लगभग ३० वर्षों से संस्कार शिबिरों का कार्यक्रम चला रहे हैं । गुण कर्म स्वभाव के आधार पर आपने सैकड़ों अन्तर्जातीय विवाह करवाये हैं । आप पुरोहित एवं ध्यानयोग के शिविर भी लगाते हैं।

गुरु जी ने १९९७ में ७३ वर्ष की अवस्था में ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास आश्रम में प्रवेश किया । स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती से दीक्षा लेकर आप हरिश्चन्द्र से श्रद्धानन्द सरस्वती बने ।

छह वर्ष तक आर्य-प्रतिनिधि - सभा महाराष्ट्र के महामन्त्री रहने के पश्चात् सन् १९९७ से आप प्रधान पद का उत्तरदायित्व बड़ी कुशलता से संभाल रहे हैं।

स्वामी जी का जीवन अनेक दिव्यगुणों से परिपूर्ण है। अपूर्व धैर्य, क्षमाशीलता, परोपकार, स्वाध्याय, सात्त्विकता, प्रखर राष्ट्रनिष्ठा आदि श्रेष्ठ गुणों से ओतप्रोत यह बहु आयामी व्यक्तित्व समाज एवं राष्ट्र के लिए समर्पित है।

अपूर्व त्याग एवं तप द्वारा राष्ट्र की भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए सतत प्रयत्न करने वाले इस मानव निर्माण के अद्भुत शिल्पी से आर्य जगत् को आगे भी बहुत आशाएं हैं।

पताः महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य - समाज, परली, वैजनाथ, जि. बीड -४३१५१५ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : (०२४४६) - २२९०४

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पूर्वाश्रम में श्री त्रिलोकचन्द्र राघव के नाम से विख्यात श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती का जन्म आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा १९७७ वि. अर्थात् १९२० ई. में मथुरा जिले के गिडोह नामक ग्राम में हुआ।

१३ वर्षों तक श्री राघव ने दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा (गुजरात) के अन्तर्गत धर्म प्रचार किया। इस अवधि में प्रायः समस्त भारत का भ्रमण किया। २८ फरवरी १९७६ को आपने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और इसी वर्ष २६ दिसम्बर को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली। सम्प्रति आर्य - प्रतिनिधि सभा दिल्ली में वेदप्रचार अधिष्ठाता हैं। आप योग्य आयुर्वेदाचार्य भी हैं।

आपकी राघव - गीत - उद्यान, संगीत महोदधि, सरल चिकित्सा (तीन भाग), समय के मोती, राघव पुष्पांजलि, हंसता चल हंसाता चल, टंकारा भजनावली, आदर्श बालक भोज, राघव गीतांजलि, उपदेश की फुलझड़ी, ठुकराया वीर आदि ३१ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

पता :- १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली - ११०००१.
दूरभाष :(०११) ३३६०१५०.

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

श्री परिव्राजक जी का जन्म उ.प्र. में बिजनौर जिले के शेरकोट कस्बे में एक कृषक परिवार में १९१४ ई. में हुआ। आपका पूर्वाश्रम का नाम बलवन्तसिंह था।

१९४३ ई. में आर्य समाज के सम्पर्क में आये, जब आपके एक मित्र श्री कृष्णस्वरूप आर्य ने सत्यार्थप्रकाश पढ़वाया। तभी से आर्य समाज के हो गये। १४ मई १९५४ में घर त्याग दिया।

१९५७ के पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में आपने भाग लिया और, ३ जुलाई १९५९ में श्री स्वामी विद्यानन्द विदेह से संन्यास ग्रहण कर वेदमुनि परिव्राजक के नाम से विख्यात हुए।

१९६२ में आपने वैदिक संस्थान की स्थापना की। सन् १९६५ से ३५ वर्ष तक पुण्यलोक नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन करते रहे। वाणी और लेखनी दोनों में ही आपको कुशलता प्राप्त है। सैकड़ों व्यक्ति आपसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं। आप लोभरहित स्पष्ट और मधुर वक्ता हैं।

आपके द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें-नारी का शील, सृष्टि विज्ञान और वेद, माता पिताओं से, कुछ ज्वलन्त प्रश्न, आदर्श परिवार, सात मर्यादाएं, देश के पहरेदारों से, धर्म का तत्त्व विद्यार्थी, वेदान्त, हमारी राष्ट्रभाषा, वेदोपनिषद् आदि हैं।

पता : वैदिक संस्थान नजीबाबाद,
जनपद-बिजनौर (उ.प्र.) २४६७६३

१४ स्वामी वेदानन्द सरस्वती

उत्तर काशी में ' वेदमन्दिर कुटेटी ' के संचालक श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती का पूर्वनाम बलदेव था। आपने विज्ञान स्नातक होने के पश्चात् पाणिनि महविद्यालय बहालगढ़ में प्रवेश लेकर, लगभग १० वर्ष तक आचार्य श्री विजयपाल जी एवं म.म.पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी से वैदिक वाङ्मय का अध्ययन किया। इसमें अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, दर्शन आदि विषय मुख्य रहे।

३-४ वर्ष तक वहाँ अध्यापन भी किया । १९८० - १९८४ के बीच अनेक संस्थाओं में आचार्य पद पर कार्य किया । १९८४ के मध्य उत्तर काशी (उत्तरांचल) में वेद - मन्दिर की स्थापना की । साधना और स्वाध्याय को प्रधान मानकर लेखन, प्रवचन और अध्यापन आदि करते रहे ।

आपकी पुस्तकें-स्वास्थ्य के मूलभूत सिद्धान्त एवं संध्या से समाधि महत्त्वपूर्ण हैं । वेदवाणी पत्रिका में एक मन्त्र की व्याख्या छपती रहती है । आपकी कुछ पुस्तकें प्रकाशनाधीन भी हैं ।

आपने श्री स्वामी सर्वानन्द जी से १९९९ के श्रावणी पर्व पर संन्यास की दीक्षा ली ।

आप अष्टाध्यायी आदि के अध्यापन के साथ साथ विभिन्न प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए जाते रहते हैं ।

पता : वेद-मन्दिर कुटेटी, उत्तरकाशी - २४९१९३ (उत्तरांचल)
दूरभाष : (०१३७४) - २३७८८ पी. पी.

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

आपका जन्म २६ जून सन् १९२९ को उ.प्र. में हरदोई जिले के कुठिला ग्राम में एक सम्पन्न ब्राह्मण (तिवारी)परिवार में हुआ ।

आपका परिवार चार पीढ़ी से आर्य-समाजी है । आपके दादा श्री पं.जानकी प्रसाद तिवारी ने १५ मार्च १८७७ ई. को मेला चांदपुर जि. शाह-जहांपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये, और उनके व्याख्यानों से अति प्रभावित हुए ।

पितामह की छाप आपके पिता पं. मूलचन्द्र जी पर पड़ी । उन्होने अपने जीवन काल में बड़े-बड़े पाखण्डियों से टक्कर ली । आपने देहाती क्षेत्रों में भूत - प्रेत का खूब खण्डन किया । समय आने पर संन्यास की दीक्षा ली ।

सन् १९४५ में मिडिल (हिन्दी - उर्दू) तथा हाई स्कूल परीक्षा (अंग्रेजी में) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । बचपन में ही गाने की रुचि होने के कारण पिता जी ने आपको प्रचारक बनाना चाहा । पढ़ाई पूरी करके आपने विधिवत् हारमोनियम

आदि पर संगीतविद्या सीखी और प्रचारार्थ आर्य समाज के उत्सवों में जाने लगे।

आप सन् १९६५ से आर्य प्र. सभा उ.प्र., लखनऊ के वैतनिक एवं अवैतनिक रूप से प्रचार कार्य में संलग्न हैं। आपके पुत्र श्री नेमप्रकाश आर्य भी भजनोपदेशक के रूप में प्रचार कर रहे हैं।

आपका सारा परिवार आर्य - समाजी है। आपने तथा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती क्षमावती आर्या ने सन् १९८३ में वानप्रस्थ की दीक्षा ली। १४ जून १९९५ को श्री स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती से संन्यासाश्रम की दीक्षा ली। तभी आपकी धर्मपत्नी ने भी संन्यास की दीक्षा ली।

आप स्वाध्यायशील हैं। अतः आप हर विषय को मंच पर बड़े रोचक ढंग से समझाते हैं। आपने ब्रह्मानन्द गीत माला, दयानन्दगुणगान आदि लगभग १५ पुस्तकें लिखी हैं। १५ उपदेशक शिष्य तैयार किये। अनेक शास्त्रार्थ किये। आप स्वभाव से विनम्र तथा सरल हैं।

पता : वैदिक आश्रम कुठिला, पो. बेहटा गोकुल, जि. हरदोई - २४११२५ (उ.प्र.)
दूरभाष : (०५८५३) - ४७२०५.

स्वामी धर्ममुनि

आपका जन्म २० नवम्बर १९३६ को गढ़ी सांपला, रोहतक (हरयाणा) में साधारण किसान परिवार में श्री चौ. सरदार सिंह देहाती, श्रीमती सुखदेवी के यहाँ हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई, फिर गुरुकुल झज्जर में अध्ययन किया। घर के नाम खजानसिंह से परिचित अब ब्र. धर्मवीर सन्तोषी बन गये। गुरुकुल के अध्ययन के पश्चात् अनेकों योगियों, संन्यासियों से योगभ्यास सीखते रहे। नीम का थाना (राज.) से प्राकृतिक चिकित्सक (एन.डी.) की उपाधि प्राप्त की।

आपके पिता जी ने स्वामी नित्यानन्द जी से संन्यास लेकर आत्म-स्वामी नाम रखा। उन्होंने २ अक्टूबर १९६७ को बहादुरगढ़ में आत्म-शुद्धि आश्रम की स्थापना की।

२ अक्टूबर १९७५ को आपने स्वामी प्रेमानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी धर्ममुनि परिव्राजक बने । वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गांव - गांव और गलियों में घूमते रहे । 'आत्मशुद्धि पथ' नामक मासिक पत्र का सम्पादन करते रहे तथा अनेक पुस्तकें लिखीं ।

६ सितम्बर १९७९ को आपके पिता स्वामी आत्मस्वामी जी का देहान्त हो जाने के पश्चात् आश्रम का संचालन भी करने लगे हैं । आप जनमानस के कल्याण के लिए वेद, उपनिषद् , गीता आदि ग्रन्थों की रोचक कथाएं तथा वर्तमान प्रदूषित वातावरण के परिशोधन के लिए बृहद् यज्ञों एवं अन्त : करण की शुद्धि के लिए योगसाधना शिविरों का आयोजन करते रहते हैं । आप मृदुभाषी, सरल, और प्रसन्नचित्त हैं । आपके प्रेमयुक्त व्यवहार से लोग प्रसन्न रहते हैं ।

पताः आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुर गढ, जि. रोहतक (हरयाणा) - १२४५०७
दूरभाष : (०११८) - ३१०१९५

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती

आपका जन्म ८ फरवरी १९२८ को महाराष्ट्र में हुआ । आपका पूर्व नाम श्रीराम त्र्यम्बकसा बाहेकर, १९९१ में वानप्रस्थ लेने पर श्रीमुनि वसिष्ठ आर्य था । २६ फरवरी २००० को स्वामी दीक्षानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती बने।

आपने बी.ए. बी.टी. विशारद तक अध्ययन किया । पं. पन्नालाल व्यास व्याख्यान केसरी के भाषणों से प्रभावित होकर वेदानुयायी बने ।

आपने २८ छोटी पुस्तिकायें १६ हिन्दी तथा ६ मराठी में विविध विषयों पर लिखीं । आपकी पुस्तकें पूरे भारत में जाती हैं । आप इनको लागत मूल्य से आधी कीमत पर देते हैं। आप निःशुल्क शिविर लगाते हैं, जिसमें वैदिक संस्कार, भजन, वैदिक-संस्कृति आदि विषयों पर उपदेश किया जाता है । आपने महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि स्थानों पर शिविर लगाये हैं । आपने ४ आर्य - समाजों की स्थापना की ।

आप तपोमय जीवन व्यतीत करते हुए वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं ।

पता :- आर्यसमाज, सेक्टर - ४, हिरणमगरी, उदयपुर -३१३००२ (राज.)

स्वामी इन्द्रदेव यति

आपका जन्म ७ सितम्बर १९१९ ई. को ग्राम जतीपुर, डा.ललोरी खेड़ा, जि. पीलीभीत (उ.प्र.) में पिता श्रीजयसुखराम, माता श्रीमती विलास देवी के घर हुआ।

आपने मिडिल (हिन्दी, उर्दू), ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर से विद्या - वाचस्पति, आयुर्वेदरत्न, ज्योतिष रत्न, हिन्दी सम्मेलन प्रयाग से किया।

आपने १९३९ आर्यसत्याग्रह हैदराबाद में भाग लिया। १९४० के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर ७ वर्ष का कठोर कारावास हुआ। जिसमें २५ बैंत, १०००/- जुर्माना हुआ। परन्तु ११ नवम्बर को दीपावली के अवसर पर जेल से फरार हो गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् होली के अवसर पर गृहागमन हुआ। इस अन्तराल में केरल में एवं अन्यत्र अनेक आर्य समाजों की स्थापना की, कई हजार ईसाईयों की शुद्धि तथा वैदिक - धर्म एवं हिन्दी भाषा के प्रचार का कार्य किया।

१९४८ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विवाह किया। १९६४ में अखिल भारतीय आर्य सभा स्थापित की।

२३ दिसम्बर १९६७ को गुरुकुल मनुकामना जहानाबाद, जि. पीलीभीत की स्थापना की तथा १९७२ में गुरुकुल शाही, जि. पीलीभीत (उ.प्र.) की स्थापना करके वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया।

१९९० में संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। अब दोनों गुरुकुलों का संचालन एवं निकटस्थ स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार - प्रसार कर रहे हैं।

आपने ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि, संस्कृति, समज वा समाज, जादू टोना, पाणिनीय शिक्षा की व्याख्या, नामकरण पद्धति, बलिवैश्व, सूर्यसिद्धान्त - सारिणी इत्यादि पुस्तकें लिखी।

पताः गुरुकुल शाही, जि. पीलीभीत (उ.प्र.) - २६२००१

स्वामी सुमेधानन्द

आपका जन्म १३-४-१९४० ई. में हुआ।

१९६४ में गृहत्याग कर आध्यात्मिक ग्रन्थों का विशेष अध्ययन, चिन्तन किया।

१९७० में स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली और १९७५ से दयानन्द मठ, चम्बा का कार्यभार सम्भाला।

आप हवन / यज्ञ में एवं यज्ञमय जीवन के प्रशिक्षण / प्रचार में विशेष रुचि रखते हैं। आपने १९८९ में सवालाख गायत्री - मन्त्र की आहुतियों का यज्ञानुष्ठान किया। इसी प्रकार १९९४ - १९९५ में पुनः गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान किया।

आपके संरक्षण में संस्कृत महाविद्यालय, स्कूल एवं चिकित्सालय चल रहे हैं। पारिवारिक सत्संग के लिए बहुत से लोग आपको श्रद्धा से बुलाते हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के प्रधान भी हैं।

पता : दयानन्द मठ, चम्बा, (हिमाचल - प्रदेश) १७६३१०

दूरभाष - (०१८९९) - २२८७१

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

आपका जन्म उत्तर - प्रदेश में हुआ। वेद तथा वेदांगों का आपका अध्ययन अत्यन्त विस्तृत तथा गम्भीर है। आप श्री स्वामी समर्पणानन्द के शिष्य और गुरुकुल प्रभात - आश्रम के आचार्य हैं।

आप प्रभात - आश्रण से प्रकाशित होने वाली शोध-पत्रिका 'पावमानी' के सम्पादक हैं। आपने - वेद और वेदार्थ, अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान की दृष्टि में आदि अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

आपके सान्निध्य में अधीत बहुत से स्नातक विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। आपके प्रमुख शिष्य निम्नलिखित हैं।

१. आचार्य सोमदेव जी
२. आचार्य वेदपाल 'सुनीथ' जी
३. आचार्य श्रीवत्स जी
४. आचार्य वाचस्पति जी
५. आचार्य सुरेश्वरानन्द जी
६. आचार्य विद्यानन्द जी
७. पं. योगेन्द्र धामा जी
८. पं. योगेन्द्र भान जी
९. आचार्य सत्यवीर जी
१०. पं. वागीश्वर जी
११. पं. देवशर्मा जी
१२. पं. विनोद शास्त्री जी
१३. पं. प्रेमराज जी
१४. पं. सुजीत जी
१५. आचार्य दीनदयाल जी
१६. पं. रामप्रसाद जी
१७. पं.यशःपाल जी
१८. आचार्य कर्मवीर जी
१९. पं. कुलदीप जी
२०. पं. धर्मेन्द्र जी
२१. पं. सत्यदेव जी
२२. पं. त्रिनाथ जी
२३. पं. प्रदीप जी
२४. पं. मिथिलेश जी
२५. पं. यज्ञदेव जी
२६. पं. सत्यदेव (धनुर्देव) जी
२७. पं. वेदकुमार जी।

पताः गुरुकुल प्रभात आश्रम, पो. भोला झाल,
जि. मेरठ - २५० ५०९ (उ. प्र.)
दूरभाष : (०१२१) - ८०९९२

२

गुरुकुलों के आचार्य

राष्ट्रिय / सामाजिक समस्याओं का एकमात्र समाधान है - महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थप्रकाश आदि में निर्दिष्ट 'आर्ष-पाठविधि' से अध्ययन - अध्यापन ।

आचार्य डॉ. विजयपाल

श्री आचार्य विजयपाल जी का जन्म २५ जनवरी १९२९ को उत्तर-प्रदेश में गाजियाबाद जिले के आसिफपुर उजैडा ग्राम में श्री बुधसिंह के यहाँ हुआ।

आपकी आरम्भिक शिक्षा मोदीनगर में हुई । सन् १९५१ में आपने चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय कानपुर से विज्ञान - स्नातक की उपाधि प्राप्त की ।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी की सत्प्रेरणा से उन्हीं के द्वारा स्थापित आर्ष - गुरुकुल एटा में आचार्य श्री ज्योतिः स्वरूप जी से व्याकरण का अध्ययन आरम्भ किया । कुछ काल पश्चात् २ अक्टूबर १९५२ से श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु से वाराणसी (काशी) में शिक्षा, महाभाष्य पर्यन्त सम्पूर्ण व्याकरणशास्त्र, निरुक्त, छन्दः, कल्प, मीमांसा आदि का गहन अध्ययन किया । वहीं पर अन्य गणमान्य विद्वानों से सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त - दर्शन, ज्योतिष (सूर्य-सिद्धान्त), आयुर्वेद, वाक्यपदीयम्, वैयाकरण भूषण - सार आदि ग्रन्थों का २० वर्ष पर्यन्त धीरता से अध्ययन किया ।

१९८३ में 'अष्टाध्यायीशुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

अध्ययन के साथ - साथ आप पाणिनि महाविद्याल में व्याकरणादि का अध्यापन तथा अनुसन्धान आदि कार्य भी करते रहे । पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के निधन (१९६४) के पश्चात् म.म. पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के साथ मिलकर पाणिनि महाविद्याल बहालगढ में अध्यापन, शोध आदि कार्य करते रहे । म.म. पं. यु. मी. जी के दिवंगत (१९९४) होने पर अध्यापन, सम्पादन, शोध, विरजानन्द आश्रम की व्यवस्था आदि कार्य पूर्ववत् अद्यावधि चला रहे हैं । सन् २००० से यह पाणिनि महाविद्यालय, बहालगढ से रेवली (सोनीपत) स्थानान्तरित हो गया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक, कुरुक्षेत्र आदि विश्वविद्यालयों से वेद तथा व्याकरण के विषय में शोध करने वाले छात्र एवं छात्राओं को भी यथेष्ट मार्गदर्शन एवं सहायता करते हैं ।

इस प्रकार आपने विगत ४० वर्षों से वेद, वेदाङ्ग (=शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष) वेदोपाङ्ग (= साङ्ख्य, योग, न्याय,

वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त) का अध्यापन श्रद्धा, निष्ठा और अधिकारपूर्वक निस्पृहभाव से निरन्तर कराते हुए दुर्लभ प्राचीन वैदिक ग्रन्थों का सम्पादन व व्याख्या करके वैदिक सारस्वत महायज्ञ में महान् योगदान किया है।

आपके द्वारा लिखित, व्याख्यात, सम्पादित व संशोधित ग्रन्थ :-

१. अष्टाध्यायीशुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः।

२. गोपथ - ब्राह्मण (मूलमात्र)।

३. कात्यायनीय - ऋक्सर्वानुक्रमणी (षड्गुरुशिष्यभाष्यसहिता)।

४ ऋग्वेदानुक्रमणी। ५. निरुक्तश्लोकवार्त्तिकम्।

६. पिंगलछन्दःसूत्रम् (पिंगलछन्दोविचितिभाष्योपेतम्)।

७. बौधायन - श्रौतसूत्रम् (भवस्वामीसायणभाष्ययुतम्) भागद्वयम्।

८. काशिका (जयादित्य - वामन - विरचिता)।

९. निघण्टु - निर्वचनम् (देवराजयज्वकृतम्)।

१०. माधवीया - धातुवृतिः । ११. श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय।

आपके सान्निध्य में अधीत योग्य स्नातक विविध कार्यक्षेत्रों में संलग्न हैं। आपके प्रमुख शिष्य निम्नलिखित हैं :-

१. श्री - डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री। २. श्री -धर्मवीर आचार्य।

३. श्री - डॉ. सोमदेव शास्त्री। ४. श्री - स्वामी वेदानन्द।

५. श्री - डॉ. पं. चन्द्रदत्त शर्मा। ६. श्री-पं. वेदमित्र।

७. श्री -पं. द्विजराज। ८. श्री- आचार्य जगद्देव नैष्ठिक।

९. श्री -कृष्णदेव शास्त्री। १०. श्री - दीपक आर्य।

११. श्री -प्रदीपकुमार शास्त्री। १२. श्री रंगय्या आचार्य।

१३. श्री-परमदेव मीमांसक। १४. श्री -चारुदत्त शास्त्री

१५. श्री-पं. प्रशांतकुमार इत्यादि।

पता :- पाणिनि महाविद्यालय, ग्राम - रेवली, पो. - शाहपुर तुर्क,

सोनीपत - १३१००१ (हरयाणा)

दूरभाष : (०१२६४)-४८२८५७

आचार्य विश्वदेव शर्मा

श्री आचार्य विश्वदेव जी का जन्म जून सन् १९४४ में हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले में श्री भगतराम जी पराशर एवं श्रीमती मथुरादेवी के घर हुआ।

घर पर प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् १४ वर्ष की अवस्था में घर त्यागकर संस्कृत अध्ययन की इच्छा से ऋषिकेश (उत्तरांचल) के पौराणिक विद्यालय में प्रवेश लिया।

कालान्तर में उपदेशक विद्यालय हिसार के दो छात्रों के सम्पर्क से आर्य-समाजी बने । सत्यार्थप्रकाश आदि के अध्ययन एवं उन आर्य युवकों (श्री - शंकरलाल तिवारी, श्री - नागेन्द्र पाण्डेय) की प्रेरणा से अत्यन्त प्रभावित होकर आर्ष - ग्रन्थों के अध्ययनार्थ गुरुकुल एटा (उ.प्र.) आये । यहाँ महा-वैयाकरण श्री पं. शंकरदेव जी, आचार्य श्री ज्योतिः स्वरूप जी एवं श्री पं इन्द्रदेव जी आदि से व्याकरण, निरुक्त, दर्शन, छन्दःशास्त्र, वेद आदि शास्त्रों का गम्भीरता से अध्ययन करके अध्यापन की विशेष योग्यता प्राप्त की । अध्ययन काल में भी आप अपने से छोटी श्रेणी के छात्रों को योग्यता पूर्वक पढ़ाते रहे । इस अध्ययन-अध्यापन के साथ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी की आध्यात्मिक प्रेरणा निरन्तर मिलती रही । अध्ययन काल में स्वामी त्यागानन्द जी का विशेष आर्थिक सहयोग रहा।

१९७१ में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आर्ष गुरुकुल एटा के संस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द जी के आदेश पर उक्त गुरुकुल में मुख्याध्यापक तथा उपाचार्य पद पर सन् १९९६ तक कार्य किया ।

गुरुकुल एटा के लगभग ३० वर्ष के अध्यापन काल में शताधिक स्नातक निकले, जो विभिन्न स्थानों पर उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । जिनमें प्रमुख हैं :-

१. श्री. डॉ. नारायणदेव जी शास्त्री (डिग्री कॉलेज भरतपुर),
२. श्री. आचार्य प्रद्युम्न जी (गुरुकुल खानपुर, हरयाणा),
३. श्री. आचार्य आनन्दप्रकाश जी (आर्ष शोधसंस्थान, अलियाबाद, शामीरपेट, आं.प्र.),
४. श्री. प्राज्ञदेव जी पुरोहित (आ.स. बड़ा बाजार, पानीपत),
५. श्री. डॉ. समरभानु जी आचार्य (केन्द्रीय विद्यालय, दिल्ली),

६. श्री. रामनारायण जी शास्त्री (जोधपुर, राज.),
७. श्री. डॉ. कमलेशकुमार जी शास्त्री, (अहमदाबाद विश्वविद्यालय),
८. श्री. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (महर्षि दया. वि.वि. रोहतक, हर.),
९. श्री. आचार्य विद्यादेव जी (उपदेशक विद्यालय टंकारा, गुज.),
१०. श्री. आचार्य रामदेव जी (उपदेशक विद्यालय टंकारा, गुज.),
११. श्री.ओम् प्रकाश जी पुरोहित (आ.स. जयपुर हाउस, आगरा),
१२. श्री. ओम्नाथ जी विमली (राजधानी कॉलेज, दिल्ली),
१३. श्री. आचार्य युधिष्ठिर जी (गुरुकुल विराट नगर, नैपाल),
१४. श्री. रामपाल जी आचार्य (डी.ए.वी. स्कूल जयपुर, राज.),
१५. श्री. भद्रसेन जी (उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद),
१६. श्री. विद्याधर जी (उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद),
१७. श्री. नन्दकिशोर जी शास्त्री पुरोहित (आ. स. अशोक विहार, दिल्ली),
१८. श्री. राजेन्द्र जी पुरोहित (आर्य स. हापुड. गाजियाबाद, उ.प्र.),
१९. श्री. राकेशकुमार जी शास्त्री पुरोहित (आ.स.शिवगंज पाली, राज.),

सन् १९९६ में आर्य समाज बड़ा बाजार सोनीपत में गुरुकुल चलना प्रारम्भ किया। सन् १९९९ में २८ जुलाई को वेदवेदाङ्ग विद्यापीठ (गुरुकुल) सोनीपत की स्थापना करके स्वतन्त्ररूप से अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया।

विभिन्न आर्य समाजों एवं परिवारों में सौ से अधिक यजुर्वेद पारायण यज्ञ किये। प्रतिवर्ष विभिन्न आर्य समाजों में वेदकथा के रूप में प्रचार कार्य करते हैं। यथावसर पौरोहित्य एवं प्रचारार्थ जाते रहते हैं।

आपने गम्भीर अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, जो अभी अप्रकाशित हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में आपके विचारपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

सन् १९९५ में आपको पं. युधिष्ठिर मीमांसक पुरस्कार से मुम्बई में पुरस्कृत किया गया। आ.स. भरतपुर एवं आ. स. व्यावर में भी आप सम्मानित हुए। आर्य जगत् को आपसे बहुत आशाएं हैं।

पता :- वेदवेदाङ्ग विद्यापीठ (गुरुकुल), देवडू रोड, गली नं. २,
सोनीपत - १३१००१ (हरयाणा), दूरभाष : (०१२६४) २३५४३४.

आचार्या मेधादेवी

आपका जन्म २० जुलाई १९४८ को मध्यप्रदेश में सतना जिले के कोलगवाँ ग्राम में श्री कमलाप्रसाद आर्य एवं श्रीमती हरदेवी आर्या के घर हुआ।

७ वर्ष की अवस्था में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के विद्यालय मोतीझील वाराणसी में अपनी ज्येष्ठा बहिन डॉ. प्रज्ञादेवी के साथ प्रवेश लिया।

६ महीने में सम्पूर्ण अष्टाध्यायी (४००० सूत्र) कण्ठस्थ सुना दी। ८-९ वर्ष की अवस्था से ही काशी के बड़े बड़े दिग्गज पण्डितों के समक्ष बिना रटे अष्टाध्यायी के सूत्रों के अर्थ करके दिखाये। चुटकियों में बड़ी कठिन - कठिन सिद्धियाँ पण्डितों को सुनाकर आश्चर्यचकित कर देती थीं। महाभाष्य, निरुक्तादि का अध्ययन अपनी ज्येष्ठा बहिन से किया। सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी से आपने शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

आपने आजीवन कठोर ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर बड़ी बहिन के अनुगामित्व में जीवन बिताने का निश्चय किया। फलत: २०-२१ वर्ष की अल्पावस्था से ही जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक कन्याओं को सुयोग्य विदुषी बनाने तथा आन्तरिक व्यवस्था देखने में नींव के पत्थर की तरह बिना बाह्य प्रदर्शन के स्वयं को निः स्वार्थभाव से लगा दिया।

आपने आरम्भिक ४ स्नातिकाओं सूर्यदेवी, नन्दिता शास्त्री, प्रियंवदा वेदभारती तथा सुश्री माधुरी को महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण का अध्यापन कराया और तपस्वी जीवन जीने की प्रेरणा दी। ग्रन्थों के प्रकाशन में भी आपका विशेष सहयोग रहता है। ६ दिसम्बर १९९५ को मान्या आचार्या डॉ. प्रज्ञादेवी जी के दिवंगत हो जाने के पश्चात् गुरुकुल के संचालन का सम्पूर्ण कार्य कुशलता से कर रही हैं।

आप अत्यन्त विनम्र, छोटों से भी सीखने की भावना से युक्त, स्नेही, ममतामयी, सदाचारिणी, तपस्विनी, पवित्रात्मा, बच्चों जैसी सरल, मधुर, निश्छल, सेवाव्रती, वेदानुगामिनी, सबकी प्रेरणा - स्रोत, आर्ष - शिक्षा को ही अपना उद्देश्य समझने वाली आर्यमहिलारत्न हैं।

पता : पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी - १० (उ.प्र.)

दूरभाष - (०५४२)-३६०३४०.

आचार्य विजयपाल योगार्थी

श्री आचार्य विजयपाल जी योगार्थी का जन्म १२ अगस्त सन् १९५२ को हरयाणा में रोहतक जिले के मकड़ौली कलां गांव में श्री महाशय बलवन्त सिंह जी आर्य के घर हुआ।

गांव में ही प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् १९६७ में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए। यहाँ प्रथम श्रेणी में व्याकरणाचार्य करने के साथ - साथ हरयाणा स्तर की भाषण - प्रतियोगिता में अनेक वार प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अध्ययन के साथ - साथ ब्रह्मचर्य - पालन, व्यायाम के संयोग एवं दूध-घी की समुचित व्यवस्था होने से आपका स्वास्थ्य दर्शनीय बन गया था।

१९७६ में गुरुकुल झज्जर का समस्त कार्यभार आपको सौंपा गया। तब से आप यहाँ की समस्त गतिविधियों का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

आपने वर्षों तक पूरे देश में घूम - घूम कर शक्तिप्रदर्शन के माध्यम से युवकों को सदाचार, व्यायाम और योग की प्रबल प्रेरणा दी तथा जिज्ञासुओं को इसका क्रियात्मक प्रशिक्षण भी दिया। दो जीपें रोकना, मोटी बेल (सांकल) तोड़ना और ६-६सूत के सरिये, भाला लगाकर गले से मोड़ना साधारण बात थी।

आपके द्वारा संचालित झज्जर में विभिन्न प्रान्तों के कई सौ छात्र अपना सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। वे भारत को कृषि और ऋषि प्रधान देश मानकर अपने छात्रों को विद्वान् किसान और पहलवान बनाने पर बल देते हैं।

आप सरलता और सादगी की सजीव प्रतिमा हैं। छल - कपट, दम्भ आदि आपसे कोसों दूर हैं। दूसरों का सम्मान करना आपका स्वभाव है। निश्चिन्तता आपका विशेष गुण है।

पता :- महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, जि. झज्जर - १२४१०३ (हरयाणा)

दूरभाष : (०१२५१)-५२०४४, ५३३३२

आचार्या डॉ. सुमेधा

श्रीमद् दयानन्द कन्या-गुरुकुल चोटीपुरा की सञ्चालिका आचार्या सुमेधा जी का जन्म अप्रैल १९६० ई. में उत्तर प्रदेश में ज्योतिबा फुले नगर (अमरोहा) जिले के चोटीपुरा ग्राम में श्री हरगोविन्द सिंह आर्य एवं श्रीमती दुलारी देवी के घर हुआ।

प्राथमिक शिक्षा जन्म - ग्राम में पूरी करने के पश्चात् आपने आर्ष-कन्या - गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में प्रविष्ट होकर शास्त्री एवं व्याकरणाचार्य, वेदाचार्य, इतिहासाचार्य की परीक्षाएं 'श्रीमद् दयानन्दार्ष विद्यापीठ' झज्जर, से उत्तीर्ण कीं सन् १९८२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम. ए. (संस्कृत) की उपाधि प्राप्त की। १९८७ में महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य म 'वैदिक अग्नि देवता' विषय पर पी -एच्. डी. की उपाधि प्राप्त की। इस शोधप्रबन्ध का सन् १९९९ में 'कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान' साहिबाबाद द्वारा प्रकाशन हुआ।

अनेक वर्षो तक 'कन्या गुरुकुल नरेला' में अध्यापन करने के पश्चात् आपने गुरुकुल - संस्कृति के उत्थान को अपना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित करके आजीवन ब्रह्मचर्य - व्रत धारण किया और सन् १९८८ में अपने पिताश्री द्वारा दान में प्रदत्त १० बीघा भूमि में 'श्रीमद् दयानन्द कन्या -गुरुकुल महाविद्यालय' का शुभारम्भ किया। सम्प्रति आप संस्था के लिए समर्पित विद्यासम्बन्धिनी भगिनी डॉ. सुकामा जी के साथ इस कन्या - गुरुकुल का सञ्चालन कर रही हैं। साथ ही आप वैदिक - सिद्धान्तों के प्रचारार्थ, भारत में यत्र - तत्र बृहद् यज्ञों के सम्पादनार्थ एवं भाषणादि के लिए जाती रहती हैं।

आर्य-जगत् में आपके द्वारा की जा रही सेवाओं तथा वैदुष्य के परिणाम-स्वरूप आपको 'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली', 'मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली', 'विक्रम-प्रतिष्ठान' (संयुक्त राज्य अमेरिका) आदि संस्थाओं ने श्रद्धा से सम्मानित किया है।

पताः श्रीमद् दयानन्द कन्या - गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा,
पत्रालय - रजबपुर, जि. ज्योतिबा फुले नगर-२४४२३६ (उ. प्र.)
दूरभाष : (०५९२२)-४५२०८

आचार्या डॉ. सुकामा

श्रीमद् दयानन्द कन्या-गुरुकुल चोटीपुरा की सहसञ्चालिका आचार्या सुकामा (कामजित्) जी का जन्म १ अक्टूबर १९६० को हरयाणा में झज्जर जिले के आकूपुर ग्राम में श्री राजेन्द्र सिंह आर्य एवं श्रीमती वेदकौर के घर हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। ८ वर्ष की अवस्था में आपका 'कन्या - गुरुकुल नरेला' (दिल्ली) में प्रवेश हुआ। वहाँ से आपने 'श्रीमद् दयानन्दार्ष विद्यापीठ झज्जर' की शास्त्री, व्याकरणाचार्य एवं वेदाचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। सन् १९८२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम. ए. (संस्कृत) किया। सन् १९८७ में महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में 'वैदिक इन्द्र देवता' विषय पर पी - एच्. डी. की उपाधि प्राप्त की; जिसका प्रकाशन सन् १९९९ 'में कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान' साहिबाबाद द्वारा हुआ।

कन्या - गुरुकुल नरेला में आपने अनेक वर्षों तक सुयोग्य एवं सफल - शिक्षिका के रूप में उच्च श्रेणी की छात्राओं को शिक्षित किया। वहीं पर 'छात्रा - वाग्वर्धिनी सभा' की मन्त्री एवं पुस्तकालयाध्यक्षा भी रहीं।

गुरुकुल - शिक्षा काल में डाले गये सुसंस्करों को मूर्तरूप देने के लिए आपने आजीवन ब्रह्मचर्य -व्रत धारणा कर विद्यासम्बन्धिनी बहिन आचार्या सुमेधा जी के साथ मिलकर गुरुकुल - पद्धति के उत्थान को अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बनाया तथा १९८८ में उत्तरप्रदेश के ज्योतिबा फुले नगर जिले के चोटीपुरा ग्राम में 'श्रीमद् दयानन्द कन्या - गुरुकुल' का शुभारम्भ किया। सम्प्रति दिनरात गुरुकुल की सेवा ही आपका प्रमुख कार्यक्षेत्र है। आप यथावसर विभिन्न क्षेत्रों में वैदिक - संस्कृति के प्रचारार्थ भी जाती रहती हैं।

आपके व्यक्तित्व और कर्तृत्व से प्रभावित होकर 'विक्रम प्रतिष्ठान' 'मानव सेवा - प्रतिष्ठान' दिल्ली आदि संस्थाओं ने हृदय से सम्मानित किया है।

पताः- श्रीमद् दयानन्द कन्या - गुरुकुल, चोटीपुरा,
पो. रजबपुर, जि. ज्योतिबा फुले नगर (उ.प्र.) - २४४२३६
दूरभाष - (०५९२२) - ४५२०८

आचार्य वेदव्रत मीमांसक

आपका जन्म आन्ध्र - प्रदेश में मेदक जिले की गजवेल्लि तहसील के अक्कावरम् नामक ग्राम में एक निर्धन परिवार में वैशाख शु.५, रविवार वि.सं. १९९७ (सन् १९४०) को हुआ। आपके पिता स्व.श्री लक्ष्मय्या जी तथा माता श्रीमती सत्यम्मा जी हैं।

आरम्भिक विद्याभ्यास तेलुगु एवं उर्दू के माध्यम से स्वग्राम में हुआ। पश्चात् दसवीं कक्षा तक हैदराबाद में हुआ।

हैदराबाद में आर्य-समाज के सत्संग में आर्य-समाज एवं महर्षि दयानन्द के परिचय से आपके जीवन में विशेष परिवर्तन आया। जिसके परिणाम स्वरूप आपने गुरुकुल साधु आश्रम, जि. अलीगढ (उ.प्र.) में प्रवेश लिया। वहाँ कुछ दिन रहकर आर्ष-पाठविधि के अनुसार अध्ययन करने के लिए एटा गुरुकुल में प्रवेश लिया। एक वर्ष पश्चात् वहाँ से गुरुकुल सिरसागंज में १½ वर्ष रहे। वहाँ आपने अपने हाथ की अंगुली चीर कर उसके रक्त से एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखा-१. आजीवन ब्रह्मचारी रहेंगे; २. आर्ष - ग्रन्थों को ही पढ़ेंगे, पढायेंगे; ३. नौकरी नहीं करेंगे। सिरसागंज के पश्चात् गुरुकुल झज्जर, बेरी, दिल्ली आदि स्थानों पर आर्ष विद्या का अध्ययन करते रहे। व्याकरण, निरुक्त; सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त आदि पढ़कर अजमेर में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी से मीमांसा - दर्शन पढ़ा। उज्जैन (म.प्र.) जाकर ज्योतिष और आयुर्वेद का अध्ययन किया।

आपने छोटे बड़े लगभग २७ ग्रन्थ आर्यभाषा एवं तेलुगु में लिखे हैं। जिनमें ज्योतिष - विवेक, आर्यराज्य का निर्माण क्यों और कैसे ?, आर्योद्देश्यरत्नमाला का संस्कृत पद्यानुवाद, सर्वे जानन्ति संस्कृतम् आदि प्रमुख हैं।

अध्ययन के पश्चात् आपने पन्द्रह मास तक आर्य - प्रतिनिधि सभा (आं.प्र.) की ओर से आन्ध्र-प्रदेश में वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्ष पाठ-विधि के विद्वान् तैयार करने के उद्देश्य से आपने वि. सं. २०३५ (सन् १९७८) में 'आर्ष गुरुकुल वड्लुर' की स्थापना की। इस गुरुकुल के अनेक स्नातक देश-विदेश में वैदिक - धर्म के प्रचार - प्रसार में संलग्न हैं, जिनमें ब्र. सत्यवीर जी एवं ब्र. ब्रह्मदत्त जी आदि प्रमुख हैं। इसके साथ - साथ आपने तथा आपके शिष्यों ने साप्ताहिक सत्संगों, संस्कारों, योगशिविरों, आरोग्य - शिविरों, अध्यापक -

शिविरों, सदाचार - शिक्षण - शिविरों आदि के माध्यम से आन्ध्र - प्रदेश एवं अन्य प्रान्तों में वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार - प्रसार किया है।

आपके सम्पादकत्व में 'वैदिक धर्ममु' नामक मासिक पत्रिका तेलुगु भाषा में निकलती है।

आपने हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन में १९५७ में (पंजाब में) भाग लिया। गोरक्षा आन्दोलन में चार वार कारावास में रहे।

ज्योतिष पर आपके अमृतसर में दो शास्त्रार्थ हुए। 'कालाकाल मृत्य' पर एक शास्त्रार्थ गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक में तथा दूसरा दिल्ली में हुआ।

वैदिक धर्म के प्रति समर्पित आपके तपोपूत जीवन, कार्यनिष्ठा, पाण्डित्य एवं ऋषिभक्तिभाव से प्रेरित व प्रभावित होकर अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है, जिनमें प्रमुख हैं - युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार (सन् १९९८) उस्मानिया वि.वि. में विजिटिंग प्रोफेसर, विश्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (दिल्ली), आर्यसमाज व्यावर, श्रीमती सरस्वतम्मा एवं पाण्डुरंगं गुप्ता (१,००,०००/-) श्री मनस्वी जी वानप्रस्थ (५१,०००/-) आदि।

पताः- आर्ष गुरुकुल वड्लूर, कामारेड्डी
जि. निजामाबाद - ५०३ १११ (आं.प्र.)
दूरभाष - (०८४६८) - २३६२१, २३५८५

आचार्या प्रियंवदा 'वेदभारती'

आपका जन्म २४/१०/१९६० को ग्राम - तलगल, जि. पौढ़ी गढ़वाल (उत्तरांचल) में श्री पं. गोविन्दराम आर्य 'ध्यानी' के घर हुआ।

घर पर प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपका दस वर्ष की अवस्था में पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में प्रवेश कराया गया। आपने इस गुरुकुल में पच्चीस वर्ष का सुदीर्घ काल व्यतीत करके वाराणसेय संस्कृत - विश्वविद्यालय से व्याकरणाचार्य, तथा वेद-निरुक्ताचार्य की परीक्षा में सर्वोच्च अङ्कों के कारण सर्वप्रथम स्थान एवं स्वर्णपदक प्राप्त किया। पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्नातिका होने के पश्चात् १२ वर्ष तक गुरुकुल में सफल अध्यापन का कार्य भी आपने किया। आचार्या प्रज्ञादेवी जी आपके वैदुष्य से प्रसन्न होकर अपने साथ

पञ्जाब, उदयपुर, अजमेर, मुम्बई, बैङ्गलौर, असम, अरुणाचल, बिहार आदि क्षेत्रो में आयोजित संगोष्ठी, यज्ञ, उत्सव आदि में ले जाती थीं। इन स्थानों में वेदपाठ, भाषण, भजन, प्रवचन, वार्तालाप आदि विभिन्न कार्यक्रम कर आपने गुरुकुल का यशःसंवर्धन किया। 'पाणिनीय - व्याकरण - वाङ्मये यज्ञमीमांसा' विषय पर शोध करके आपने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

अपने क्षेत्र की आर्य - जनता की प्रबल इच्छा को देखते हुए आपने अपने पितृस्थान नजीबाबाद में आर्ष प्रणाली से कन्याओं को वेद - वेदाङ्गों की शिक्षा प्रदान करने के लिए सन् १९९६ में गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ की स्थापना आर्यसमाज आदर्शनगर में की। पाँच वर्ष तक इस आर्य - समाज में चलकर यह गुरुकुल अगस्त २००१ से नजीबाबाद से ३ कि. मी. दूर गंग नहर के तट पर निजी भवन में स्थानान्तरित हो गया है।

यहाँ विभिन्न प्रान्तों की पचास से अधिक कन्याएँ अध्ययनरत हैं। गुरुकुल के सञ्चालन में इन्हें अपनी अनुजा पाणिनि-कन्या-महाविद्यालय, वाराणसी की ही स्नातिका श्रीमती ऋतम्भरा व्याकरणाचार्या एम. ए. का सर्वात्मना सहयोग प्राप्त है।

इसके अतिरिक्त व्याकरण, निरुक्त, यज्ञ, वेद, वैदिक - सिद्धान्त तथा सामाजिक समास्याओं पर संस्कृत और हिन्दी की अनेक सुप्रतिष्ठित पत्र - पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। साथ ही वैदिक धर्म के प्रचारार्थ यज्ञ, संगोष्ठी, उत्सव, वेदप्रचार-सप्ताह आदि के कार्यक्रमों में अपनी अन्तेवासिनी छात्राओं के साथ सम्पूर्ण देश में यथावसर जाकर विद्वज्जगत् एवं जनता में वेद तथा ऋषियों की अमृतवाणी प्रचारित, प्रसारित करने में आप विशेष योगदान कर रही हैं।

पता : आर्ष कन्या - गुरुकुल विद्यापीठ,
(निकट -श्रवणपुर) नजीबाबाद, जि. बिजनौर - २४६७६३ (उ. प्र.)
दूरभाष : (०१३४१) - ३१३४४

आचार्य प्रद्युम्न

आचार्य श्री प्रद्युम्न जी का जन्म सन् १९५५ में राजस्थान में अलवर जिले के जखराणा ग्राभ में श्री ओम्प्रकाश जी एवं श्रीमती मूर्तिदेवी जी के सम्पन्न आर्य परिवार में हुआ ।

गांव के विद्यालय में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर दिल्ली विश्वविद्यालय में बी. ए. प्रथम वर्ष तक आधुनिक शिक्षा प्राप्त की । आगे प्राचीनविद्यासम्बन्धी संस्कारों से प्रेरित होकर गुरुकुलीय शिक्षा का अनुसरण किया । आपने आचार्य विश्वदेव जी (एटा), स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश (झज्जर), पं.उदयवीर जी (गाजियाबाद), आचार्य विजयपाल जी (बहालगढ़) आदि से व्याकरण, निरुक्त, दर्शनों आदि का अध्ययन किया ।

आप अध्ययन काल में भी कुछ दिनों तक गुरुकुल एटा में तथा सन् १९७६ से १९८१ तक गुरुकुल झज्जर में व्याकरण आदि पढ़ाते रहे । पुन ः हरयाणा - राजस्थान सीमा पर स्थित गांव खानपुर, जि.महेन्द्रगढ़ में स्वतन्त्र रूप से गुरुकुल की स्थापना करके संचालन कर रहे हैं।इस गुरुकुल से अनेक योग्य स्नातक निकल कर विभिन्न स्थानों पर अध्यापन प्रचार आदि कार्य कुशलता से कर रहे हैं ।

आपने सरल संस्कृत भाषा में १७८ पृष्ठों का 'पारिभाषिक' नामक अपूर्व ग्रन्थ लिखा है, जो संस्कृत - व्याकरण के छात्रों एवं अध्यापकों के लिए समान रूप से उपयोगी है ।

अँध्यापन के अतिरिक्त आप आस - पास के विभिन्न जिलों में प्रचार तथा युवकों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए जाते रहते हैं । आपकी व्यायाम में विशेष रुचि है । आपकी शारीरिक शक्ति को देखकर अनेक युवा, वृद्ध, बालक दुर्व्यसनों को छोड़कर सदाचार अपनाते हैं ।

आप स्वभाव से प्रसन्न रहते हैं, दूसरों को भी प्रसन्न रखने का प्रयास करते हैं । रुचि से अतिथि- सेवा करते हैं । किसी की निन्दा में रुचि नहीं लेते । आपसे आर्य-जगत् को बहुत आशाएं हैं ।

पता ः आर्ष गुरुकुल खानपुर, पो. मढाना, वाया - नारनौल,
जि. महेन्द्रगढ - १२३ ००१ (हरयाणा),
दूरभाष ः (०१२८२)-५२९८२.

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

आपका जन्म २७ सितम्बर १९४९ को राजस्थान प्रान्त के नागौर नामक नगर (नानी के घर) में हुआ। आपके पिता श्री द्वाराकादास मीनाकार और माता का नाम श्रीमती सूरजदेवी है। बीकानेर नगर में स्थित आपके अपने घर में मीनाकारी एवं जवाहरात के आभूषणों के निर्माण तथा विक्रय का व्यवसाय होता था।

आपकी आधुनिक शिक्षा एम. ए. (अर्थशास्त्र) तक हुई। एम.ए. करते हुए आपका आर्य-समाज से सम्पर्क हुआ। सत्यार्थ - प्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़ने से किसी गुरुकुल में जाकर संस्कृत भाषा एवं वेदादि शास्त्रों को पढ़ने की इच्छा हुई। घर वालों के विरोध करने पर बिना बताए घर से निकल पड़े। श्री स्वामी सत्यपति जी की प्रेरणा से आचार्य बलदेव जी के गुरुकुल कालवा में अन्तेवासी बने। वहाँ से व्याकरणाचार्य करके ज्वालापुर हरिद्वार में आचार्य रामप्रसाद जी से निरुक्त शास्त्र का अध्ययन किया। पश्चात् स्वामी सत्यपति जी से दर्शनों का अध्ययन किया। सन् १९८६ से आर्यवन रोजड़ में लगे 'दर्शन - शिविर' में दर्शनों में प्रौढ़ता प्राप्त करने एवं योगसाधना के उद्देश्य से पुनः अध्ययन किया।

रोजड़ के शिविर के प्रथम सत्र के पश्चात् वहाँ 'दर्शन - योग महाविद्यालय, रोजड़' नाम से स्थायी विद्यालय बना। आप उसके आचार्य निश्चित हुए। उसी को केन्द्र बनाकर आपने दर्शन आदि के अध्यापन, योगशिविरों, ग्रन्थ लेखन, वैदिक प्रचार आदि रूप में व्यापक कार्य प्रारम्भ किया है। आपके लगभग ३ दर्जन शिष्य भी विभिन्न स्थानों पर वैदिक योग एवं सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं।

आपने दार्शनिक निबन्ध, पर्यावरण प्रदूषण, सोलह संस्कार, योग-दर्शन, क्रियात्मक योगाभ्यास आदि प्रेरक पुस्तकें भी लिखी हैं। करोड़ों रु. की लागत से बनने वाले 'वानप्रस्थ - साधकाश्रम, रोजड़' के आप प्रबन्धक न्यासी हैं। गुजरात में भूकम्प के समय अपने शिष्यों के साथ आपने पीड़ितों की भरपूर सेवा की। आप व्यावहारिक, प्रसन्नचित्त एवं गम्भीर व्यक्तित्व के धनी हैं।

पता :-दर्शन - योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड़, पो. सागपुर

जि. साबर कांठा - ३८३३०७ (गुजरात)

दूरभाष : (०२७७४) - ७७२१७, ७७७१७

डॉ. धर्मपाल आचार्य

आपका जन्म २५ दिसम्बर १९५३ ई. को ग्राम - ततारपुर, जि. गाजियाबाद (उ.प्र.) में श्री धनत्तर (पहलवान्)जी के घर हुआ।

प्राथमिक शिक्षा स्वग्राम में हुई। तत्पश्चात् स्वामी मुनीश्वरानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल आश्रम ततारपुर में वेदवेदाङ्गों का अध्ययन किया। गुरुकुल सिरसागंज में शास्त्री, गुरुकुल ज्वालापुर से विद्याभास्कर, मेरठ वि. विद्या. से एम. ए. करके, वाराणासी से 'वेदाङ्ग-प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर पी - एच. डी.की उपाधि प्राप्त की।

शिक्षा पूरी करके गुरुकुल ततारपुर के प्राचार्य बने। कालान्तर में स्वतन्त्र रूप से गुरुकुल महाविद्यालय पूठ की स्थापना की। आप गाँव हो या शहर दिन - रात प्रचार कार्य में लगे रहते हैं।

गुरुकुल के विद्यार्थी भी यज्ञ एवं संस्कार करते हैं तथा उत्सवों में जाकर वेदपाठ, विविध प्रकार के व्यायामों का प्रदर्शन करते हैं, जिससे लोगों में वैदिक-धर्म एवं आर्य-समाज के प्रति रुचि बढ़ती है।

अध्ययन - अध्यापन के साथ - साथ आपकी विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों में विशेष रुचि रहती है। आप कुश्ती, कबड्डी, आसन, मल्लखम्भ, दण्ड बैठक, प्राणायाम, जंजीर तोड़ना, सरिया मोड़ना, गाड़ी रोकना, छाती पर पत्थर तुड़वाना आदि विभिन्न व्यायामों के प्रदर्शन के साथ - साथ युवकों को प्रशिक्षित करने एवं चरित्रवान् बनाने का कार्य बड़ी रुचि से करते हैं। इस लिए आपको आर्य-वीर-दल उ.प्र. का मुख्य संचालक बनाया गया है।

गुरुकुल पूठ के अतिरिक्त आप गुरुकुल कुण्डा (बिजनौर), गुरुकुल माण्डवाश्रम (बुलन्दशहर) वैदिक शिक्षा समिति मल्लपुर (मुरादाबाद), गुरुकुल आश्रम वनखण्डा (गाजियाबाद) आदि संस्थाओं का संचालन भी कर रहे हैं।

पता :- गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती), पो.बहादुरगढ़,
जि. गाजियाबाद-२४५२०८ (उ.प्र.)

आचार्य हरिदेव

आपका जन्म हरियाणा प्रान्त में जि. भिवानी के गौरीपुर ग्राम में श्री तोखराम जी एवं माता समाकौर आर्या के घर २० जून १९४७ को हुआ ।

जन्मभूमि में विद्यालय न होने के कारण दूरस्थ ग्राम कितलाना में चौथी कक्षा तक अध्ययन किया । आपको १९६१ में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट कराया । आपने केवल छह वर्ष में व्याकरणाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की ।

व्याकरणाचार्य के उपरान्त १९७१ तक गुरुकुल झज्जर में ही अध्यापन कार्य करते रहे । तदनन्तर १९७३ तक गुरुकुल कालवा में तथा उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के आचार्यपद पर रहते हुए अध्यापन कार्य किया । आर्यमहासम्मेलन मारीशस से लौटकर हरयाणा, राजस्थान, उत्तर- प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और महाराष्ट्र में दो वर्ष तक वैदिकधर्म का विशेष प्रचार किया । गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वैदिक साहित्य से प्रथमश्रेणी में एम. ए. उत्तीर्ण किया । तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी में ही वेद के अध्यापक नियुक्त हो गए ।

सन् १९७९ में दिल्ली आकर जीर्णशीर्ण श्रीमद्दयानन्दविद्यालय गौतमनगर को कार्यस्थली बनाया ।

सर्वथा अपरिचित स्थान और व्यक्तियों में जाकर आपने दो - दो रुपये चन्दे के लिए १०-१० मील जाकर घोर पुरुषार्थ करके गुरुकुल गौतमनगर को आज देश के सर्वोच्च गुरुकुलों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया । आपके त्याग, तप, विद्वत्ता, पुरुषार्थ और निःस्वार्थ सेवाभाव से प्रभावित होकर दो रुपये देने वाले लोग दस - दस लाख रुपये तक देने लग गए । इसी सुविधा के कारण आप अभी तक सौ से अधिक स्नातक तैयार कर चुके हैं । इस समय गुरुकुल गौतमनगर में २५० छात्र हैं । इनका पूरा व्यय आप ही देते हैं ।

फरीदाबाद जिले के मंझावली ग्राम में वेदविद्यालय की एक शाखा ४ जून सन् १९९४ में खोली गई । वहाँ ८० छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं । इसी प्रकार दूसरी शाखा देहरादून के ग्राम पौंधा के पास आर्षज्योतिर्मठ गुरुकुल के नाम से सन् १९९९ में आरम्भ की गयी है । वहाँ अभी १४ ब्रह्मचारी हैं । वे बिना परीक्षा दिये वैदिक पद्धति से विद्वान् बनकर देश-विदेश में वैदिकधर्म और आर्यसभ्यता का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से लगे हुए हैं । अभी तक २२ छात्र यजुर्वेद पूरा

कण्ठस्थ कर चुके हैं । दिल्ली विश्वविद्यालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. में जाकर आपके छात्र स्वर्णपदक प्राप्त करते रहे हैं । योगासन-प्रतियोगिताओं में भी आपके छात्र प्रथम स्थान प्राप्त करते रहे हैं। जिसमें विश्वस्तरीय योग - प्रतियोगिता से प्राप्त स्वर्णपदक भी सम्मिलित है।

आप चतुर्वेदपारायण यज्ञों के माध्यम से वेदप्रचार करने के साथ - साथ उपदेश, कथा , भाषण आदि के माध्यम से भी जनकल्याण करते रहते हैं । अध्ययन के साथ-साथ छात्रों को वैदिक पद्धति से यज्ञ और संस्कार करने की शिक्षा भी दे रहे हैं। १९६६ में गोरक्षा-सत्याग्रह में जेल भी जा चुके हैं। भारत में वेदपाठ की परम्परा को जीवित रखने हेतु अपने आशीर्वाद एवं ज्ञान से सैकड़ों वेदपाठी तैयार किये हैं । आप ' वैदिक विजय ' हिन्दी में तथा ' आर्षज्योति ' संस्कृत की मासिक पत्रिका को प्रकाशित कर रहे हैं। महर्षि पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी, लिंगानुशासन और शान्तन्वाचार्य कृत फिट्सूत्रपाठ को ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करवा दिया है। यजुर्वेद और सामवेद भी ताम्रपत्रों पर खुदवा दिये हैं। अथर्ववेद भी ताम्रपत्रों पर खोदा जा रहा है । इसी भाँति ऋग्वेद, छह दर्शन , व्याकरण के सभी ग्रन्थ, महर्षि दयानन्द के हस्तलेख और उनके असली चित्र भी ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण होंगे । विदेशों में वैदिकधर्म का प्रचार करने के लिए आप मॉरीशस, थाईलैण्ड, मलेशिया, हालैण्ड, जर्मनी, फ्रांस और बैल्जियम आदि देशों की यात्राएँ भी कर चुके हैं । आपको म.म.पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृतिपुरस्कार आदि बहुत से पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

पता :- ११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली ११००४९

दूरभाष- (०११) ६५२५६६३

आचार्य डॉ. जयदत्त उप्रैती

डॉ. जयदत्त उप्रैती का जन्म अल्मोड़ा जिले (उत्तरांचल) के पीतोली दन्या नामक ग्राम में २५ अक्टूबर १९३३ को पं. कृष्णानन्द एवं श्रीमती तुलसीदेवी के घर हुआ।

आपकी दसवीं कक्षा तक की शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई । उन्हीं दिनों

आर्य-समाज अल्मोड़ा के सम्पर्क में आने पर सत्यार्थ - प्रकाश के अध्ययन और चिन्तन से वेद-वेदांगों के पढ़ने की तीव्र इच्छा जागृत हुई। अतः उन दिनों आर्य समाज अल्मोड़ा के उपदेशक आचार्य पं. वीरेन्द्र शास्त्री जी से व्याकरणाचार्य तथा दर्शनाचार्य तक की शिक्षा प्राप्त की।

आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. तथा गढ़वाल विश्व-विद्यालय से डी.फिल्. एवं डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की। आर्य समाज से आपका सम्बन्ध १९५० से है।

विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन करते हुए आप कुमाऊं विश्वविद्यालय अल्मोड़ा से स्रंकृत विभाग के अध्यक्षपद से १९९५ में सेवा निवृत्त हुए। इस काल में लेखन और व्याख्यानों द्वारा आर्य - समाज का प्रचार - कार्य भी करते रहे।

आपकी प्रमुख रचनाएं हैं - (१)-लघुकाशिका भाग १, २ (२)-सिद्धान्तशतकम् (दार्शनिक), (३)-भगवद्भक्ति, (४)-वेद में इन्द्र (शोध - प्रबन्ध), (५)-बलिप्रथा निवारण, (६)-मंदार मंजरी इत्यादि।

१९९८ से आप आर्ष गुरुकुल की स्थापना करके आचार्य पद पर कार्यरत हैं। विदेशों में भी प्रचार किया है।

पता : स्वस्त्ययन, तल्ला थपलिया, अल्मोड़ा - २६३ ६०१ (उत्तरांचल)

दूरभाष : (०५९६२) - ३०६९३

आचार्य सुभाषचन्द्र शास्त्री

आपका जन्म १९५३ ई. में महाराष्ट्र में बीड जिले के भारज (अम्बाजोगाई) ग्राम में हुआ।

आपने बी.काम., एम.ए., शास्त्री, दर्शनाचार्य, सिद्धान्तशिरोमणि, आयुर्वेदरत्न, योग-आयुर्वेद पदविका तक शिक्षा प्राप्त की। स्वामी सर्वानन्द जी आपके विशेष प्रेरक गुरु हैं।

आपने आर्य - प्रतिनिधि-सभा पंजाब, जालन्धर के अधीन ५ वर्ष तक महोपदेशक के रूप में कार्य किया।

जून १९९४ में गुरुकुल रामलिंग येडसी, उस्मानाबाद (महा.) की स्थापना करके उसके प्रधानाचार्य एवं संचालक हैं।

कभी आर्य- पत्रिकाओं में लेख लिखते हैं।

गुरुकुल में अध्यापन के साथ-साथ आयुर्वैदिक ओषधियों के माध्यम से रुग्ण-सेवा करते हैं।

बाहर वेद-प्रचार, वेदपारायण यज्ञ, व्याख्यान आदि तथा यज्ञीय कर्म के प्रति समाज को प्रेरित करते हैं।

संस्कृत के सम्भाषण-शिविरों एवं आर्य-वीर-दल के शिविरों का आयोजन कर, आदर्श समाज के निर्माण का प्रयत्न करते हैं।

आपके प्रचार के कार्यक्षेत्र-महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश आदि हैं।

आपके जीवन का लक्ष्य आर्ष-विद्या का प्रचार -प्रसार ; देशप्रेमी, परिश्रमी, स्वावलम्बी, विद्वान्, सदाचारी, वेदप्रचारक व आदर्श नागरिकों का निर्माण करना है।

पता :- गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय रामलिंग, येडसी,
जि. उस्मानाबाद - ४१३४०५ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : - (०२४७२) - ३७५१४

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री

आचार्य चन्द्रदेव जी का जन्म ८ मई सन् १९५३ को श्री रोशनलाल आर्य एवं श्रीमती लालकौर आर्या के घर ऊँचा गाँव, जिला - मथुरा उ.प्र. में हुआ।

आपकी शिक्षा -दीक्षा आर्य गुरुकुल गंघीरी में हुई। शिक्षणकाल में अध्ययन में पूर्ण कुशल रहने के साथ-साथ आपने वर्ष १९६७ - ६८ में गोरक्षा आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आपने अपने पैतृक ग्राम में आर्य-विद्या-परिषद् की स्थापना कर नवयुवकों को संस्कारित किया। आर्य गुरुकुल गंघीरी में अध्यापन कार्य को कुशलरूपेण करते रहे।

आपने अपना कार्यक्षेत्र कृष्णपुर में प्रारम्भ किया। २८ मई सन् ११९८३ को पूर्व स्थापित गुरुकुल का पुनरुद्धार कर नया नाम महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर प्रदान करके सफल सञ्चालन से वृद्धि की ओर अग्रसर हैं। भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक - सिद्धान्तों को सुन्दर, सरल, ग्राहीशैली में प्रस्तुत कर जनता को मन्त्रमुग्ध कर देने की आप में प्रशंसनीय क्षमता हैं। आपके स्नातक

ग्राम, नगर, महानगरों में उपदेशक भजनोपदेशक तथा पुरोहित के रूप में समाज सेवारत हैं।

महाराष्ट्र - आर्य - प्रतिनिधि सभा द्वारा पूना में पूना-प्रवचन के १२५ वें स्मृति- समारोह के अवसर पर स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। आर्य - समाज बलरामपुर गोण्डा उ.प्र. के शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रशस्ति - पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

पता : - महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर, पो. मंभना,
जि. फर्रुखाबाद - २०७५०४ (उ.प्र.) दूरभाष : - (०५६९०) - ७२२१५

डॉ. हरिवीरसिंह आचार्य (पं. बुद्धदेव)

आपका जन्म ६ मार्च १९५४ को उ.प्र. में बदायुँ जिले के जरीफनगर ग्राम में श्री गिरवहसिंह एवं श्रीमती रामश्री देवी के घर हुआ।

आपकी शिक्षा ग्राम की प्राथमिक पाठशाला में प्रारंभ हुई। बी.एस-सी. के मध्य में सन् १९७४ में राजकीय पोलीटेक्निक मुरादाबाद में अभियान्त्रिकी प्रशिक्षण प्राप्त किया। ३-४ वर्ष वैदिक धर्म की पुस्तकों का स्वाध्याय किया। उसके उपरान्त २४ अगस्त सन् १९७९ में श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविध्यालय में आपने कुछ वर्ष संस्कृत का अध्ययन किया। सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय से १९८८ में आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९९५ में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

श्री सर्वदानन्द सं.म.वि. साधुआश्रम में १९९२ से आप निष्ठा व ईमानदारी के साथ प्राचार्य पद पर कार्य कर रहे हैं।

आपकी अभिरुचि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में है। उसके लिये आपका शेष समय यज्ञ, महायज्ञों के कराने एवं यत्र -तत्र उपदेश, प्रवचन देने में ही व्यतीत होता है। नैष्ठिक जीवन यापन करते हुए वैदिक धर्म का प्रचार- प्रसार करना योगाभ्यास करना तथा अनुपलब्ध ग्रन्थों का लेखन कार्य आपका संकल्प है।

पता : - श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम,
अलीगढ़- २०२१२५ (उ.प्र.), दूरभाष : - (०५७१) - ४८०४१४

आचार्य रवीन्द्र

आपका जन्म आन्ध्र - प्रदेश में श्री जनार्दन जी एवं श्रीमती बाल सरस्वती जी के घर हुआ।

एम.टेक. तक अध्ययन पूरा करने के साथ-साथ सत्यार्थ-प्रकाश एवं उपनिषदों आदि का अध्ययन करके वैदिक वाङ्मय का गम्भीर अध्ययन करने के उद्देश्य से घर त्यागकर दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ गये। वहाँ मीमांसा को छोड़कर शेष पांच दर्शनों का अध्ययन किया, साथ ही ब्र. सुमेरुप्रसाद जी से महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण का अध्ययन किया।

आचार्य वेदव्रत मीमांसक जी से निरुक्त शास्त्र एवं मैसूर में आचार्य वासुदेव परांजपे जी से कल्प एवं पूर्व मीमांसा का परिचयात्मक अध्ययन किया। आजकल ऋग्वेद का सस्वर स्मरण कर रहे हैं।

पृथिवी पर वैदिक राज्य कैसे हो, इस समस्या के समाधान के रूप में निश्चय किया कि- सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास के अनुसार पठन-पाठन-विधि की व्यवस्था हो।

तदर्थ वेद -वेदाङ्गों के प्रौढ़ विद्वान् तैयार करने, वेदोक्त ज्ञान-कर्म-उपासना का अनुष्ठान सिखाने, वैदिक-संस्कृति का व्यापक प्रसार करने आदि के उद्देश्य से आपने पाणिनि धाम (गुरुकुल) का आचार्य-पद सम्भाला है। इस गुरुकुल में ८-१२ वर्ष के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं, जिनके भोजन, वस्त्र, पुस्तक, चिकित्सा आदि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से ही होती है। अध्ययन काल में घर से सम्पर्क नहीं होता। कोई राजकीय परीक्षा नहीं दिलाई जाती।

पता :- पाणिनिधाम; ग्राम, पो. तिलोरा (पुष्कर क्षेत्र),

जि. अजमेर - ३०५०२२ (राज.), दूरभाष : (०१४५)-७७३१७१

आचार्य सत्यजित्

३१ जनवरी १९६५ को ब्यावर जि.अजमेर (राज.) में श्री रामकृष्ण साधक एवं श्रीमती विमलादेवी के एक धार्मिक परिवार में जन्म हुआ ।

१२ वीं तक की शिक्षा के पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय से आयुर्वेदाचार्य (B.A.M.S.), जामनगर (गुज.) में एम.डी. (आयुर्वेद), दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड़ से दर्शनाचार्य किया । गुरुकुल खानपुर में आचार्य प्रद्युम्न जी एवं ऋषि उद्यान अजमेर में आचार्य रवीन्द्र जी से व्याकरण का तथा प्रो. धर्मवीर जी से ऋषि उद्यान में निरुक्त का आंशिक अध्ययन किया । विभिन्न स्थानों पर क्रियात्मक योग का प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

एक वर्ष तक चित्रकूट (म.प्र.) में आयुर्वैदिक प्रवक्ता रहे । वर्तमान में ऋषि उद्यान में व्याकरण (प्रथमावृत्ति) अध्यापन तथा यहाँ लगने वाले योगशिविरों का संचालन एवं शिक्षण करते हैं । कभी-कभी प्रवचन करते एवं पत्रिकाओं में कविता, लेख आदि लिखते हैं ।

आपका उद्देश्य है आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए वैदिक धर्म का प्रचार तथा स्वयं एवं समाज को श्रेष्ठ बनाना ।

पता :- ऋषि - उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.)
दूरभाष : (०१४५) - २६३२५७२

ब्र. - सत्येन्द्रार्य

आपका जन्म ७ जुलाई १९५७ ई. को बीसलपुर, जि. पीलीभीत (उ.प्र.) में हुआ ।

आपने हिन्दी प्रभाकर (दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक), दर्शनाचार्य (दर्शन-योग महविद्यालय, रोजड़, गुजरात), व्याकरणाचार्य (गुरुकुल खानपुर, हरयाणा तथा ऋषि उद्यान से) निरुक्ताचार्य (प्रो. धर्मवीर जी से ऋषि उद्यान अजमेर में) किया ।

आपने कुछ काल गुरुकुल आर्यनगर, हिसार (हरयाणा) एवं सरस्वती विद्यामन्दिर वैरासिया (म.प्र.) में अध्यापन किया ।

आजकल आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान में व्याकरण, दर्शन आदि का अध्यापन, योग- शिविरों में दर्शन आदि का शिक्षण, कभी-कभी प्रवचन करना, पत्रिकाओं में आध्यात्मिक कविता एवं लेख लिखना आदि करते हैं ।

आपका उद्देश्य आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए ऋषियों की परम्परा को आगे बढ़ाना ।

पता : - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.)
दूरभाष : - (०१४५) - २६२१८९१

आचार्य राजकिशोर शास्त्री

आपने एम.ए. (दर्शन, संस्कृत), शास्त्री, आचार्य, सिद्धान्तभूषण, सिद्धान्तशिरोमणि, धर्माधिकारी, पी-एच.डी. (ज्ञान-मीमांसा विषय पर) की उपाधियाँ प्राप्त कीं ।

आप उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं । सन् १९८८ से वैदिक मिशन के रूप में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार - प्रसार में संलग्न हैं । आपने ब्रह्मचर्य-जीवन बिताने का निश्चय किया हुआ है । प्रभावकारी व्याख्यान एवं पौरोहित्य में कुशल हैं ।

पता : - श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय (निकट-शादीपुर)
यमुनानगर- १३५००१ (हरयाणा), दूरभाष : - (०१७१) - ३९१८३

आचार्य जगद्देव 'नैष्ठिक'

आपका जन्म १/४/५६ को म.प्र. में कटनी जिले के बरहटा (छोटा) ग्राम में श्री विजय सिहं एवं श्रीमती जनकरानी के सामान्य कृषक परिवार में हुआ ।

आपने बी. ए. तक आधुनिक शिक्षा के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से प्रेरणा पाकर १३/५/१९७६ को आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में अध्ययन प्रारम्भ किया । गुरुकुल कालवा एवं बहालगढ़ में महाभाष्य, निरुक्त आदि का अध्ययन किया । सन् १९८१ में आचार्य बलदेव जी से 'नैष्ठिक' दीक्षा ली । आर्य वन रोजड़ से दर्शनाचार्य एवं योगविशारद की उपाधि प्राप्त की ।

आप १/८/१९८९ से आर्ष - गुरुकुल नर्मदापुरम्, होशंगाबाद के प्राचार्य हैं।

१४ अक्टूबर २००१ से आर्य प्र. सभा म.प्र., विदर्भ एवं छत्तीसगढ़ के प्रधान पद पर कार्यरत हैं। साथ ही सार्वदेशिक आर्यवीरदल, नई दिल्ली के उपप्रधान संचालक; सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री एवं विश्वकल्याण धर्मार्थ न्यास दिल्ली के न्यासी हैं।

वैदिक प्रचारार्थ आपने चार आर्य-समाजों की स्थापना एवं आर्यवीरदल की चालीस शाखाओं का गठन करवाया। अनेक योगशिविर एवं आर्यवीर - प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये हैं। देश के १६ प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। नैपाल मौरीशस आदि में भी प्रचार किया।

आपकी वैदिक सिद्धान्तों एवं क्रियात्मक - योग के गूढ रहस्यों को जानने - जनाने की विशेष रुचि है।

आपके अनेक शिष्य भी प्रचार में संलग्न हैं।

पता : आर्ष - गुरुकुल, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद - ४६९००१ (म.प्र.)
दूरभाष : (०७७४) - २७५७८९

आचार्य विद्यादेव

आपका जन्म उत्तर - प्रदेश के इटावा जिले में ३० मार्च १९५३ को श्री गयाप्रसाद के कृषक परिवार में हुआ।

कॉलेज की शिक्षा के पश्चात् मेकेनिकल सुपरवाइजर के पद पर कार्य करते हुए दो आर्य-युवकों से प्रेरणा पाकर १९७८ में गुरुकुल एटा में प्रवेश लिया। यहाँ संस्कृत व्याकरण, उपनिषद्, दर्शन आदि का अध्ययन तथा चार वर्ष तक व्याकरण आदि का अध्यापन किया।

सन् १९८८ से छह वर्ष गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में संस्कृत - अध्यापन तथा वेदप्रचार किया। सन् १९९४ से महर्षि दयानन्द स्मारक, टंकारा (गुज.) में अध्यापन एवं वैदिक प्रचार कर रहे हैं।

आप सरल, प्रसन्न एवं लगनशील समर्पित व्यक्ति हैं। आपके अनेक शिष्य भी संस्कृत- अध्यापन, वैदिक - प्रचार एवं पौरोहित्य आदि कार्यों में संलग्न हैं।

पता : महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा,
जि. राजकोट - ३६३६५० (गुजरात)
दूरभाष : (०२८२२) ८७७५६

आचार्य नागेन्द्र कुमार

आपका जन्म 1 सितम्बर १९६४ को बिहार में मोतीहारी के बाराबलुआ ग्राम में श्री डा. रामपदारथ मिश्र के घर हुआ।

आपकी शिक्षा गुरुकुल अयोध्या में ही हुई, जहाँ से आपने व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य आदि की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

इस समय आप गुरुकुल अयोध्या के प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। अध्ययन - अध्यापन के अतिरिक्त आप आर्य - समाज के प्रचार, संस्कृत - प्रचार, वैदिक कर्मकाण्ड आदि भी पूर्ण दक्षता और श्रद्धा से करते हैं।

आप स्वाभिमानी एवं प्रसन्नचित्त व्यक्ति हैं।

पता : गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या
जि. फैजाबाद - २२४१२३ (उ.प्र.)
दूरभाष : (०५२७८) - ३३३८० (आवास), ४०२२९ (कार्या.)

३
उपदेशक / शिक्षक

तत्त्वज्ञानी उपदेशक एवं जिज्ञासु श्रोता हों, तभी सत्यज्ञान का प्रचार होता है ; अन्यथा अन्ध-परम्पराएं फैल जाती हैं ।

आचार्या सूर्या देवी

आपका जन्म अक्टूबर १९५८ को उ.प्र. में एटा जिले के प्रह्लादपुर ग्राम में श्री लाघनसिंह आर्य एवं श्रीमती त्रिवेणी देवी के सम्पन्न परिवार में हुआ।

घर पर आरम्भिक शिक्षा के पश्चात् १९६९ में पाणिनि कन्या - गुरुकुल वाराणसी में प्रवेश लिया। शास्त्री एवं आचार्य (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से)। स्वामी नारायण मुनि चतुर्वेदी से 'व्याकरणसूर्या' की उपाधि प्राप्त की।

आपने वेद - वेदांगों की रक्षा एवं प्रचार - प्रसार के लिए आजीवन - ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर स्वयं को वैदिक - विद्या की रक्षा में लगा दिया। आप महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण, निरुक्त आदि शास्त्रों के अध्यायपन के साथ-साथ छात्राओं में ईश्वरभक्ति, दयानन्द-भक्ति, वेदनिष्ठा, राष्ट्रभक्ति, गुरुकुलीय - शिक्षा की महत्ता के विचार कूट - कूटकर भर देती हैं। आपका सौम्य, गम्भीर, प्रसन्न व्यक्तित्व प्रभावकारी होता है।

सभा - सम्मेलनों, वार्षिकोत्सवों में आपके विद्वत्तापूर्णव्याख्यानों की लोग प्रशंसा करते हैं। अवैदिक - सिद्धान्तों के तर्कपूर्ण खण्डन एवं गूढ वैदिक - सिद्धान्तों के रोचक ढंग से प्रतिपादन में आप सदैव तत्पर रहती हैं। इस प्रकार के लेख आर्य पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आपकी त्रिपदी गौ पुस्तिका प्रकाशित हो चुकी है। अभी पातञ्जल महाभाष्य के हिन्दी अनुवाद मे संलग्न हैं।

यद्यपि आपके पिता जी ने आपके लिए स्वतन्त्र गुरुकुल बनाकर देने की व्यवस्था करदी थी, परन्तु आपने आचार्या जी के इस आदेश पर कि नया गुरुकुल नही बनाना है, जो यह बना हुआ है, इसी को अच्छी तरह चलाना है, आपने स्वतन्त्र गुरुकुल का विचार त्यागकर, इसी गुरुकुल को अपना समझकर तन-मन-धन सौंप दिया। इस प्रकार आपने आरुणि से बढ़कर गुरु-भक्ति का परिचय दिया।

पता पाणिनि कन्या - महाविद्यालय, पो. महमूरगंज, तुलसीपुर, वाराणसी - २२१०१० (उ.प्र), दूरभाष - (०५४२) - ३६०३४०

आचार्या नन्दिता शास्त्री

आपका जन्म ३ मई सन् १९६१ को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर में श्री कैलाशचन्द श्रीवास्तव एवं श्रीमती कुन्तीदेवी (आचार्या डॉ. प्रज्ञादेवी जी की बहिन) के घर हुआ।

अक्षराभ्यास एवं प्राथमिक - शिक्षा घर पर हुई। ८ वर्ष की अवस्था में पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणासी में प्रवेश लेकर महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण, निरुक्त, दर्शन आदि शास्त्रों का गम्भीरता से अध्ययन किया। सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणासी से शास्त्री एवं व्याकरणाचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। काशी विद्यापीठ से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा में सर्वप्रथम रहीं। संगीत प्रभाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की।

१९८३ में दीक्षान्त समारोह के अवसर पर राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त अविद्यान्धकार को मिटाने के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। तब से आप वैदिक प्रचार में संलग्न हैं। आप गुरुकुल में महाभाष्य - पर्यन्त व्याकरणादि के अध्यापन के साथ - साथ विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न समाजों में, विभिन्न सम्मेलनों में वैदिक - सिद्धान्तों का प्रचार भी कर रही हैं। लोग आपकी विद्वत्तापूर्ण ओजस्वी वक्तृता की विशेष प्रशंसा करते हैं।

गूढ वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन एवं अवैदिक सिद्धान्तों के तर्कपूर्ण खण्डन में आपने अनेक लेख लिखे हैं। आपने सैद्धान्तिक एवं वेदमन्त्रों से युक्त रोचक- इक स्वर्ग का नजारा, मैं बहुत खुश हूँ, कन्याओं का उपनयन, को राष्ट्रमुद्धरिष्यति इत्यादि नाटिकाएं लिखकर उनका मंचन भी करवाया है।

संगीत के माध्यम से भी आप वैदिक सिद्धान्तों एवं भक्ति का प्रचार करती हैं। आपने भजनाञ्जलि एवं पाणिनि नन्दनम् कैसेट भी तैयार किये हैं। स्वभाव से भी आप शान्त, गम्भीर प्रसन्न एवं उदार हैं।

पता :- पाणिनि कन्या महाविद्यालय, पो - महमूरगंज, तुलसीपुर,

वाराणसी - २२१०१० (उ.प्र.)

दूरभाष - (०५४२) ३६०३४०

डॉ. सत्यव्रत राजेश

आपका जन्म मार्गशीर्ष कृ. पंचमी सं. १९८१ (सन् १९२४) को उ.प्र. में सहारनपुर जिले के आर्यनगर (कुरडी) ग्राम में स्व. पं. किशनलाल जी एवं स्व. श्रीमती मुकुन्दी देवी जी के घर हुआ।

आपने सिद्धान्त - शिरोमणि (दयानन्द उपदेशक विद्यालय, यमुनागर) विद्यावाचस्पति (दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार), शास्त्री, प्रभाकर (पंजाब - विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़), वेद शिरोमणि (गुरुकुल वृन्दावन, उ.प्र.), एम. ए. (आगरा विश्वविद्यालय), पी-एच. डी. (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), डी.ए-लिट् (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) सिद्धान्तालंकार (धार्मिक - परीक्षा) की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

आप दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय में शिक्षक एवं अधिष्ठाता रहे। गुरुकुल घटकेसर (आन्ध्र) में प्राचार्य और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तरांचल) में रीडर एवं वेदविभाग के निदेशक रहे।

वैदिक प्रचार में आपके व्याख्यान प्रेरक, प्रभावकारी एवं प्रामणिक होते हैं। आप भारत के उत्तर-प्रदेश, हरयाणा, पंजाब, हिमाचल, जम्मू - कश्मीर, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, आन्ध्र-प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य-प्रदेश आदि प्रान्तों के अतिरिक्त नेपाल, हालैण्ड, जर्मनी, लग्जमवर्ग, फ्रांस, बेल्जियम आदि देशों में भी वैदिक प्रचार कर चुके हैं।

प्रचार के अतिरिक्त आपने वृक्षों में जीव और हिंसा, यम-यमी सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या, गुरु और आर्यसमाज, पारस्कर-गृह्यसूत्र-भाष्य, वैदिक ईश्वरवाद, महर्षि दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य में समाज का स्वरूप आदि ग्रन्थ लिखे हैं।

पता - ९९८, दयानन्द - नगरी, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तरांचल) - २४९४०७

दूरभाष - (०१३३) - ४५४२३९, ४५२४३५

आचार्य आर्यनरेश

आप का जन्म हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में हुआ ।

इञ्जीनियरिंग के पश्चात् महर्षि दयानन्द की प्रेरक जीवनी एवं सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से आपके विचारों में क्रान्ति आयी । राजकीय सेवा से त्यागपत्र देकर १९७२ में गुरुकुल कालवा में प्रवेश लेकर आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक से व्याकरण, गुरुकुल सिंहपुरा में स्वामी सत्यपति जी से दर्शन, ज्वालापुर हरिद्वार में स्वामी ब्रह्ममुनि जी आदि से निरुक्त, छन्दःशास्त्र, उपनिषद् आदि वैदिक ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया ।

आप में वैदिक प्रचार का बहुत उत्साह है । आप लगभग २५ वर्षों से भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में भ्रमण कर वैदिक - धर्म के प्रचार में संलग्न हैं । आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर भी अनेक बार वेद एवं राष्ट्र - सम्बन्धी कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं । आप ग्रामों, गुरुद्वारों, मन्दिर - मदरसों में भी प्रचार करते हैं ।

आपकी प्रेरणा से सैकड़ों युवकों एवं परिवारों ने चाय, मांस, अण्डा, शराब, झूठे व्रत आदि त्यागकर व्यायाम, यज्ञ, सन्ध्या एवं आर्य - समाज के सिद्धान्तों को अपनाया है । गुरुकुलों एवं स्कूलों के बहुत से निर्धन विद्यार्थियों का आपने आर्थिक सहयोग भी करवाया है ।

प्रचार के साथ-साथ आपने ५० से अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं । जैसे - योगपथ, यज्ञविज्ञान परिचय, वेदविज्ञान परिचय, चमत्कार, गुप्त इतिहास, अज्ञान की आग, बंदा वैरागी, गोवा का खूनी इतिहास, बूंद बूंद सागर, आरम्भिक वैदिक ज्ञान, वैदिक सीमा - सुरक्षा - विज्ञान, कबर पूजा के लाभ, नमस्ते जी, ऋषि की यौगिक सिद्धियां, भूकम्प, तूफान और इंसान इत्यादि ।

वैदिक - प्रचार के स्थायी केन्द्र के रूप में आपने हिमाचल प्रदेश में उद्गीथ साधना स्थली की स्थापना की है ।

पता - उद्गीथ साधना स्थली ओम्वन, महर्षि दयानन्द मार्ग,

ग्राम - दोहर (राजगढ़) जि. सिरमौर - १७३१०१ (हिमाचल)

दूरभाष - (०१७९९)-२१०९१, सेल - ०९८१०२३९०९८,

डॉ. देवव्रत आचार्य

आपका जन्म १३/२/४३ को हरयाणा में महाशय उमराव सिंह के घर हुआ।

आपने मैट्रिक - (पंजाब विश्वविद्यालय), व्याकरणाचार्य - (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक), दर्शनाचार्य - (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक), पी-एच.डी. - (राष्ट्रीय संस्कृत-संस्थान, दिल्ली), व्यायाम-पारंगत, व्यायाम - विशारद (हनुमान - व्यायाम - मण्डल, अमरावती), डी.वाइ.ऐजू. - (कैवल्यधाम, लोनावाला), पञ्जीकृत वैद्य, वेदवागीश की उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

आप गत ३६ वर्षों से नवयुवकों को व्यायाम शिविरों, योगशिविरों के माध्यम से विविध भारतीय व्यायाम, योग और आत्मरक्षा के लिए अस्त्र - शस्त्र तथा नियुद्धम् (जूडो-कराटे) का प्रशिक्षण दे रहे हैं। आपके द्वारा शिक्षित हजारों युवक देश-विदेश में इस विद्या का प्रचार - प्रसार कर रहे हैं। सामान्य जनता में भी आप प्रामाणिक प्रवचन करते हैं।

आप १९८१ से १९९० तक सार्वदेशिक आर्य-वीर-दल के उपप्रधान संचालक रहे। अब सन् १८९१ से सार्वदेशिक आर्य-वीर-दल के प्रधानसंचालक हैं। आपने बहुत सी पुस्तकें भी लिखी हैं। जैसे -- आसन-प्राणायाम वैज्ञानिक विवेचन एवं चिकित्सा : योगासन (विद्यार्थियों के लिए), योगशिक्षा (४भाग, कक्षा ७ से १० तक के लिए), सन्तुलित - भोजन, प्राथमिक चिकित्सा, धनुर्वेद (शोधप्रबन्ध), नियुद्धम्, आर्य-वीर दल का बौद्धिक पाठ्यक्रम आदि। आप 'आदर्श आर्यवीर' पत्रिका के प्रधान सम्पादक भी हैं। आपसे आर्य युवकों को बहुत आशाएं हैं।

पता - ११९, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली - ११००४९

दूरभाष - (०११) - ६५६१८७३

श्री जगवीर सिंह

आपका जन्म १० दिसम्बर १९५१ को हरयाणा में रोहतक जिले के खरकड़ा ग्राम में महाशय अमर सिंह जी के घर हुआ।

आपने एम.ए., एल.एल.बी., आनर्स हिन्दी, फ्रैंच भाषा सर्टिफिकेट कोर्स, भाषाविज्ञान में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा आदि उपाधियां प्राप्त कीं।

पिता जी के विचारों एवं स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा आर्यसमाज के वातावरण से ओतप्रोत परिवार में जन्म होने से तथा बचपन से ही आर्यसमाज के उत्सवों एवं सम्मेलनों में भाग लेने से आर्यसमाज के प्रति विशेष आकर्षण होनेके कारण शिक्षा के पश्चात् कोई नौकरी आदि न करके वैदिक - धर्म के प्रचार - प्रसार को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया।

आर्यसमाज में सेवा के बहुत से विभाग हैं। उनमें से आपने अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार मुख्य लक्ष्य बनाया है -- युवा पीढ़ी को देशभक्ति, चरित्र एवं आर्यसमाज की विचारधारा से ओत - प्रोत करना। आर्यसमाज केउत्सवों, सम्मेलनों एवं महासम्मेलनों में देश के विभिन्न प्रदेशों में एक प्रखर वक्ता के रूप में आर्यों, विशेषकर युवाओं में नई स्फूर्ति एवं उत्साह पैदा करना।

आपकी गिनती आर्य समाज के ओजस्वी वक्ता, कुशल संगठनकर्त्ता, अनुभवी संयोजक, एवं गम्भीर चिन्तक के रूप में की जाती है। आप एक प्रभावशाली वक्ता ही नहीं, अपितु अच्छे लेखक एवं पत्रकार भी हैं। वर्तमान में आप सुन्दर एवं आकर्षक पत्रिका राजधर्म के प्रधान सम्पादक हैं। प्रचार कार्य में न केवल भारत अपितु कीनिया, दुबई, जर्मनी, हालैण्ड, बैल्जियम, फ्रांस, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में भी आपने वैदिक - धर्म का ध्वज बुलन्द किया है।

इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए 'आर्य युवक परिषद्' का अनेक प्रबुद्ध महानुभावों एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से गठन हुआ है। इस 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' के आप १९७६ से अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। इस परिषद् की भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त अमेरिका, हालैण्ड, जर्मनी, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया आदि देशों में शाखाएं कार्य कर रही हैं।

आपने कुरीतियों के विरोध में अनेकआन्दोलन चलाये हैं। सन् १९७४ में आपने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मांसाहार विरोधी आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया।

जून १९८० में दयानन्द कालेज हिसार के दस दिवसीय युवकशिविर के संयोजन में १४०० युवकों ने भाग लिया।

'वैदिक कामधेनु गोशाला' जि. राजकोट (गुजरात) में फरवरी २००२ में लगभग पाँच हजार युवकों के ऐतिहासिक शिविर का सफल संचालन किया।

इस प्रकार अब तक लगभग एक हजार शिविरों के माध्यम से अनुमानतः दो लाख युवकों को देशभक्ति, चरित्र एवं वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा तथा आर्य-समाज से परिचय कराया।

आप 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' के प्रधान एवं 'राजधर्म' पत्रिका के प्रधान सम्पादक के अतिरिक्त अनेक अन्य संस्थाओं कें सदस्य, कोषाध्यक्ष अथवा मन्त्री हैं।

आगे आप चाहते हैं, कि आर्यसमाज के मिशनरी (समर्पित) प्रचारक तैयार करने के लिए वैदिक मिशनरी प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जाए, जिसमें अपना पूरा जीवन समाज - सेवा में लगाने वाले युवकों का प्रशिक्षण एवं अध्ययन कराया जा सके।

आर्य जगत् को आप पर बहुत विश्वास तथा आशाएं हैं।

पता - आर्य - समाज, शक्तिनगर, दिल्ली - ११०००७
दूरभाष - (०११) - ७४५१३१०
कार्यालय : - ७ जन्तर मन्तर मार्ग, नई दिल्ली - ११०००१
दूरभाष - (०११) - ३३६६७६५ / ३३६७९४३
फैक्स - (०११) - ३३६८३५५, ईमेल : jagvirs@hotmail.com.

डॉ. कमलेशकुमार छ. शास्त्री

आपका जन्म गुजरात में महेसाणा जिले के विसनगर में ६ जून १९६२ को श्री छगनलाल एवं श्रीमती अमतीबेन के घर हुआ।

आपने व्याकरणोपाध्याय, व्याकरणाचार्य, (आर्ष गुरुकुल एटा, उ.प्र.), शास्त्री (श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ, झज्जर), एम.ए. (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), शास्त्री (सम्पूर्णानन्द सं. वि. विद्यालय, वाराणसी),

पी-एच.डी. (गुजरात वि.विद्यालय, अहमदाबाद), पी.जी. डिप्लोमा इन प्राकृत (गुज.वि. विद्यालय, अहमदाबाद) की उपाधियाँ प्राप्त कीं ।

उपर्युक्त विषयों का आपने श्री - आचार्य ज्योतिः स्वरूप जी, आचार्य विश्वदेव जी, आचार्य प्रद्युम्न जी, आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी, पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी इत्यादि बहुत से विद्वानों से अध्ययन किया ।

आप गुजरात वि. विद्यालय अहमदाबाद में संस्कृत - विभाग के रीडर पद पर कार्यरत हैं। साथ ही आप गुजराती एवं हिन्दी भाषा में तर्कपूर्ण शैली में वैदिक - प्रवचन, संस्कार आदि द्वारा समग्र गुजरात में प्रचार कार्य में संलग्न हैं ।

आप आर्यसमाज, सैजपुर बोघा से प्रकाशित होने वाली मासिक - पत्रिका स्वस्तिपन्था (गुजराती) का १९८७ से अद्यावधि सम्पादन कर रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश (गुजराती), शुभविवाह - संस्कार, अथर्ववेद शतक (गुजराती) का लेखन एवं प्रकाशन किया है । अनेक हिन्दी पुस्तकों का गुजराती अनुवाद किया है ।

आपने चांदलोडिया, थलतेज, लुणसावाडा के आर्य समाजों को पुनर्जीवित किया । सन् १९९५ से वैदिक छात्रालय गांधीनगर एवं १८९९ से दयानन्द विद्यार्थी आश्रम वाडज का संचालन कर रहे हैं ।

पता - २४ - बी, वीरनगर सोसायटी, भीमजीपुरा, नवावाडज मार्ग,
अमदाबाद - ३८००१३ (गुजरात) । दूरभाष - (०७९) - ७४५ ०८७६

डॉ. सोमदेव शास्त्री

आपका जन्म मध्य प्रदेश में मन्दसौर जिले के निनोरा नामक ग्राम में ६ दिसम्बर १९५० को श्री भवानीराम शर्मा के यहाँ हुआ ।

आरम्भिक शिक्षा के पश्चात् आर्षग्रन्थों के अध्ययन की रुचि जागृत होने पर १९६४ में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ठ हुए । तत्पश्चात् प्रभात आश्रम (जिला-मेरठ), गुरुकुल देवरिया तथा पाणिनि महाविद्यालय वाराणसी में रहकर आपने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्तादि का अध्ययन किया । वाराणसी से शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं दीं । सन् १९७७ में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र.) से एम.ए. किया और १९८५ में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से पी - एच. डी. की उपाधि प्राप्त की ।

सन् १९८८ से आप पुनर्वसु आयुर्वेद महाविद्यालय मुम्बई में संस्कृत के व्याख्याता हैं।

आप के हृदय में आर्य समाज के लिए एक विशेष तड़प है। व्याख्यान एवं लेखन द्वारा आप वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार में संलग्न रहते हैं। साधारण आर्यों को सिद्धान्त - ज्ञान के लिए आप अनेक वर्ष से पत्राचार - पाठ्यक्रम चला रहे हैं। आपका वाणी तथा लेखनी पर समान अधिकार है।

आर्ष पाठविधि के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा है। आप प्रतिवर्ष अपनी ओर से, आर्ष-पाठविधि की सेवा में लगे एक विद्वान् का ११०००/- से सम्मान भी करते हैं। विद्वत्ता के साथ-साथ आप सरल, सात्त्विक एवं श्रद्धालु हैं।

आपने सरल संस्कृत - शिक्षक, स्वरसिद्धान्त, शंकर सन्देश, स्मृति - सन्देश, सत्यार्थ-सन्देश, गीता - सन्देश, उपनिषद्-सन्देश, दर्शन - सन्देश, रामायण - सन्देश, वैदिक - सन्देश, ऋग्वेदादि - सन्देश, पूना - प्रवचन - सार, श्रीराम, श्याम जी कृष्णवर्मा का जीवन आदि पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कराई हैं। 'निष्काम परिवर्तन' पत्रिका के सम्पादक हैं।

अभी आप परोपकारी - सभा अजमेर के सदस्य एवं आर्य-समाज सान्ताक्रुज मुम्बई के प्रधान हैं।

पता :- डी. ३०९, मिल्टन अपार्ट्स, आजाद रोड,
जुहू कोलिवाड़ा, मुम्बई - ४०००४९
दूरभाष - (०२२)- ६६०६९०८ (घर), २८१३७६७ (कार्यालय)।

डॉ. धर्मवीर आचार्य

आपका जन्म २० अगस्त १९४६ को महाराष्ट्र के उद्गीर नगर में श्री भीमसेन के यहाँ हुआ।

आपकी शिक्षा गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल कांगड़ी वि. विद्यालय में हुई। कांगड़ी से आपने एम.ए. तथा आयुर्वेदाचार्य की उपाधियाँ प्राप्त कीं। पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध - पीठ से आपने पी-एच.डी.की उपाधि प्राप्त की।

१९७४ से आप दयानन्द कॉलेज अजमेर में संस्कृत - विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

आपने 'सत्यार्थ प्रकाश में क्या है ?' लिखा। आपके सम्पादित ग्रन्थ हैं- आर्य समाज और शोध, महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र, ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली, वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग। आप अनेक वर्षों से परोपकारी के अवैतनिक सम्पादक भी हैं। परोपकारिणी सभा के पुस्तकाध्यक्ष हैं।

आप प्रभावशाली वक्ता हैं। भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक - सिद्धान्तों के प्रचारार्थ जाते रहते हैं। जिज्ञासु प्रौढ़ छात्रों को आप निरुक्त आदि शास्त्र भी पढ़ाते रहते हैं। आप उदार मन एवं विनोदप्रिय व्यक्ति हैं।

पता :- सम्पादक 'परोपकारी' वैदिक यन्त्रालय, आर्यसमाज - मार्ग,
अजमेर - ३०५ ००१ (राज.)
दूरभाष - (०१४५) ४६१६३० (निवास), ४६०१६४ (कार्यालय)

डॉ. दिवाकर आचार्य

आपका जन्म लगभग ६० वर्ष पूर्व उ.प्र. में एटा जिले के भगवानपुर ग्राम में पं. नेकराम के कृषक परिवार में हुआ।

आपने बी.एस-सी., व्याकरणाचार्य (गुरुकुल एटा), विद्याभास्कर (गुरुकुल ज्वालापुर), एम.ए. (संस्कृत) एवं पी-एच.डी. (गुरुकुल कांगड़ी वि. विद्यालय, हरिद्वार) की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

गुरुकुल गंघीरी (अलीगढ़) में प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल एटा में उपाचार्य एवं गुरुकुल वृन्दावन में उपकुलपति के रूप में कार्य किया। वेदविज्ञान संस्थान (महेशयोगी) नोएडा में उपाचार्य एवं शोध निदेशक रहे।

आर्य - उपप्रतिनिधि सभा एटा के प्रधान, आर्य - समाज दीवानहाल, दिल्ली के पुरोहित, तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के महोपदेशक के रूप में कार्य किया। दयानन्द - पब्लिक - स्कूल समिति (फरीदाबाद) में धर्माचार्य के रूप में आठ सौ अध्यापक-अध्यापिकाओं एवं २५ हजार छात्रों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी। पौरोहित्य कार्य द्वारा सहस्रों संस्कार कराये।

आपने छात्र - चेतना, अस्तित्व - बोध, आदि पुस्तकें भी लिखी हैं।

आपने विश्व में फिर से वैदिक - दर्शन, वैदिक - शासन, लार्ड मैकाले की शिक्षा - पद्धति के उन्मूलन आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ' वैदिक - युग - निर्माण - संघ ' की स्थापना की है ।

पता :- सम्पादक - ' बेचैन भारत ', गन्ना - मार्केट, तिबिडा रोड, मोदीनगर,
जि. गाजियाबाद - २०१ २०४ (उ.प्र.)
दूरभाष -(०१२३२) ४५९५६

आचार्य रामकिशोर शर्मा

आपका जन्म १५ अगस्त १९३५ को उ.प्र. में एटा जिले के गऊपुरा, न्यौली ग्राम में श्री पं. चुन्नीलाल शर्मा एवं श्रीमती रामश्रीदेवी के घर हुआ ।

प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने सहसवान (बदायूं), सोरों (एटा), आदि में संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की । वाराणसी से शास्त्री एवं आचार्य की उपाधियां प्राप्त कीं । प्रयाग से साहित्यरत्न किया ।

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम अलीगढ़ आदि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्राध्यापक एवं प्राचार्य रहे । सन् १९९६ में सेवानिवृत हुए ।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् उत्तर - प्रदेश, म.प्र., राजस्थान, हरयाणा, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में वैदिक प्रवक्ता एवं पुरोहित के रूप में आर्य - समाज का कार्य कर रहे हैं । सन् १९६७ में गोमाता की करुणपुकार नामक हिन्दी का खण्डकाव्य लिखा । संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में आपके लेख एवं कविताएं छपते रहते हैं ।

आप स्वभाव से विनम्र, कुशल तथा प्रसन्नचित्त व्यक्ति हैं । अनेक आर्य समाजों एवं संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है ।

पता :- सोरों , एटा (उ.प्र.) २०७४०३
दूरभाष - (०५७४४) - ३३६९८.

डॉ. ओम्प्रकाश वेदालंकार

आपका जन्म १८ दिसम्बर १९३२ को हरयाणा के अम्बाला सिटी में पं. शशिभूषण विद्यालंकार के घर हुआ।

आपने वेदालंकार, एम.ए (हिन्दी, संस्कृत), शास्त्री, एम. ओ. एल; पी-एच्.डी, शोध - निदेशक (राजस्थान विश्वविद्यालय) की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

आप राजस्थान राजकीय महाविद्यालय से सेवा - निवृत हुए हैं।

आपने लगभग ४८ वर्ष तक स्वतन्त्र रूप से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया है।

निबन्ध - मंजूषा , वैदिक देवपुरी के दर्शन, मृत्यु से अमृत की ओर, धरती का स्वर्ग,प्रभु के द्वार पर, आर्यो का परम धर्म, अपने आपको कैसे पढ़ें ? इत्यादि पुस्तकों को लिखकर प्रकाशित कराया है। आपकी सम्पादित पुस्तकें हैं - आदर्श नित्यकर्म विधि एवं पाखण्ड - खण्डिनी।

पता :- बी. २०२, वैशाली नगर, जयपुर - ३०२०२१ (राजस्थान)
दूरभाष - (०१४१) - ३५८४२३

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी

आपका जन्म १९५१ में छत्तीसगढ़ में महासमुन्द जिले के नरतोरा नामक ग्राम में श्री रामलाल आर्य एवं श्रीमती यशवन्ती के एक साधारण कृषक परिवार में हुआ।

आपने घर रहते हुए दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। स्व. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जैसे योग्य विद्वानों के संग और सत्प्रेरणा से सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि - भाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि ग्रन्थ पढ़कर विद्वान् बनने की इच्छा से अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करना प्रारम्भ किया। सन् १९६९ के फरवरी मास में घर त्याग दिया। गुरुकुल महाविद्यालय कालवा में आचार्य बलदेव जी से महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण का अध्ययन किया। ज्वालापुर में स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक जी से निरुक्त एवं स्वामी सत्यपति जी से कुछ दर्शन शास्त्र पढ़े। पुनः आर्य वन रोजड़, गुजरात में स्वामी सत्यपति जी से ही षड्दर्शनों का तथा उपनिषद् एवं वैदिक वाङ्मय का गम्भीरता से अध्ययन किया।

सन्१९७७से १९८५ तक आपने विभिन्न प्रान्तों में घूमकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। पुनः आर्यवन रोजड़ में अध्ययन के पश्चात् वैदिक - सिद्धान्तों एवं वैदिक योग के प्रचार तथा प्रशिक्षण में संलग्न हैं। आप स्वभाव से मधुर, मिलनसार एवं प्रसन्नचित्त प्रकृति के हैं। जिज्ञासुओं का कुशलता से शंका - समाधान करते हैं। दर्शन एवं ऋषिप्रणीत ग्रन्थ पढ़ाते हैं। युवकों को प्रेरित करते हैं।

आपने चतुर्वेद - मन्त्रानुक्रम सूची का कुशलता से सम्पादन किया, जो आर्ष - साहित्य - प्रचार - ट्रस्ट से प्रकाशित हुआ।

अभी आपने आर्य - समाज सूर्यनिकेतन, दिल्ली में महर्षि दयानन्द वैदिक योगाश्रम की स्थापना की है, जिसमें ब्रह्मचारी व वानप्रस्थी रहकर विद्यालाभ उठाते हैं।

पताः- महर्षि दयानन्द वैदिक योगाश्रम, आर्य - समाज सूर्यनिकेतन
(आनन्द विहार के सामने), नई दिल्ली - ११००९२,
दूरभाष - (०११) - २१६९१२४

पं. विशिकेसन शास्त्री

पं. विशिकेसन शास्त्री का जन्म उड़ीसा में पद्मपुर के निकट बरिकेल ग्राम में सन् १९३७ में श्री बलराम साहू के घर हुआ, जो पौराणिक विचारों के समर्थक थे।

प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही सम्पन्न करके १९६१ में पुरी से साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की।

पहले स्कूल में अध्यापक बने। वहीं पर आर्य-संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी के सम्पर्क में आकर आर्य-समाज की ओर झुके। सत्यार्थ-प्रकाश आदि विभिन्न वैदिक ग्रन्थों के पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सन् १९७० - ७१ में गुरुकुल आमसेना के स्वामी धर्मानन्द जी के सम्पर्क में आकर पूर्णरूप से आर्यसमाज के रंग में रंग गये। ३-४ वर्ष तक गुरुकुल पानपोस वेदव्यास में आचार्य पद पर भी कार्य किया।

विगत अनेक वर्षों तक आर्य-प्रतिनिधि - सभा उड़ीसा के मन्त्री रहे। आजकल उपप्रधान हैं। शासकीय सेवा में रहते हुए भी आपने गांव - गांव में

जाकर प्रचार एवं सेवा कार्य किया। दर्जनों पुस्तकें लिखकर और स्वयं छपाकर उत्कल आर्य साहित्य को बढ़ाया। सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का उड़िया भाषा में अनुवाद किया।

आप व्यवहार कुशल, संस्कार - विशारद, मधुरभाषी, ओजस्वी वक्ता एवं सशक्त लेखनी के धनी हैं। आपके अन्दर आर्य-समाज का प्रचार करने की धुन है। उड़ीसा की समस्त आर्य-समाजों में आपका व्यापक परिचय एवं प्रभाव है। वनवासी हिन्दुओं को कैसे आर्य बनाया जाय, यह आपका मुख्य उद्देश्य है। सदैव आर्य-समाज के प्रचार - प्रसार में लगे रहना आपका विशिष्ट गुण है। उड़ीसा आर्य-समाज की आप धरोहर हैं। आप निःशुल्क रूप से प्रचार - प्रसार में लगे हैं। श्री - स्वामी धर्मानन्द जी आपको उड़ीसा का आर्य-मुसाफिर कहते हैं।

पता :- गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, नवापारा
(उड़ीसा) - ७६६१०९, दूरभाष - (०६६७८) - २२५६१, २२४४१

वेदप्रकाश श्रोत्रिय

आपका जन्म १ जून १९५२ को उत्तर प्रदेश में बदायूँ जिले के जरीफ नगर ग्राम में श्री खुशीराम आर्य एवं श्रीमती रामश्री देवी के आर्य परिवार में हुआ।

महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार क्रम से आपकी शिक्षा पितामह श्री आशाराम जी के संरक्षण में आरम्भ हुई। बाल्यकाल में ही आपने दैनिक अग्निहोत्र एवं संध्या के मन्त्र, वर्णोच्चारण - शिक्षा, शिक्षाप्रद श्लोक, दर्शनों के सूत्र, यजुर्वेद आदि कण्ठस्थ किये। आधुनिक विद्यालयों की उपाधियाँ प्राप्त नहीं कीं। अवस्था बढ़ने पर आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री, पं. सुखदेव दर्शनवाचस्पति, स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक आदि विद्वानों से यथासम्भव व्याकरण, दर्शन, काव्य, वैदिक साहित्य आदि का अध्ययन किया।

वैदिक प्रचार में प्रसंगानुसार विषयप्रतिपादन में आप प्रवीण हैं। आपके व्याख्यान रोचक एवं प्रभावकारी होते हैं। अनेक विद्वानों ने आपको व्याख्यान - मार्तण्ड की उपाधि से अलंकृत किया है। आर्य जनता को आपसे बहुत आशाएं हैं।

पताः ऐल. - १/२०६ बी., डी.डी.ए. फ्लैट्स, कालका जी,
नई दिल्ली - ११००१९, दूरभाष - (०११) - ६०२७६२७

पं. महेन्द्रपाल आर्य

पं. महेन्द्रपाल जी (पूर्व इमाम - मौलवी महबूब अली) का जन्म १९ सितम्बर १९५१ को कोलकाता नगर के गोबरा नामक स्थान पर श्री मुजफ्फर अली के घर हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई। अजमतिया मदरसे में कुरान कण्ठस्थ की। आगे की शिक्षा २४ परगना जिले के सप्तग्राम मदरसे में तथा दिल्ली के अमीनिया इस्लामिया मदरसे में हुई।

सोलह वर्ष की अवस्था में १९६७ में विवाह कुलपरम्परा के अनुसार हुआ। उ.प्र. में मेरठ जिले के बरवाला ग्राम की बड़ी मस्जिद में इमाम के रूप में नियुक्त हुए। आपके मानवीय व्यवहार से लोग बहुत प्रसन्न होते थे।

जब आप श्री स्वामी शक्तिवेश जी (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ) के सम्पर्क में आये, तो स्वामी जी ने उर्दूभाषा में सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को दिया। इससे आपके विचारों में क्रान्ति आयी। परिणामस्वरूप ३० नवम्बर १९८३ को हजारों लोगों के सामने इस्लाम को त्यागकर सत्य सनातन वैदिक धर्म स्वीकार किया और मौलवी महबूब अली से पं. महेन्द्रपाल बने।

शुद्धीकरण के पश्चात् गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में ही संस्कृत, हिन्दी एवं वैदिक सिद्धान्तों का गम्भीरता से अध्ययन किया। बहुत से आर्य- विद्वानों से संवाद / सत्संग हुए।

वैदिक सिद्धान्तों को समझकर आपने तुलनात्मक अध्ययन को अपना विषय बनाया। सन् १९८५ से आप अखिलभारतीय स्तर पर पुराण, कुरान, बाइबिल तथा वेद के समीक्षक के रूप में सिद्धान्तों का तुलानात्मक स्वरूप प्रस्तुत करते हुए रोचक ढंग से वैदिक - सिद्धान्तों की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं। लोग आपकी समीक्षा को उत्सुकता से सुनते हैं। आपने अपने बच्चों को भी गुरुकुलों में पढ़ाया है।

पता : आर्य- समाज, आर्यपुरा, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली - ११० ००७,

दूरभाष -(०११) - ३९८७५९४

आचार्य भगवान् देव चैतन्य

आपका जन्म १५ जुलाई १९४८ को हिमाचल प्रदेश में मण्डी जिले के रिवालसर ग्राम में पं. रामशरण एवं श्रीमती धनवन्ती जी के यहाँ हुआ ।

आपने एम.ए., साहित्यालंकार, विद्यावाचस्पति की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

११ नवम्बर १९६९ को आपका विवाह श्रीमती सत्यप्रिया से हुआ । आपके तीनों पुत्र एवं बहुएं आर्य-मतानुयायी हैं । आप केन्द्रीय कार्यालय में हिन्दी अधिकारी के रुप में कार्यरत हैं ।

आर्य -समाज के प्रति आप की रूचि प्रारम्भ से रही । आप दीर्घ काल तक आर्य-प्रतिनिधि - सभा, हिमाचल प्रदेश के मन्त्री, उपाध्यक्ष एवं वेदप्रचार - अधिष्ठाता रहे । सार्वदेशिक आर्य-वीर दल के संरक्षक हैं । तर्क एवं माधुर्य से युक्त आपके वैदिक प्रवचन सरलता से श्रोता के हृदय में उतर जाते हैं। आप सहजता से वेद, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के पक्ष का प्रतिपादन करते हैं । आप देश के विभिन्न प्रान्तों के ग्रामों एवं नगरों में सफल प्रचार - कार्य कर चुके हैं। आपने चौदह वर्ष तक आ. प्र. सभा हिमाचलप्रदेश की मासिक पत्रिका ' आर्य-वन्दना ' का कुशल सम्पादन किया । अन्य अनेक आर्य- पत्रिकाओं में आपके लेख एवं कविताएं प्रकाशित होते रहते हैं ।

पता :- ८१ / एस-४, सुन्दर नगर, जिला - मण्डी १७४४०२ (हि.प्र.)

दूरभाष - (०१९०७) - ६३०९२

श्री विट्ठलराव आर्य

आपका जन्म कर्नाटक में गुलवर्गा जिले के गुरुमठकल गाँव में सन् १९५० में एक साधारण निर्धन परिवार में हुआ ।

स्वतन्त्रता के पश्चात् आपके ग्राम में आर्यसामज के अन्तर्गत हिन्दी - माध्यम के एक विद्यालय का आरम्भ किया गया । आपका प्राथमिक एवं माध्यमिक अध्ययन इसी विद्यालय में हुआ । इसके पश्चात् महबूबनगर (आं.प्र.) में एम. एस.सी (रसयान शास्त्र) का अध्ययन पूरा किया । इसके पश्चात् एल.एल. बी.का अध्ययन भी किया । कुछ मास आपने उपदेशक महाविद्यालय हिसार में अध्ययन किया । हिन्दी - विद्वान् एवं साहित्य-रत्न की परीक्षाएं भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं ।

आपका आर्यसमाज से परिचय तो आर्यसमाज की पाठशाला में अध्ययन के कारण तथा आर्यसमाज में होने वाले कार्यक्रमों के कारण हुआ। विद्यार्थी जीवन में ही अनेक शिविरों में भागलेकर अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक प्रतिभा का परिचय दिया। कॉलेज में अध्यापन से अतिरिक्त आपका अधिकांश समय आर्य - समाज के प्रचार - प्रसार में लगता है।

आर्य - समाज के संगठनात्मक कार्य एवं प्रचारार्थ आपने देश भर में भ्रमण किया। लन्दन, हालेंड, बंगलादेश आदि की यात्राएं कीं।

आर्य - प्रतिनिधि सभा के मन्त्री बनने के पश्चात् राज्य स्तर के एवं राष्ट्रिय स्तर के अनेक सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया। १९९३ से आप हिन्दी एवं तेलुगु भाषा की संयुक्त पत्रिका 'आर्य - जीवन' का सम्पादन कर रहे हैं। बाल - मजदूरी, बंधुआ - मजदूरी एवं शराब के विरोध में आपने बहुत से सम्मेलन, व्याख्यान, पदयात्राओं आदि का आयोजन किया। आप सभी को अनिवार्य शिक्षा, सामाजिक संगठन एवं अनुशासनात्मक विधान पर बहुत बल देते हैं। इस प्रकार गत ३५ वर्ष से आप आर्य समाज की सेवा में सक्रिय हैं। आप अनेक विद्यालयों के संचालक हैं।

पताः- आर्य-प्रतिनिधि-सभा (आं. प्र.), महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार
हैदराबाद-५०००९५ (आं.प्र.), दूरभाष-(०४०) २४७५३८२७, २६५७८७०७

आचार्य अमृतलाल शर्मा

आपका जन्म कार्तिक कृ.१ सं. १९९९ तदनुसार २५ अक्टू. १९४२ को मध्यप्रदेश में निमाड़ जिले के बुधवास ग्राम में श्री - नाथुराम शर्मा एवं श्रीमती छदूबाई के पौराणिक परिवार में हुआ।

आपने दसवीं कक्षा के पश्चात् मेकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लामा किया। सेना में जे.सी.ओ. की नौकरी त्यागकर पुनः दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। स्वामी सत्यपति जी से क्रियात्मक योगाभ्यास सीखा।

पहले खण्ड्वा आर्य-समाज के अधीन प्रचार किया, फिर स्वतन्त्र रूप से वेद-प्रचार करने लगे। लगभग १५ वर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में रहकर बंद पड़े गुरुकुल को आचार्य एवं व्यवस्थापक के रूप में कार्य करके सक्रिय बनाया। फिर

आचार्य जगद्देव जी नैष्ठिक को आचार्य पद सौंपकर प्रचार कार्य करने लगे ।

आप वेद प्रचार, योगशिबिर, संस्कार प्रवचन एवं लेखन के रूप में वैदिक - धर्म के प्रचार - प्रसार में संलग्न हैं ।

पताः - वैदिक साधना-केन्द्र (बड़गांव भीला), राठौर आटा चक्की, आनन्दनगर
खण्ड्वा - ४५०००१ (म.प्र.), दूरभाष - (०७३३) - २३०६५

ब्र. वीरेन्द्र आचार्य

आपका जन्म ३० सितम्बर १९५५ को हरयाणा के रोहतक नगर में श्री - सोहनलाल आर्य एवं श्रीमती जयदेवी के घर हुआ ।

राजकीय विद्यालय में ११ वीं कक्षा तक पढ़कर स्वामी सत्यपति जी की प्रेरणा से गुरुकुल कालवा में प्रवेश लेकर, आचार्य श्री बलदेव जी से व्याकरण, निरुक्त आदि का अध्ययन किया । आचार्य देवव्रत व्यायामाचार्य जी से आर्य वीर दल में विविध व्यायाम, लाठी, भाला आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा शिविर लगाने की योग्यता भी प्राप्त की । स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक से क्रियात्मक योगाभ्यास एवं षड्दर्शनों का अध्ययन करके 'दर्शन - योग महाविद्यालय' रोजड़ से दर्शनाचार्य की उपाधि प्राप्त की ।

शिक्षण के पश्चात् लगभग दो वर्ष तक अहमदाबाद (गुज.) में वैदिक - धर्म का प्रचार किया । इसके पश्चात् लगभग सात वर्ष तक कच्छ के ग्रामों, स्कूलों, कॉलेजों के विद्यार्थियों को वैदिक धर्म एवं सुसंस्कारों का शिक्षण दिया । प्रौढ़ व्यक्तियों में भी वैदिक - धर्म का प्रचार किया । आर्य वन, रोजड़ (गुज.) में अध्ययन से पूर्व आप पंजाब, हरयाणा, उत्तर-प्रदेश आदि के स्कूलों में वैदिक-धर्म का प्रचार करते थे ।

अब स्थायी रूप से कार्य करने के लिए 'मानव धर्म सेवा न्यास' की स्थापना करके उसे केन्द्र बनाकर स्कूलों, कॉलेजों में प्रचार-प्रसार करते हैं । समाजों एवं परिवारों में भी योग - प्रशिक्षण एवं वैदिक - धर्म का प्रचार करते हैं । आपने आसन - व्यायाम की छोटी सी पुस्तक भी लिखी है । आप श्रद्धालु, उत्साही एवं परिश्रमी और आर्य-समाज के लिए समर्पित व्यक्ति हैं ।

पता :- मानव-धर्म - सेवा न्यास (योगधाम एवं वैदिक गुरुकुल)
आर्यावर्त - विकास, भुजोड़ी, भुज - कच्छ - ३७००३० (गुजरात)
दूरभाष - (०२८३२) - ४०९३० पी.पी.

पं. यशःपाल आर्यबन्धु

आपका जन्म १४ सितम्बर सन् १९३१ को पाकिस्तान में स्थित पंजाब प्रान्त के झंग नामक नगर में श्री कर्मवीर साधक एवं श्रीमती रामप्यारी देवी के घर हुआ। आपके पिता निष्ठावान् आर्यसमाजी थे।

आपकी स्कूली शिक्षा मैट्रिक तक ही हो सकी, क्योंकि १९४७ में भारत-विभाजन से वह बाधित हुई। परन्तु स्वाध्याय एवं लगन के परिणामस्वरूप आपने धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों में विस्तृत ज्ञानोपार्जन कर लिया।

आप मुरादाबाद में उत्तर रेलवे के कार्यालय में मुख्य टंकक (टाइपिस्ट) के पद पर कार्य करते हुए १९८९ में सेवानिवृत्त हुए।

राजकीय सेवाकाल में ही आप वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो गये। आप गम्भीर चिन्तक एवं विचारक हैं। शंका-समाधान करने में प्रवीण हैं। आप उच्चकोटि के उपदेशक हैं। आपकी व्याख्यान शैली सरल एवं रोचक है। उत्तर भारत के सभी प्रान्तों में आपको प्रवचनों के लिए बुलाते हैं। श्रोताओं में आप मान्य एवं श्रद्धा के पात्र हो जाते हैं। आप ५० वर्षों से आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। परिचित परिवारों के दुःख - सुख में, विषम-परिस्थितियों में आप उपयोगी सहायता एवं परामर्श देते हैं। नवीन उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों का आप विशेष उत्साहवर्धन करते हैं।

आप लिखने में भी कुशल हैं। आपने लगभग ५० पुस्तकें लिखी हैं। पुस्तकों के साथ-साथ १९६५ से आपके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आप कठिन विषयों को भी सरलता से लिखते हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकें कर्मफल - प्रश्नोत्तरी, धर्म और विज्ञान, प्रार्थना-विज्ञान, सत्यार्थ - प्रकाश-दिग्दर्शन, प्रभुदर्शन, पाप-पुण्य-मीमांसा, आर्य-समाज ही क्यों ?, क्रान्तिदूत दयानन्द इत्यादि हैं।

आपको अनेक समाजों एवं संस्थाओं ने सम्मानित और पुरस्कृत किया है।

पता :- आर्य-निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद - २४४०३२ (उ.प्र.)

दूरभाष - (०५९१) - २४३१३५१

ब्र. नचिकेता शास्त्री

आपका जन्म ४ जून १९५९ को महाराष्ट्र में लातूर जिले के झरी (खुर्द) ग्राम में श्री रामचन्द्र कोटलवार एवं श्रीमती सत्यभामा कोटलवार के सम्पन्न एवं कुलीन वैश्य परिवार में हुआ।

लातूर में १२ वीं कक्षा तक अध्ययन के पश्चात् पूर्वजन्म के संस्कारों के परिणाम स्वरूप योगी बनने के लिए घर से पलायन किया। आर्ष-ग्रन्थों को पढ़ते हुए १९८७ में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से शास्त्री की उपाधि ग्रहण की। सन् १९८५ में स्वामी ओमानन्द जी से गुरुकुल झज्जर में आजन्म ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की और अपने उद्देश्यानुकूल गोविन्द के स्थान पर नया नाम नचिकेता ग्रहण किया।

आपने गुरुकुल रामलिंग (महा.), संस्कृत महाविद्यालय खन्ना (पं.), संस्कृत महाविद्यालय सरहिन्द (पं.), गुरुकुल भज्जर (हर.), दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात), तपोवनाश्रम देहरादून (उत्तरांचल) आदि स्थानों पर आचार्य सुभाष जी, स्वामी वेदानन्द वेदवागीश जी, स्वामी सत्यपति जी, स्वामी निगमानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, उपाध्याय - विवेकभूषण जी, आचार्य आनन्दप्रकाश जी आदि गुरुजनों से यथाप्रसंग व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, साहित्य आदि का अध्ययन किया।

विगत दस वर्षों से आप आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में शास्त्री तक की श्रेणी को साहित्य का अध्यापन करा रहे हैं। साथ ही स्वाध्याय एवं योगाभ्यास में तत्पर रहते हुए आप आध्यात्मिक मार्ग के जिज्ञासुओं को बड़ी कुशलता एवं सरलता से मार्ग - दर्शन करते हैं। दर्शनों का अध्यापन एवं शंका-समाधान भी करते हैं। इस प्रकार जिज्ञासु व्यक्ति आपसे सन्तोषजनक लाभ प्राप्त कर लेते हैं।

पता :- आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद, पो. नार्मल स्कूल, जि. होशंगाबाद

(म.प्र.) - ४६१००१, दूरभाष - (०७५७४) - २७५७८९

ब्र. जीवानन्द नैष्ठिक

आपका जन्म हरयाणा के घुढाणा ग्राम में हुआ।

विद्यालय में दसवीं कक्षा तक पढ़कर दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विद्यावाचस्पति एवं विद्यावारिधि की परीक्षा उत्तीर्ण कर पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री एवं वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की । स्वामी सर्वानन्द जी से आजीवन ब्रह्मचर्य की नैष्ठिक - दीक्षा ली ।

नैष्ठिक - दीक्षा के पश्चात् दो वर्ष दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्यापन करके फतेहाबाद में आर्य-समाज-मन्दिर बनवाकर एक वर्ष वहाँ वेदप्रचार किया । दो वर्ष तक गुरुकुल आर्यनगर हिसार में उपाचार्य पद पर कार्य किया । पश्चात् १९७१ से झज्जर गुरुकुल में अध्यापन करने लगे । स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश के देहान्त के पश्चात् आप श्रीमद् दयानन्द आर्ष-विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर, हरयाणा गुरुकुल स्कीम, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) हैं ।

गुरुकुल-किशनगढ़ एवं कन्या-गुरुकुल जसात के कुलपति एवं वेदप्रचार-मण्डल रेवाड़ी के अध्यक्ष भी हैं । आपके प्रचार का कार्यक्षेत्र अधिकतर जिला-झज्जर, रेवाड़ी, गुड़गांव, अलवर(राज.) आदि हैं ।

आप प्रसन्नचित्त एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं । संक्षेप में :-

निष्ठा का है यही पता, सांवरी सूरत बांकी अदा ।
तन पर सुन्दर भगवा वाणा, नया चांद निकला हरयाणा ॥

पता :- गुरुकुल झज्जर महाविद्यालय, जि. झज्जर - १२४१०३ (हरयाणा)
दूरभाष - (०१२५१) - ५२०४४

आचार्य भद्रसेन

आपका जन्म १५ नवम्बर १९३६ को प. पंजाब (अब पाकिस्तान) में झंग जिले के बुधआना ग्राम में श्री रामतीर्थ एवं श्रीमती रामप्यारी के घर हुआ ।

आरम्भिक शिक्षा गुरुकुल कमालिया में, देश के विभाजन के पश्चात् गुरुकुल घरोण्डा (करनाल-हरयाणा) में हुई। उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर से सिद्धान्त-शिरोमणि, १९६० में पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, १९६२ में दर्शनाचार्य तथा १९६७ में वेदाचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं ।

कुछ समय तक धर्मप्रचार एवं पौरोहित्य कार्य किया । सन् १९७२ से १९९७ तक विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान होशियारपुर (पंजाब) में शोध एवं शिक्षण कार्य किया ।

आर्य-समाज के साप्ताहिक सत्संगों और वार्षिकोत्सवों पर उपदेशक के रूप में १९५६ से नियमितरूप से कार्य चल रहा है ।

विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में चार सौ से अधिक लेख लिखे । छोटी - बड़ी लगभग तीस पुस्तकें लिखी हैं :- विश्व-साहित्य की अनमोल निधि : वेद, मनुस्मृति में जीवन - दर्शन, सुख की खोज, सुखी कैसे रहें, वेद का जीवनदर्शन, महर्षि दयानन्द की अपूर्व देन, ओम् शब्द पर विचार, वियोग वेदना, आर्यसमाज के नियमों का अनुशीलन, आर्यसमाज के मन्तव्य, अमृत की खोज, पति-पत्नी की कहानी, वेद की कुञ्जी-प्रथम समुल्लास, महर्षि दयानन्द, चक्रव्यूह में आज का युवक, सफल जीवन इत्यादि ।

पता :- बी-२, ९२/७बी., शालीमार नगर,

होशियारपुर - १४६००१ (पंजाब), दूरभाष - (०१८८२) - २२६७२३

पं. भूदेव शास्त्री

आपका जन्म १ मार्च १९०७ को उ.प्र. में बिजनौर जिले के रैनी ग्राम में श्री मोहनलाल एवं श्रीमती मोहिनी देवी के घर हुआ ।

प्रारम्भिक शिक्षा पूरी कर आप गुरुकुल म.वि. ज्वालापुर में प्रविष्ट हुए। सन् १९३३ में विद्यासागर की उपाधि प्राप्त कर स्नातक हुए ।

म.वि. ज्वालापुर में आप अध्यापक पद पर कार्य करते रहे । हैदराबाद के आर्य - सत्याग्रह में श्री लाला खुशहाल चन्द जी खुर्सन्द के साथ गुलबर्गा में गिरफ्तार किये गये। १८ मास पश्चात् जेल से मुक्त होने पर कई विद्यालयों तथा म.वि. ज्वालापुर में अध्यापन कार्य करते रहे । नेहरू पार्क माडल टाउन में आर्य समाज मन्दिर की स्थापना करके ४० वर्ष अवैतनिक पुरोहित का कार्य भी सफलता के साथ करते रहे । यमुना नगर में दयानन्द शिशु पाठशाला का प्रारम्भ किया । लगभग ५५ वर्ष शिक्षण कार्य किया । ५० हजार बच्चों का आपके द्वारा आदर्श निर्माण हुआ । यमुना नगर पेपर मिल में भी ३० वर्ष सत्संग लगाते रहे ।

आप बच्चों के चरित्र निर्माण में पूरा ध्यान देते हैं । मधुरता तथा नवीनता के कारण आपके प्रवचन सुनने के लिए भीड़ जमा होती है ।

आप अच्छे वक्ता, कार्यकर्ता, सफल- सात्त्विक अध्यापक, उपदेशक तथा छात्रों के चरित्र निर्माता हैं । आयु के दसवें दशक में भी उत्साह पूर्वक कार्य करते हैं ।

पताः - ४५/२ केशव रोड, देहरादून २४८००१ (उत्तरांचल)

दूरभाष - (०१३५) ७२०३६३

पं. मोहित शुक्ल

२० सितम्बर १९८२ को उत्तर-प्रदेश की राजधानी लखनऊ में श्री त्रिभुवननाथ शुक्ल एवं श्रीमती मुन्नी देवी के घर एक विलक्षण बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम मोहित शुक्ल रखा गया ।

इण्टर तक अध्ययन के पश्चात् वैदिक शास्त्रों के चिन्तन -मनन से विशेष प्रतिभा जागृत हुई ।

आप जन्म से ही शान्त गम्भीर एवं तीव्र जिज्ञासु हैं । पौराणिक परिवार में जन्म होने से प्रारम्भिक जीवन में पौराणिक संस्कारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था । ९ वर्ष की अवस्था से १८ वर्ष की अवस्था तक आप पौराणिक जगत् के विद्वान् एवं उपदेशक रहे । शंकराचार्य आदि के साथ उनका प्रवचन होना साधारण बात थी । १८ वें वर्ष में लखनऊ में आयोजित विशाल लक्ष्मण - मेले में देश-विदेश के बड़े-बड़े सन्त - महात्माओं के प्रवचनों के साथ-साथ श्री मोहित शुक्ल का प्रवचन सुनकर आर्य - समाज हरदोई (उ.प्र.) के प्रधान श्री राम देव अग्निहोत्री ने उन्हें सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा दी । सत्यार्थप्रकाश पढ़कर आपके जीवन में क्रान्ति आ गयी और आप एक विशुद्ध आर्य समाजी हो गये ।

आपकी प्रचार शैली अत्यन्त उच्च स्तर की है । आपने अनेक महायज्ञों, पारायण यज्ञों का आयोजन किया । अनेक शास्त्रार्थ किये । बहुत से लोगों से मूर्तिपूजा छुड़वाकर निराकार ईश्वर की उपासना सिखाई । समाज के प्रचार के लिए अपना घर त्यागना पड़ा और अनेक कष्ट सहकर लखनऊ (उ.प्र.) में ही 'आत्मबोधायन वैदिक शोध-संस्थान' (पं.) की स्थापना की । जिसके सर्वसम्मति

से अध्यक्ष बनकर उसी के माध्यम से वैदिक - धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। आपके अनेक लेख आर्य-मित्र, आर्य-लोकवार्ता आदि समाचार पत्रों में निकलते रहते हैं।

आप एक लगनशील सत्यकर्मनिष्ठ विद्वान् हैं। आपके मन-मन्दिर में महर्षि दयानन्द की छवि विद्यमान है। आपने किसी आर्य-समाज का सहयोग लिए बिना अकेले ही वैदिक-धर्म का प्रचार-प्रसार आरम्भ किया है। आपकी सत्यकर्मनिष्ठा को देखकर लखनऊ से प्रकाशित होने वाले आर्य लोकवार्ता समाचार पत्र ने आपको 'सत्यश्रमी' की उपाधि से सम्मानित किया है।

आपकी कार्य-योजनाओं का मुख्य उद्देश्य पूरे संसार को एक वैदिक झण्डे के नीचे लाना है। इस उगते सूर्य से आर्य-जगत् को बहुत आशाएं हैं।

पता :-४०/५२, डिप्टी रघुवर दयाल लेन, नरही, लखनऊ-२७७५०१ (उ.प्र.)
दूरभाष - (०५२२) - २८९५०८

विष्णुमित्र आचार्य

आपका जन्म १९ अप्रैल १९६४ को उ.प्र. में जि. बिजनौर के अवधिपुर ग्राम में श्री सुखलालआर्य एवं श्रीमती मगनदेवी के घर हुआ।

आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी (उ.प्र.) से शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर मेरठ विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) तथा विद्याभास्कर और आयुर्वेद भास्कर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) से किया।

अध्ययन एवं विवाह के पश्चात् यद्यपि आपने चिकित्सा का व्यवसाय प्रारम्भ किया, परन्तु आपकी अभिरुचि वैदिक - धर्म / आर्यसमाज के प्रचार - प्रसार में थी। अतः कुछ वर्षो तक सफल चिकित्सा के पश्चात् आपने प्रचार कार्य को ही प्रधानता दी। तदनुसार आपने देश के विभिन्न आर्यसमाजों में प्रवचनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार आरम्भ कर दिया है।

वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ आपने ' वैदिक सत्यसुधा संस्थान ' की स्थापना की है। इसके अन्तर्गत 'सत्यसुधा' मासिक पत्रिका का सम्पादन होता है। आर्य जगत् की विभिन्न पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

पता :- आदर्श नगर, नजीबाबाद , जि. बिजनौर - २४६७६३ (उ.प्र.)
दूरभाष - (०१३४१) - ३०९०८

वाचोनिधि आर्य

आपका जन्म २४ मार्च १९६१ को गुजरात के आदिपुर (कच्छ) में श्री पं. रामचन्द्र आचार्य एवं श्रीमती ज्योत्स्ना रानी (स्व. आचार्या प्रज्ञादेवी जी की छोटी बहिन) के घर हुआ। मूल रूप से आप शाहजहाँपुर (उ.प्र.) के निवासी हैं।

आपने बी.ए. (अर्थशास्त्र), सी.ए.आइ.आइ.बी. की शिक्षा प्राप्त की।

आप इंडियन ओवरसीज बैंक की गांधी धाम शाखा में कार्यरत हैं।

बचपन से ही वैदिक संस्कार होने पर भी आपने जुलाई १९८६ से सक्रियरूप से आर्य समाज के कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ किया। व्याख्यान के रूप में वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार के साथ-साथ आप में सेवा की विशेष प्रवृत्ति है। ३६५ दिन प्रचार-प्रसार के साथ साथ सामाजिक सेवा में भी प्रवृत्त रहते हैं। लगभग ७-८ घंटे प्रतिदिन व्यवस्था, सेवा आदि के रूप में आर्य समाज के कार्य के लिए देते हैं।

जब १९९८ में कंडला बन्दरगाह पर विनाशक तूफान आया तब आपके तथा आपके आर्यसमाज-गांधीधाम के बढ़-चढ़कर राहत और बचाव कार्य की लोगों ने बहुत सराहना की। इसी प्रकार २६ जनवरी २००१ को कच्छ में आये विनाशकारी भूकम्प में पुनः दिन-रात कार्य किया, जिससे विश्व में आर्य-समाज गांधीधाम जाना जाने लगा।

अभी आप 'वैदिक संस्कार - केन्द्र' एक करोड़ रु. की लागत से बनाने में भी संलग्न हैं। आपका पूरा संयुक्त परिवार आर्य-समाज के कार्यों में जुटा रहता है।

आप सार्वदेशिक आर्य - प्रतिनिधि-सभा के उपमन्त्री, गुजरात-प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि-सभा के महामन्त्री, गुजरात प्रान्त के आर्यवीर दल के संचालक एवं आर्यसमाज गांधीधाम के महामन्त्री हैं।

पता :- बंगला नं. १७८, बाई ३-बी, आदिपुर (कच्छ) - ३७०२०५ (गुजरात)

दूरभाष - (०२८३६) - ६१२०४

ब्र. ओंस्वरूपार्य

आपका जन्म १९५१ में हरयाणा प्रान्त में हुआ।

आयुर्वेदाचार्य करके आप हरयाणा सरकार के राजकीय स्वास्थ्य - विभाग में कार्य कर रहे थे। सन् १९७६ में किसी रोगी ने सत्यार्थप्रकाश दिया। उसे पढ़कर जीवन में क्रान्ति आयी। और भी स्वाध्याय सत्संग करके वैदिक समाज के निर्माण का संकल्प किया। उसके लिए नौकरी तथा घर त्यागकर आर्य समाज की सेवा में जुट गये।

आप भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त नैपाल, भूटान आदि में भी गत २६ वर्ष से आर्य-समाज के प्रचार में संलग्न हैं। आप व्याख्यान देते हैं, भजन बनाकर गाते हैं। भजनों के कैसेट भी बनाए हैं। आप निःस्वार्थ / त्याग-भाव से समाज की सेवा में संलग्न हैं। कभी व्यक्तिगत रूप से दान, दक्षिणा, वेतन, पारिश्रमिक अथवा मार्गव्यय नहीं लिया।

आप अनेक गोशालाओं एवं आर्य-समाजों के संस्थापक एवं संचालक हैं। आपने हजारों की संख्या में सत्यार्थप्रकाश बांटे हैं। बहुत से विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर गुरुकुलों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है।

पता :-गुरुकुल गोशाला, डिकाडला जि. पानीपत - १३२१०१ (हरयाणा)
दूरभाष - (०१७४२) - ५८८२१७ मोबाईल - ०९८१२०५७५३

डॉ. दुलालचन्द्र शास्त्री

आपका जन्म ३ अप्रैल १९६८ को बंगाल में हुआ।

एम.ए. बी. एड्, एम. फिल, पी.जी.टी.डी. (दक्षिणभारत हिन्दी - प्रचार सभा, मद्रास), विद्यावाचस्पति (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार), प्रभाकर (पंजाब वि. विद्यालय), पी-एच.डी. (दक्षिण - भारत हिन्दी - प्रचार सभा मद्रास) की उपाधियां प्राप्त कीं।

आपने आर्य-समाज नंगल में आठ वर्ष एवं चण्डीगढ़ में दो वर्ष पौरोहित्य एवं कागजनगर (जि. आदिलाबाद, आं.प्र.) के आर्य समाज से प्रचार कार्य किया। पंजाब में आर्य-युवक-परिषद् तथा आर्य-वीर - दल के सक्रिय प्रशिक्षक रहे। हिमाचल, हरयाणा तथा उ.प्र. में प्रचार कार्य किया।

आपके व्याख्यान एवं पौरोहित्य दोनों ही रोचक एवं गम्भीर होते हैं।

आर्य-पत्रिकाओं में आपके लेख एवं कविताएं प्रकाशित होते रहते हैं।

पता :- गिल आदर्श मेट्रिकुलेशन स्कूल ४६, वी.एन. स्ट्रीट, बालाजी नगर, रायपेट, चेन्नै - ६०० ०१४ (तमिलनाडू).

ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त

आपका जन्म २ जून १९३४ को उ.प्र. में अयोध्या के निकट बरौरा ग्राम में श्री - रामनरेश सावन्त एवं श्रीमती रामदुलारी देवी के घर हुआ।

आपने एम. ए. (अंग्रेजी), एम. एड., एल एल. बी., चीनी - मैंडरिन भाषाविद् अमेरिका से दुभाषिया स्तर की उपाधियां प्राप्त कीं।

दीर्घकाल तक सैन्य सेवा में रहे। पूरे भारत, चीन, तिब्बत, अमेरिका आदि का भ्रमण किया। भारत के राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवा मेडल (वी. एस. एम.) से अलंकृत हुए।

आप तीस वर्षो से दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर २६ जनवरी की कामेंट्री करते आ रहे हैं, जो बहुत प्रभावशाली होती है। आप आर्यसमाज से सम्बद्ध विषयों पर टी.वी. वृत्त-चित्र भी बना चुके हैं।

आपका परिवार तीन पीढ़ियों से आर्य-समाजी है। आपके घर में प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस से सत्यार्थप्रकाश आया, क्योंकि वहाँ आपके दादा जी युद्धरत थे और पंजाबी आर्यों के सम्पर्क में आये। आप सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से विशेष प्रभावित हैं।

१९९० में सैन्य सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् देश-विदेश में प्रभावपूर्ण वैदिक - प्रचार कर रहे हैं। इंगलैंड में भी सफल रेडियो-प्रचार किया है। आप धर्मप्रचार में दक्षिणा नहीं लेते, केवल मार्गव्यय की अपेक्षा रखते हैं।

पता :- ६०९, सैक्टर २९, नोयडा - २०१३०३ (उ.प्र.)

दूरभाष - (०१२०) - ४४५४६२२, टेली फैक्स - ४४५४५११

ब्र. आशुतोष आर्य

आपका जन्म ६ अप्रैल १९६७ को उ.प्र. के फतेहपुर नामक नगर में हुआ।

आपने ग्वालियर वि.विद्यालय से बी.ए., दर्शन - योग महाविद्यालय रोजड़ से दर्शनाचार्य एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम.ए. (वेद) किया।

आप १९९१ से व्याख्यान, योग-शिविर, दर्शन - अध्यापन, शंका - समाधान आदि के माध्यम से भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक - सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। आगे भी आपकी इसी प्रकार प्रचार की योजना है। अनेक युवक आपसे प्रभावित हैं।

पता :- दर्शनयोग - महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, पो. सागपुर

जि. साबरकांठा - ३८३३०७ (गुजरात), दूरभाष - (०२७७४) - ७७२१७

डॉ. देवशर्मा वेदालंकार

आपका जन्म २४ अप्रैल १९६५ को उत्तर - प्रदेश के मुज्फ्फरनगर में पं. हरपाल शास्त्री एवं श्रीमती विमला शास्त्री के घर हुआ।

आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से वेदालंकार एवं एम.ए. तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल. एवं पी-एच.डी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप लगभग दस वर्षों से प्रवचन, परामर्श, लेख, शोध आदि के रूप में वैदिक - सिद्धान्तों के प्रचार - प्रसार में लगे हुए हैं। बच्चों का निर्माण कैसे करें यह आपका प्रिय विषय है। आपकी प्रवचन शैली अत्यन्त रोचक एवं स्पष्ट है।

आपका कार्यक्षेत्र प्रायः सम्पूर्ण भारत है। आप अधिक से अधिक युवकों के मार्गदर्शन में प्रयत्नशील रहते हैं।

आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं, जैसे - मैं मृत्यु से बचाता हूँ, सात कदम मेरे संग, पाँच वर प्रभु के संग, सफल विद्यार्थी जीवन आदि। कुछ कैसेट भी तैयार किये हैं।

पता :- ए-१/४८, सैक्टर - ६, रोहिणी, नई दिल्ली - ११००८५

दूरभाष - (०११) - ७०५६२४०

डॉ.विश्वमित्र शास्त्री

आपका जन्म ३ अक्टूबर १९४६ को उ.प्र. में बरेली जिले के प्रेमनगर में श्री पं. सतीशचन्द्र शास्त्री एवं श्रीमती वेदवती शास्त्री के घर हुआ ।

५ वर्ष की शैशवावास्था में आपने सन्ध्या हवन के मन्त्र, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के साथ - साथ नीतियों के भी शताधिक श्लोक कण्ठस्थ किये । आपने १२ ½ वर्ष की अवस्था में दसवीं तथा १४ वर्ष की अवस्था में बारहवीं कक्षा (विज्ञान से) उत्तीर्ण की । संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. उत्तीर्ण कर कानपुर विश्वविद्यालय से आयुर्वेदाचार्य (बी.ए.एम. एस.) किया।

आपके पिता पं. सतीशचन्द्रजी शास्त्री आर्य महोपदेशक थे, जो हैदराबाद - सत्याग्रह (१९३८ - ३९) के स्वतन्त्रता सेनानी और आर्य-समाज भूड़ (आर्यनगर) बरेली के प्रधान रहे । सन् १९७७ में आपका विवाह श्रीमती डॉ.प्रतिभा शास्त्री से हुआ, जो चिकित्सा एवं वैदिक प्रचार में आपका पूर्ण सहयोग करती हैं।

आप सफल चिकित्सक हैं। आयुर्वेदाचार्य होते हुए भी आप ऐलोपैथिक चिकित्सालय में प्रभारी चिकित्साधिकारी हैं ।

आप आर्य प्रतिनिधि - सभा लखनऊ (उ.प्र.) की ओर से अवैतनिक आर्य-महोपदेशक रहे । गत ३५ वर्ष से उपदेश, यज्ञ, संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं । अब तक आपने लगभग १००० विवाह - संस्कार , १०० उपनयन- संस्कार, १० शुद्धि - संस्कार एवं सैकड़ों अन्य यज्ञ - यागादि कराये हैं । अभी आर्य - उपप्रतिनिधि सभा (ऊधमसिंह नगर) के प्रधान हैं।

पता :- मित्र क्लीनिक, किच्छा मार्ग, (पी. डब्ल्यू. डी. स्टोर के सामने)

ऊधमसिंह नगर (रुद्रपुर)- २६३१५३ (उत्तरांचल)

दूरभाष - (०५९४४) - ४०००८.

डॉ. प्रतिभा शास्त्री

आपका जन्म २ जून १९५९ को तिलहर में प्रो. बुद्धिप्रकाश जी एवं श्रीमती सुशीला देवी के घर हुआ।

एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत) कुमाऊं वि.विद्यालय से, विद्यावाचस्पति - भारतवर्षीय विद्या - आर्यसभा अजमेर से और आयुर्वेदरत्न (जी.ए. एम.एस.) इलाहाबाद (प्रयाग) से किया।

आपके पिता श्री. प्रो. बुद्धिप्रकाश जी महोपदेशक एवं ख्यातिप्राप्त लेखक थे। साथ ही दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष एवं आर्यविद्यापरिषद् अजमेर के संचालक भी थे। आपका विवाह १९७७ में डॉ. विश्वमित्र शास्त्री के साथ हुआ।

आप गत २५ वर्षों से व्याख्यानों द्वारा आर्य - समाज के प्रचार - प्रसार में योगदान कर रही हैं। आप गत २० वर्ष से आर्यसमाज रम्पुरा (ऊधमसिंह नगर) के प्रधानपद पर हैं।

पता :- मित्र क्लीनिक, किच्छामार्ग, (पी. डब्ल्यू. डी. स्टोर के सामने)
रुद्रपुर - २६३१५३, ऊधमसिंह नगर (उत्तरांचल)
दूरभाष - (०५९४४) - ४०००८.

श्रवणकुमार शास्त्री

आपका जन्म २७ मई १९६४ को हरयाणा में सिरसा जिले के कर्मशाना ग्राम में श्री ठाकुर भोपाल सिंह के घर हुआ।

आपने शास्त्री, आयुर्वेद रत्न की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप बहुत अच्छे गायक और निर्भीक वक्ता हैं। ग्रामीण-भाषा में वैदिक सिद्धान्तानुकूल भजन बनाकर एवं गाकर आकर्षण उत्पन्न करने की आप में कला है। आप कभी व्यायाम-प्रदर्शन करके, कभी आसन-प्राणायाम आदि केयोगशिविर लगाकर प्रचार करते हैं। कभी जीप में वैदिक साहित्य, कैसेट्स, चित्र, हवनकुण्ड आदि रखकर माइक स्पीकर लगाकर ग्रामों में वैदिक प्रचार के लिए निकल पड़ते हैं। आप बड़े परिश्रमी हैं। रात - दिन ऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए आपका जीवन समर्पित है।

आपके दो पुत्र एवं दो पुत्रियां विभिन्न गुरुकुलों में पढ़ते हैं ।

आपने-संसार को जानना; ईश्वर को जाने बिना दुःखों का निदान नहीं ; महाभारत के बाद आर्यों का इतिहास इत्यादि दस पुस्तकें लिखकर प्रकाशित करायी हैं ।

आप लोभ रहित कर्त्तव्यनिष्ठ हैं । एक बार आपको किसी की खोई हुई बड़ी राशि मार्ग में मिली । उसके मालिक को ढूंढ़कर लौटा देने पर, जिला के उपायुक्त ने सभा में सम्मानरूप में कुछ राशि दी, तो आपने वह नहीं ली। ऐसा करना अपना कर्तव्य बताकर सच्चे आर्यत्व का परिचय दिया ।

आपने अनेक गोशालाएं भी चलाई हैं । आपको अनेक समाजों, संस्थाओं एवं सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है ।

पताः- ग्राम - कर्मशाना, तह. ऐलनाबाद, जि. सिरसा - १२५१०२ (हरयाणा)
दूरभाष -(०१६९८)-८७२४९ कार्या. (०१६६६) - ३४७०९ (घर)

आचार्य चन्द्रपाल

आपका जन्म उत्तर - प्रदेश में बुलन्दशहर जिले के निहारी ग्राम में श्री ब्रह्मसिंह के घर हुआ ।

आपने एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), शिक्षा - शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।

सन् १९८० से जनता कॉलेज गौतमबुद्धनगर में संस्कृत-प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं ।

आप यथावसर उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरयाणा, राजस्थान, म.प्र.आदि प्रान्तों में व्याख्यान के रूप में वैदिक-सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहते हैं ।

पता :- डी. - ४३५, गोविन्दपुरम्, पो. - डासना,
जि. - गाजियाबाद - २०१००९ (उ.प्र.)
दूरभाष :- (०१२०) - ४७६५८०६

श्रीमती सत्यप्रिया

आपका जन्म २३ अप्रैल, १९५३ को हिमाचलप्रदेश में मण्डी जिले के सुन्दरनगर में श्री लक्ष्मण एवं श्रीमती गंगादेवी के घर हुआ।

विद्यालय की शिक्षा पूरी होने पर १९६९ में आचार्य भगवान देव चैतन्य के साथ विवाह होने के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश एवं वैदिक सिद्धान्तों का गम्भीरता से अध्ययन किया। पौराणिक परिवार में जन्म होने पर भी आप पर आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की विचारधारा का रंग चढ़ता गया।

गृहस्थ के दायित्वों का निर्वहन करने के साथ-साथ आप आचार्य चैतन्य जी के साथ विभिन्न प्रान्तों में प्रचार करती हैं। अपने मधुर भजनों एवं उपदेशों से आप वैदिक धर्म की सेवा में सन्नद्ध हैं।

साथ ही आपका स्वभाव बड़ा दयालु है। अतिनिर्धन एवं असहाय लोगों के सहयोग एवं विद्वानों की सेवा में आप सदा तत्पर रहती हैं। आपने बहुत से भजनों और कविताओं की रचना भी की है।

पता :- ८१/एस - ४, सुन्दर नगर कॉलोनी,
जिला - मण्डी - १७४४०२ (हि.प्र.)
दूरभाष :- (०१६०७) - ६३०९२

ब्रह्मचारी विष्वङ्

आपका जन्म २१ मई १९६८ को आन्ध्र-प्रदेश में श्री स्वामय्या एवं श्रीमती कमलावती के कृषक परिवार में हुआ।

विद्यालय में १२ वीं कक्षा तक पढ़ने के पश्चात् गुरुकुलों में व्याकरण, निरुक्त, दर्शन, उपनिषद् आदि का अध्ययन किया। दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ से दर्शनाचार्य एवं भारतीय योगविद्याधाम नासिक से योगशिक्षक की उपाधि प्राप्त की।

वैदिक धर्म एवं योग के प्रचार -प्रसार के लिए प्रवचन, योग-शिविर, अध्यापन आदि करते रहते हैं।

पता :- ऋषि -उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००४ (राज.)
दूरभाष :- (०१४५) - ६२१८९१

डॉ. दीनानाथ आचार्य

आपका जन्म १८ अगस्त १९६२ को बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के पिपराहाँ ग्राम में श्री कमलशाह एवं श्रीमती चम्पादेवी के कृषक परिवार में हुआ।

प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में पूरी करके मुजफ्फरपुर के विभिन्न महाविद्यालयों से एम.ए. (संस्कृत), साहित्यचार्य, व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदरत्न, पी-एच.डी., विद्यारत्न (अजमेर), सिद्धान्तवाचास्पति (बिजनौर) आदि परिक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

१९८० में श्रीमती सावित्रीदेवी के साथ विवाह हुआ।

सन् १९८० से आप पुरोहित एवं उपदेशक रूप में वैदिक-सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। विभिन्न आर्य पत्रिकाओं में आपके लेख भी प्रकाशित होते रहते हैं।

पता :- आर्य-समाज, आर्यसमाज पथ, साहेबगंज,
छपरा - ८४१३०१ (बिहार), दूरभाष - (०६१५२) - २९१४७

जगदीशप्रसाद वैदिक

आपका जन्म सन् १९२५ में मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में हुआ।

आप आर्यसमाज के मन्त्री, प्रधान; प्रान्तीय-प्रतिनिधि - सभा के मन्त्री, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य आदि पदों पर गत ३५ वर्ष से कार्य करते आ रहे हैं। आपके पुत्र-पौत्र भी आर्य-विचारों से ओतप्रोत हैं। समय-समय पर आप विभिन्न ग्रामों एवं नगरों में प्रवचन के लिए जाते रहते हैं।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। बहुत से स्टीकर एवं लघुपुस्तिकाएं प्रकाशित करके निःशुल्क वितरित करते रहते हैं।

बहुत से मुसलमानों के घर से हिन्दू बालिकाओं को निकाल कर उनका विवाह हिन्दू लड़कों से करवाया।

वाराणसी, इलाहाबाद, अयोध्या, चित्रकूट, मथुरा, वृन्दावन आदि के पीठाधीश्वरों को आदिवासी क्षेत्रों में आश्रम एवं विद्यालय खोलने के लिए प्रेरित करते रहते हैं, जिससे उन क्षेत्रों के बच्चों को ईसाई होने से बचाया जा सके।

पता :- वैदिक-सदन, भवरकुंआ, महू मार्ग, इन्दौर - ४५२०१७ (म.प्र.)
दूरभाष : - (०७३१) - ४७५२००, ४७६२००, ४६७३०८, (कार्या.) - ७०२९१०

पं. सुखदेव 'आर्य तपस्वी'

आपका जन्म ७ जून १९३८ को पाकिस्तान में स्थित मुजफ्फरगढ़ जिले के अलीपुर तहसील में एक सम्पन्न जमींदार परिवार में हुआ।

आपने एम.ए.,बी.एड., एल.एल. बी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

भारत में १६ वर्ष और विदेशों में दस वर्ष तक अध्यापन का कार्य किया।

भारत - विभाजन के पश्चात् दिल्ली आये थे। रोहिणी (दिल्ली) में अपना कोचिंग सैंटर चलाया।

जीवन के हर क्षेत्र में पूरा सम्मान पाने के पश्चात् एक कार दुर्घटना के अनन्तर वैराग्य उत्पन्न हुआ। अपना सारा कारोबार बन्द करके संन्यासी के समान जीवन व्यतीत करते हुए श्वेत वस्त्र, अंगरखा धारण कर अपना वाहन (कार) स्वंय चलाकर पूरे देश में निष्काम-भाव से वैदिक - सिद्धान्तों का प्रचार - प्रसार कर रहे हैं। यद्यपि गृहस्थ-आश्रम के दायित्व अभी आपके शेष हैं, परन्तु तन-मन-धन द्वारा वेद-प्रचार के लिए पूरे देश में दूर-दूर तक बिना दक्षिणा, बिना मार्ग-व्यय लिए अपने प्रवचनों द्वारा निष्काम - सेवा कर ज्ञान की वर्षा करते हैं।

पता : - पं. सुखदेव आर्य-तपस्वी, डी - ११/११८, सैक्टर ८, रोहिणी, नई दिल्ली - ११००८५, दूरभाष : - (०११) - ७९४७७२२, ७९४२६१७

डॉ. ईश्वरचन्द्र शास्त्री

आपका जन्म सन् १९४० में झारखंड में जिला गिरिडोह के मालड़ा ग्राम में हुआ।

आपने बी.ए. (हिन्दी), आचार्य (संस्कृत), ए.एन.आइ.एच्. (मद्रास), होम्योपैथी, ए.एन.टी.सी.सी. (मद्रास) एलोपैथी की उपाधियां कीं।

आप होम्योपैथी - चिकित्सक के साथ-साथ आर्य समाज के सक्रिय सदस्य हैं। आप पौरोहित्य एवं वैदिक-सिद्धान्तों पर प्रवचन बड़ी तन्मयता एवं कुशलता से करते हैं।

किसी भी समाज या सभा में अवसर मिलने पर आप प्रवचन के लिए तैयार रहते हैं। विभिन्न आर्य - पत्रिकाओं में आपके सामजिक निबन्ध प्रकाशित होते रहते हैं।

आजकल आप निःशुल्क / धर्मार्थ होम्योपैथिक चिकित्सालय चलाते हैं। कोई संस्था चाहे तो आपकी सेवाओं का लाभ उठा सकती है।

पता : - मु.पो. मालड़ा, जि. गिरिडीह - ८१५३१३. (झारखण्ड)

आचार्य विश्वबन्धु

आपका जन्म वैशाख शु. ७/१९७६ वि. (सन् १९१९) को उत्तर - प्रदेश में मुजफ्फरनगर जिले के बुडीना कलां ग्राम में हुआ।

आपने 'विद्याभास्कर' गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार), पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, सं. वि. विद्यालय वाराणसी से शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

आपने आर्य - सत्याग्रह हैदराबाद में भाग लिया। गुलबर्गा जेल में रहे। इसके पश्चात् आर्य-प्रतिनिधि सभा (पंजाब) के उपदेशक के रूप में पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान आदि प्रान्तों में प्रचार एवं अनेक शास्त्रार्थ किये। देश-विभाजन के पश्चात् उ.प्र. के विद्यालयों में संस्कृत का अध्यापन किया। सेवानिवृत होकर पुनः प्रचार करने लगे। अपने जन्मस्थान के पास 'वैदिकधर्म-प्रचार-केन्द्र' सिसौली से प्रचार, लेखन आदि कार्यो में संलग्न हैं। आपने सेवा एवं प्रचार के लिए 'आचार्य विश्वबन्धु मानवसेवार्थ न्यास' (ट्रस्ट) बनाया है, जो प्रचार एवं जन सेवा में संलग्न है।

पता : - बुडीना कलां, जि. मुजफ्फर नगर - २५१३१९ (उ.प्र.)

सम्भाजीराव पवार

आपका जन्म ९ अक्टूबर १९३७ को महाराष्ट्र में परभणी जिले के घटांग्रा में माणिकराव पवार के घर हुआ था।

एच.एस्.सी., सीनियर बेसिक ट्रेण्ड, विद्यावाचस्पति, एम.डी.एच., ऐ.आय.व्ही. की उपाधियां प्राप्त कीं।

अध्ययन काल में ही सत्यार्थ-प्रकाश पढ़कर तथा आर्य महासम्मेलन (दक्षिण) हैदराबाद से आप ऐसे प्रभावित हुए कि आपने कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर पंडितों तथा गुरुकुल घटकेश्वर आदि से वैदिक साहित्य का अध्ययन किया और

वैदिक धर्म के प्रचार में जुट गये। आप कई विद्यालयों में मुख्याध्यापक रहे इसके साथ आप दलितोद्धार, शराबबंदी, बालमजदूरी, दहेज-प्रथा - विरोध आदि सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं।

आप पुरोहित, गद्य-पद्यों के लेखक तथा एक अच्छे उपदेशक हैं। आप ग्रामों में निःशुल्क चिकित्सा तथा प्रबोधन शिविर आदि का आयोजन करते हैं। इन कार्यों में आप लगभग ४५ वर्षों से संलग्न हैं। आपकी इस सेवा को देखकर कई संस्थाओं ने पुरस्कृत किया।

पता : - मु.पो.-घटांग्रा, वाया - राणीसावरगांव,
जि. परभणी - ४३१५३६ (महा.), दूरभाष : - (०२४५३) - ६६१७०

ला. श्यामसुन्दर आर्य

आपका जन्म सन् १९१५ में हरयाणा में झज्जर जिले के बादली ग्राम में श्री न्यादरसिंह एवं श्रीमती भगवान् देवी के घर हुआ।

धार्मिक परिवार एवं पण्डितों के सम्पर्क से आप वेदानुयायी बने। विशेष रूप से आचार्य प्रेमभिक्षु जी से प्रभावित हुए, जिन्होंने आपको अपने सत्य प्रकाशन का सदस्य बनाया तथा प्रधान चुना।

श्री होशियारसिंह से आप को प्रदर्शनी की प्रेरणा मिली, जो उच्च कोटि के महात्माओं, साधु-सन्तों, विद्वानों के तथा अंडा, मांस, मुर्गा, मछली आदि अभक्ष्य पदार्थों के चित्रों का संग्रह करके प्रदर्शनी लगाते थे।

इस अवस्था में भी आप आडियो तथा वीडियो कैसेटों के द्वारा प्रचार करते हैं। लोगों को प्राकृतिक जीवन जीना सिखाते हैं। आपके तपोमय जीवन से आपके सम्पर्क में आने वाले बहुत से लोगों का जीवन बदल गया।

आप गुरुकुलों को भवन-निर्माण एवं छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता भी देते रहते हैं। जैसे - आर्यवन रोजड़, आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद, गुरुकुल कालवा, गुरुकुल बहालगढ़, गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला आदि।

पता : - वेदमन्दिर गुरुकुल, बादली (बहादुरगढ़ रोड)
जि. झज्जर - १२४१०५ (हरयाणा),
दूरभाष : - (०११८) - ३९००८४

४

आर्य - लेखक

'अक्षरेषु हि या कीर्तिःसा नित्या साऽजराऽमरा'
(गम्भीर अध्ययन, चिन्तन, मनन से जो ग्रन्थ लिखा जाता है; उससे चिरस्थायी कीर्ति होती है ।)

आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र

आर्यरत्न, वेद - दर्शनवाचस्पति आचार्य मिश्र जी का जन्म २४ नवम्बर १९२४ को उ.प्र. में बदायूँ जिले के पूठी ग्राम में पं. अयोध्याप्रसाद तथा माता ललिता देवी के घर हुआ।

तीन वर्ष की अवस्था में ही पिता जी ने अनेक संस्कृत-श्लोक, सूक्तियां कण्ठस्थ करा दी थीं। अक्षराभ्यास भी कराया। घर पर ही नौ वर्ष की अवस्था में उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार कराकर पूर्वनाम विष्णुदत्त को बदलकर विशुद्धानन्द रखा। पश्चात् स्वामी दर्शनानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय सूर्यकुण्ड बदायुँ में प्रविष्ट कराया। यहाँ तपश्चर्या एवं साधना के साथ वाराणसी की प्राच्यव्याकरणाचार्य तक की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। वेद - वेदाङ्ग एवं उपाङ्गों का गहन अध्ययन, मनन और चिन्तन किया। पिता जी की प्रेरणा से गुरुकुल में सभी के साथ संस्कृत में ही वार्त्तालाप करने का व्रत धारण किया।

अध्ययन -अध्यापन के साथ-साथ आपने यद्यपि संस्कृत एवं हिन्दी में दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं, परन्तु उनमें मूर्धाभिषिक्त है -वेदार्थकल्पद्रुम, जो तीन खण्डों एवं लगभग दो सहस्र पृष्ठों में है। इसके प्रथम खण्ड का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि-सभा ने तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्ड का आर्ष-साहित्य-प्रचार-ट्रस्ट ने किया है। स्वामी करपात्री के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में वेद, न्याय, मीमांसा, व्याकरण, सांख्य, वेदान्त, ज्योतिष आदि विषयों के प्रगाढ़ वैदुष्य से विभूषित १४ धुरन्धर पौराणिक पण्डितों और श्री धानुका जी सेठ के आर्थिक सहयोग से आर्य-समाज को चुनौती भरे शास्त्रार्थ का आह्वान करने के लिए 'वेदार्थ पारिजात' नामक विशाल ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था। इस वेदार्थ-पारिजात में ऋषि दयानन्द तथा उनके अनुयायी वैदिक-विद्वानों की वेदविषयक धारणाओं का प्रतिपद खण्डन किया गया है। भाषाशैली भी अशिष्ट है।

उसी महापोथे की एक-एक बात का उत्तर श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी ने 'वेदार्थ कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ में दिया है। सुललित, सरल एवं शिष्ट संस्कृत -भाषा में लिखे गये इस अद्भुत ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर लेखक की धर्मपत्नी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, पाली तथा बंगला भाषा की विदुषी श्रीमती आचार्या निर्मला मिश्र (एम. ए.) ने किया है। ये 'पार्वती-आर्यकन्या-महाविद्यालय' बदायूँ की प्राचार्या रहीं। प्रथम खण्ड १९८४ में प्रकाशित हुआ। द्वितीय एवं तृतीय १९९२ एवं १९९६ में प्रकाशित हुए।

इस महान् ग्रन्थ एवं लेखक को सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के अतिरिक्त स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आर्यसमाज कलकत्ता, आर्ष-साहित्य-प्रचार ट्रस्ट दिल्ली आदि संस्थाओं ने सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। नासिक (महाराष्ट्र) के श्री गंगेश्वर वेद-मन्दिर में आपका वेद-वेदाङ्ग-पुरस्कार-समारोह में अभिनन्दन किया गया। वस्तुतः आर्यरत्न आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र के इस महान् ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। आप गुरुकुल वृन्दावन (उ.प्र.) के कुलपति पद पर भी रहे।

पता :- वेद-मन्दिर, कूँचा पांडा, बदायूँ - २४३६०१ (उ.प्र.)

पं. सत्यानन्द वेदवागीश

आपका जन्म १० अक्टूबर १९३३ को राजस्थान में अजमेर जिले के लीडी नामक ग्राम के श्री ओंकार सिंह आर्य एवं श्रीमती सुगनी बाई के कृषक परिवार में हुआ।

आरम्भिक शिक्षा लीडी में होने के पश्चात् सन् १९४३ में स्वामी व्रतानन्द जी के गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश लिया। यहाँ आपने निरन्तर १४ वर्ष तक पाणिनीय व्याकरण (महाभाष्य-पर्यन्त), निरुक्त, छन्द, दर्शन एवं वेदादि शास्त्रों की आर्ष विद्या का अध्ययन किया और वेदवागीश की उपाधि प्राप्त की। आपके प्रमुख गुरुजन पं. शोभित मिश्र, पं. शंकरदेव जी, पं. भीमसेन जी आदि थे। गुरुकुलीय शिक्षा के पश्चात् आपने एम.ए. आदि की राजकीय परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

१९६३ में श्रीमती सुमित्रा जी से विवाह हुआ। आपके श्रुतिधर और उदयन दो पुत्र हैं। आपने विभिन्न शिक्षण-संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया। साथ ही जिज्ञासु छात्रों को अष्टाध्यायी - महाभाष्य की पद्धति से पढ़ाने की प्रक्रिया सतत बनी रही। कुछ काल तक परोपकारिणी सभा में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के संशोधन एवं सम्पादन का दायित्व भी सम्भाला।

आप संस्कृतव्याकरण के प्रौढ़ विद्वान् एवं उत्तम वक्ता हैं। आजकल आप स्वतन्त्र रूप से धर्मोपदेश तथा संस्कारादि कृत्य करते कराते हैं। आचार्य निरञ्जनदेव (शंकराचार्य) आदि से आपके अनेक शास्त्रार्थ हुए।

आपने नामनिधि, अन्त्येष्टि संस्कार, पाणिनीय शब्दानुशासनम्, दयानन्द

वेदभाष्य-भावार्थप्रकाश (दो खण्ड), बुद्धिनिधि, दयानन्द-दृष्टान्तनिधि, सूक्तिनिधि, भक्ति-सत्संग-कीर्तन, वेदसाहाय्यनिधि आदि ग्रन्थ लिखे हैं। आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है।

पताः- ई-१, सैक्टर-३०, नोएडा - २०१३०१ (उ.प्र.)।
दूरभाष :- (०१२०)-४४५१७८९

डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य

आचार्य जी का जन्म ८ फरवरी १९३५ को हरयाणा में रोहतक जिले के बालन्द नामक ग्राम में श्री शिवदत्त आर्य एवं श्रीमती रजकां देवी के घर हुआ।

स्वग्राम में प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् गुरुकुल झज्जर में विशेष योग्यता से अध्ययन करते हुए (७/२/१९४७ से १९५७ तक) व्याकरणाचार्य, निरुक्ताचार्य, साहित्याचार्य, न्यायाचार्य की उपाधियां प्राप्त कीं। पंजाब विश्वविद्यालय से भी आपने विशारद, शास्त्री एवं व्याकरणाचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। सन् १९६७ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम. ए. (संस्कृत) एवं यहीं से १९७८ में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आप गुरुकुल झज्जर में ६ वर्ष तथा उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर एवं भटिण्डा में ७ वर्ष तक आचार्य रहे। पश्चात् (१९६८ से १९९५ तक) हरयाणा के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष के रूप में अध्यापन करते रहे।

यद्यपि अध्यापन काल में भी आप वैदिक-सिद्धान्तों के प्रचार एवं लेखन में समय लगा रहे थे, परन्तु १९९५ में सेवानिवृत्ति के पश्चात् पूरा समय वैदिक धर्म की सेवा में लगा रहे हैं। अभी आप आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं 'सर्वहितकारी' (साप्ताहिक-पत्र) के सम्पादक के रूप में कार्य कर रहे हैं। वैदिक सिद्धान्तों के तर्कपूर्ण रोचक व्याख्यानों के साथ - साथ आपने संस्कृत - भाषा, पौरोहित्य, विभिन्न दर्शनों एवं वैदिक शिक्षा के बहुत से शिक्षण-शिविर लगाये हैं।

आपने वैदिक सिद्धान्तों के व्याख्यानों एवं शिक्षण के साथ - साथ महत्त्वपूर्ण प्रौढ़साहित्य के लेखन का कार्य किया है।

जैसे :- दयानन्द यजुर्वेद भाष्य-भास्कर (४ खण्ड), दयानन्द ऋग्वेदभाष्य-भास्कर (२ खण्ड)। वेदभाष्य-विबोध (यजु. ४०वां अध्याय)। शिक्षा - वेदांग परम्परा एवं सिद्धान्त, वर्णोच्चारण - शिक्षा (विबोधवृत्ति), सन्ध्याहवन पद्धति ,वैदिक उपासना पद्धति , बाल - संस्कार विधि (संस्कृत) वर्षेष्टि यज्ञपद्धति, महर्षि दयानन्द के समस्त लघुगन्थों का सम्पादन, व्याकरण कारिकाप्रकाश, ब्रह्मचर्यामृतम् , लिङ्गानुशासनवृत्तिः , (पाणिनीय) अष्टाध्यायी प्रवचनम् (५ खण्ड) व्याकरण - शास्त्रम् (२ भाग), पं. जगदेवसिद्धान्ती जीवनचरित्र ।

आपकी उक्त सेवा के फलस्वरुप ही ' आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई ' ने २८ जनवरी १९९६ को वैदिक-विद्वान् के रूप में आपको 'वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार' से सम्मानित किया। मान्य आचार्य जी से आर्य-जगत् को अभी बहुत आशाएं हैं।

पता :- संस्कृत -सेवा- सदन ७७६ / ३४, हरिसिंह कॉलोनी (सुनारिया मोड़) रोहतक - १२४००१ (हरयाणा) दूरभाष :- (०१२६२)-७००७०

डॉ. भवानीलाल भारतीय

आपका जन्म ६ जून १९२८ ई. को राजस्थान में नागौर जिले के परबतसर नामक ग्राम में श्री फकीरचन्द्र माथुर (वकील) एवं श्रीमती रतन कंवर के यहाँ हुआ।

आपने एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत) पी - एच. डी. (राजस्थान विश्वविद्यालय) की उपाधियां प्राप्त कीं , १२ वर्ष की अवस्था में सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से जीवन क्रान्ति - पथ पर अग्रसर हुआ।

१९४९ से १९८० पर्यन्त राजस्थान में जोधपुर, पाली, अजमेर के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। सन् १९८० से १९९१ तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की दयानन्द-शोध-पीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर के रूप में शोधकार्य तथा शोधार्थियों को कार्यनिर्देशन किया। २८ शोध-छात्रों को पी-एच.डी.की उपाधि दिलवायी।

आपने जोधपुर नगर की आर्य समाज की सदस्यता से लेकर सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा तक के विभिन्न पदों पर कार्य किया। सन् १९७० में परोपकारिणी सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित होने के पश्चात् संयुक्तमन्त्री

एवं अन्तरङ्ग सदस्य रहे। 'परोपकारी' एवं 'आर्य मार्तण्ड' पत्र का वर्षों तक सम्पादन किया।

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ भारत के सभी प्रान्तों में जाने केअतिरिक्त नैपाल, हालेण्ड, बेल्जियम, जर्मनी तथा मारिशस में अनेक मास तक प्रचारार्थ भ्रमण किया। रेडियो तथा टेलिविजन पर कार्यक्रम दिये।

आपने १९४९ से लेखन कार्य आरम्भ किया। सन् २००१ की समाप्ति तक वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, गीता, दर्शन आदि विषयों तथा मुख्यतः महर्षि दयानन्द के जीवन कार्य एवं व्यक्तित्व की विवेचना से सम्बद्ध लगभग १३० ग्रन्थ रचे। पत्र-पत्रिकाओं में दयानन्द विषयक शताधिक शोधग्रन्थों केअतिरिक्त अन्य विषयों पर हजारों लेख लिखे।

आपके लिखे हुए प्रमुख ग्रन्थ हैं-१. संस्कृत भाषा और साहित्य को ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की देन (शोध - प्रबन्ध), २. महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, ३. श्री कृष्ण चरित, ४. ज्ञान दर्शन तथा भारतवर्षीय मतमतान्तर - समीक्षा, ५. नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती, ६. दयानन्द - साहित्य-सर्वस्व, ७. आर्य समाज के साहित्य का इतिहास, ८. स्वामी श्रद्धानन्द - ग्रन्थावली (९ खण्डों में), ९. आर्य लेखक - कोश, १०. उपनिषदों की कथाएं, ११. हिन्दी काव्य को आर्यसमाज की देन, १२. जर्मनी के संस्कृत - विद्वान् आदि।

ऋषि दयानन्द के अनेक जीवन - चरित्रों का सम्पादन किया है। अंग्रेजी तथा गुजराती भाषा के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया है।

आर्यसमाज के सर्वोच्च साहित्य - सम्मान 'मेघ जी भाई आर्य पुरस्कार' (१९९२) केअतिरिक्त लगभग डेढ़ दर्जन सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

पता :- ८/ ४२३, नन्दन वन, चौपासनी आवासन मण्डल,

जोधपुर - ३४२००८, (राज.), दूरभाष : (०२९१) - ७५५८८३.

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज के सुयोग्य शोध - विद्वान् तथा इतिहासज्ञ प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु का जन्म २८ मई १९३२ को स्यालकोट जिले (पाकिस्तान) के मालोमेह ग्राम में महाशय जीवनमल आर्य एवं श्रीमती हरदेवी के घर हुआ। आपके पिता जी गांव के प्रथम आर्यसमाजी थे।

आपने दयानन्द कॉलेज हिसार से एम. ए. (इतिहास) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आप चार वर्ष तक डी.ए.वी. कॉलेज शोलापुर में इतिहास के प्रवक्ता रहे। पश्चात् डी.ए.वी. महिला कालेज अबोहर में इतिहास के प्राध्यापक रहे।

पैतृक संस्कारों से आप में बाल्यकाल में ही वैदिक - धर्म के प्रति अडिग श्रद्धा पैदा हो गयी। पं. लेखराम के नाम एवं कार्य की चर्चा सुन सुनकर लेखनी व वाणी से वैदिक - धर्म की सेवा के लिए चाह और अदम्य उत्साह जागा। मेहता जैमिनि जी के व्याख्यान का भी विशेष प्रभाव पड़ा।

आपने आर्य समाज के दिवंगत महापुरुषों, घटनाओं और कार्यों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण अनुसन्धानात्मक कार्य किया है। आपने हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक मौलिक जीवनियाँ लिखी हैं। अब तक एक सौ दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं-वीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द, एक मनस्वी जीवन, प्रेरणा कलश, अतीत के झरोखे से, अखण्ड ज्वाला, मूल की भूल, रक्त साक्षी पं. लेखराम, महर्षि दयानन्द और जनजागरण, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय : जीवनी एवं विचार-दर्शन, तड़प वाले : तड़पाती जिनकी कहानी (दो भाग), लाला लाजपतराय, पं गुरुदत्त, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (४ भाग), गंगा - ज्ञान - सागर (४ भाग) आदि। आपके ऐतिहासिक व्याख्यान भी रोचक एवं प्रेरक होते हैं।

पता :- वेद सदन, नई सूरज नगरी, अबोहर - १५२११६ (पंजाब)

दूरभाष - (०१६३४) २६४०३.

पं. राजवीर शास्त्री

वैदिक शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् पं. राजवीर शास्त्री का जन्म ४ अप्रैल १९३८ को उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद जिले के फजलगढ़ ग्राम में श्री शिवचरणदास के घर हुआ।

ग्राम में प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् आपका आचार्य-पर्यन्त अध्ययन गुरुकुल झज्जर में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से विशारद, शास्त्री, आचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। मेरठ वि.विद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

कुछ समय तक गुरुकुल झज्जर में मुख्याध्यापक के रूप में अध्यापन करने के पश्चात् दिल्ली - प्रशासन के अधीन, सन् १९९८ तक संस्कृत - अध्यापन कार्य किया।

सेवा कार्य में रहते हुए व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों को व्याकरण - महाभाष्य आदि का अध्यापन किया।

कन्या गुरुकुल नरेला तथा गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) में व्याकरण आदि का अध्यापन करते रहे। इसके अतिरिक्त विभिन्न समाजों, संस्थाओं में वैदिक सिद्धान्तों का व्याख्यानों एवं लेखन के माध्यम से प्रचार किया। आर्ष - सहित्य - प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के ग्रन्थ लेखन, सम्पादन एवं संशोधन के कार्यो में आपका विशेष सहयोग प्राप्त होता रहा है, जिसके फलस्वरूप अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाश में आ सके हैं।

आप दयानन्द - सन्देश पत्र का ३० वर्ष से अवैतनिक सम्पादन कर रहे हैं।

आपके लिखे हुए प्रमुख ग्रन्थ हैं - दयानन्द वैदिक कोष, योगदर्शन व्यासभाष्य, उपनिषद्भाष्य (ईश, केन, कठ), विशुद्ध मनुस्मृति, षड्दर्शन - पदानुक्रमणिका आदि।

आपने वेदार्थ कल्पद्रुम, संस्कारभास्कर, योगमीमांसा, उपदेश मंजरी, आर्याभिविनय, अष्टाध्यायी भाष्य (चतुर्थ अध्याय), दयानन्द सन्देश के अनेक विशेषांक आदि का कुशलता से सम्पादन किया है।

आजकल आप आर्ष - साहित्य - प्रचार ट्रस्ट के प्रधान हैं।

आपके लेखनकार्यो की उत्कृष्टता के कारण आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई ने वेद - वेदाङ्ग पुरस्कार से सम्मानित किया। इसीप्रकार आर्यप्रति- निधि सभा गाजियाबाद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य समाज नयाबांस दिल्ली, विक्रमप्रतिष्ठान अमेरिका, संस्कृत - अकादमी दिल्ली आदि ने सम्मानित किया।

आप सरल स्वभाव के ऋषिभक्त एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं।

पता :- भूपेन्द्रपुरी, मोदीनगर, जि. गाजियाबाद - २०१२०४ (उ.प्र.),
दूरभाष (०१२३२) - ४४२३२

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आपका जन्म ३ जुलाई १९४५ को उत्तर - प्रदेश में मुजफ्फरनगर जिले के एक ग्राम में हुआ।

आपने व्याकरणाचार्य (गुरुकुल झज्जर), वेदालंकार (गुरुकुल कांगड़ी), एम. ए., पी-एच. डी. (दिल्ली विश्व विद्यालय) की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप १९७३ से रामजस कॉलेज में रीडर (संस्कृतविभाग) हैं।

अध्यापन के साथ - साथ वैदिक - सिद्धान्तों के प्रचार में भी रुचि से संलग्न हैं। दिल्ली तथा बाहर आर्य-समाजों एवं अन्य संस्थाओं के वार्षिकोत्सवों, सम्मेलनों में संयोजक, वक्ता, अध्यक्ष आदि के रूप में जाते रहते हैं। विश्वविद्यालयस्तर पर भी शोध - गोष्ठियों में जाते हैं।

आपकी १४ पुस्तकेंप्रकाशित हो चुकी हैं। जैसे - काशिका की हिन्दी व्याख्या (एक अध्याय), काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन, उपनिषदों में योग-विद्या, क्या अथर्ववेद में जादूटोना है, वेदों में क्या है ?, वैदिक संस्कृति एवं आर्यसमाज, विद्रोही फकीर दयानन्द, ध्यान तथा उपासना, वैदिक दर्शन, वेदों का तुलनात्मक अध्ययन आदि।

आपके लेखन, प्रचार आदि कार्यों के लिए उ.प्र. संस्कृत अकादमी एवं अनेक समाजों तथा संस्थाओं ने आपको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है।

पता :- बी. २६६ सरस्वती विहार, दिल्ली - ११० ०३४

दूरभाष - (०११) - ७०११३१७

पं. वेदव्रत शास्त्री

आपका जन्म मार्गशीर्ष शु. १२ सं. १९८९ वि. (९ दिसम्बर १९३२ ई.) को राजस्थान में झुंझुनू जिले के घासीकाबास ग्राम में श्री ज्ञानाराम एवं श्रीमती जमना देवी के नूनिया - जाट परिवार में हुआ।

घर पर रहते हुए आरम्भिक शिक्षा के पश्चात् १ जनवरी १९४६ को गुरुकुल झज्जर में प्रवेश लिया। यहाँ पढ़ते हुए आपने व्याकरण, साहित्य, निरुक्त, दर्शन तथा आयुर्वेद में आचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। व्याकरण में विशेष निपुणता प्राप्त की। होम्योपैथी की भी प्राईवेट परीक्षा देकर प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ से विशारद तथा शास्त्री की परीक्षाएं सर्वाधिक अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण कीं। अजमेर की सिद्धान्त - रत्न, सिद्धान्त - शास्त्री, सिद्धान्त - वाचस्पति, साहित्य सरोज की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। स्वाध्याय - मंडल सूरत से संस्कृत विशारद, गीतालंकार, उपनिषदलंकार और वेदाचार्य की परीक्षाएं भी उत्तीर्ण कीं। उपदेशक विद्यालय यमुनानगर से सिद्धान्तशिरोमणि तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

१२वर्ष तक (१९५२- १९६४) मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य के रूप में गुरुकुल झज्जर का संचालन किया। सम्पूर्ण व्याकरण - महाभाष्य का प्रदीप उद्योत टीका एवं विमर्श टिप्पणी सहित सम्पादन करके ५ खण्डों में शुद्धतम संस्करण गुरुकुल - झज्जर से १९६४ में प्रकाशित करवाया। सन् १९५३ से गुरुकुल झज्जर के मासिक पत्र 'सुधारक' से व्यवस्थापक, सम्पादक, और मुद्रक के रूप में जुड़े हुए हैं। सन् १९७३ में आपने 'सर्वहितकारी' साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया जो कालान्तर में आर्य - प्रतिनिधिसभा (हरयाणा) का मुखपत्र बना।

आपकी अन्य पुस्तकें हैं - आसनों का व्यायाम, वेदविमर्श, नीतिशतकम् पर संस्कृत और हिन्दी में सुबोधिनी टीका, गुरुकुल शतकम्, और विरजानन्द शतकम् (पद्यकाव्यों) का हिन्दी अनुवाद करके प्रकाशित किया।

वर्तमान में आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्त्ता प्रधान हैं।

पताः - आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, गोहाना मार्ग,
रोहतक - १२४ ००१ (हरयाणा)
दूरभाष - (०१२६२) - ७७८७४ (कार्या.), ७६६७४ (घर)
मोबाइल - ९८१२० २२४४०, ९८१३०८८४४०

पं. अशोक कौशिक

आपका जन्म १० अगस्त १९२६ को उत्तरांचल के अल्मोड़ा नगर में हुआ।

आपने व्याकरण-मध्यमा (वाराणसी), बी. ए. (पंजाब विश्वविद्यालय), एम. ए. (मेरठ वि. विद्यालय) की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

आरम्भ में आप ' राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ' के प्रचारक रहे । पश्चात् सेवाभारती, भारतीय साहित्यकार संघ, शाश्वत संस्कृति परिषद्, संस्कृत - सेवा संघ, आर्य - समाज आदि संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे ।

आपने अनेक महापुरुषों की जीवनियां लिखी हैं । जैसे - योगिराज श्री कृष्ण, पं.म. मो. मालवीय, युगपुरुष सावरकर, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, विनोबा भावे, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, क्रान्तिवीर सुभाष, आर्य समाज के सौ रत्न, आर्य समाज की पांच विभूतियाँ, लौह ललना इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, महात्मा बुद्ध, छत्रपति शिवाजी इत्यादि । घरेलू नुस्खे, हृदय रोग, कैंसर, रक्तचाप, मधुमेह इत्यादि आयुर्विज्ञान की पुस्तकें लिखीं ।

बाल - साहित्य में आपने बोध कथाएं, वेताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी, पशुलोक, मूर्खपुराण, हितोपदेश, हंसो हंसाओ, हरिसिंह नलवा इत्यादि पुस्तकें लिखीं ।

आपने रघुवंश, १०८ उपनिषद्, कौटिल्य अर्थशास्त्र आदि दो दर्जन से अधिक संस्कृत-ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया है । स्वेट मार्डन आदि की अनेक अंग्रेजी पुस्तकों का भी हिन्दी में अनुवाद किया है ।

आपने मुहावरा कोष, लोकोक्तिकोष, पी.टी. आदि पुस्तकें भी लिखी हैं। अनेक ग्रन्थों का शुद्ध सम्पादन किया है । जैसे-गुरुदत्त अभिनन्दन ग्रन्थ, भारतीय समाज शास्त्र, गुरुदत्त श्रद्धांजलि अंक, गुरुदत्त ग्रन्थावली (१० खण्डों में), जीवात्मा, सावरकर ग्रन्थावली (४ खण्डों में), प्रकाशवीर शास्त्री स्मृतिग्रन्थ (दो खण्ड) ।

वर्तमान में आप ' शाश्वत वाणी ' (मासिक पत्र) के सम्पादक हैं । सन् १९८५ से १९९७ तक ' आर्य जगत् ' (साप्ताहिक) का सम्पादन करते रहे । आपको ' प्रज्ञा सम्मान ', ' आ. चतुरसेन शास्त्री सम्मान ' आदि सम्मानों से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका है ।

पता :- ३८५, साइट१, विकासपुरी, नई दिल्ली - ११००१८

दूरभाष :- (०११) - ५५१५०१२

आचार्य विरजानन्द दैवकरणि

आपका जन्म २ दिसम्बर १९४८ को हरयाणा में महेन्द्रगढ़ जिले के भगड्याणा ग्राम में श्री देवकरण यादव एवं श्रीमती सरियाँ देवी के घर हुआ।

आठवीं कक्षा तक गांव में रहकर अध्ययन के पश्चात् गुरुकुल झज्जर में प्रवेश लिया, जहाँ से आपने शास्त्री व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य, इतिहासाचार्य, सिद्धान्त -वाचस्पति की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

प्राचीन लिपि - ब्राह्मी, खरोष्टी, यवनानी (ग्रीक) तथा उर्दू, अरबी आदि पढ़ने समझने की भी पूर्णक्षमता प्राप्त की है। प्राचीन मुद्राओं को पढ़ने की पूर्णक्षमता है।

गुरुकुल झज्जर के पुरातत्त्व-संग्रहालय में आपने २७ वर्ष तक कार्य किया। प्राचीन मुद्रा, मुद्रांक, ताम्रलेख, शिलालेख पाण्डुलिपियों का संग्रह, पठन, वर्गीकरण तथा प्राचीन मूर्ति (प्रस्तर मृन्मूर्ति), मणके, मुद्रासांचे, शस्त्रास्त्र आदि का संग्रह करके पुरातत्व-विभाग को विश्वप्रसिद्ध बनाया।

सांस्कृतिक तथा पुरातात्त्विक यात्राओं में आपकी विशेष रुचि रही है। फलतः आपने सिंगापुर, सुमात्रा, जावा आदि देशों का भ्रमण भी किया।

सत्यार्थप्रकाश (ताम्रपट्ट-संस्करण); महर्षि दयानन्द सरस्वती का सिद्धान्त; भारतीय इतिहास के स्रोत ; ओम् का प्राचीन स्वरूप - स्वस्तिक चिह्न (卐) ; कुतुबमीनार : एक रहस्योद्घाटन ; छन्दःशास्त्र का हिन्दी भाष्य आदि। गुरुकुल गौतमनगर में रहकर यजुर्वेद एवं सामवेद को ताम्रपत्रों पर खुदवाकर पुस्तक रूप में भी प्रकाशित करवाया है। गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित होनेवाले बहुत से ग्रन्थों का आपने सम्पादन किया है।आप सार्वदेशिक सभा में धर्मार्य सभा के सदस्य हैं।आर्य-जगत् में आप जैसे पुरातत्त्व विशेषज्ञ दुर्लभ हैं।

पता :- प्राचीन भारतीय- इतिहास-शोध-परिषद्,
११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई-दिल्ली - ११००४९
दूरभाष - (०११) ६५६७०७४

प्रा. (डॉ.) कुशलदेव शास्त्री

आपका जन्म ६ जून १९५१ को महाराष्ट्र में लातूर जिले के वडवलनागनाथ ग्राम में श्री शंकरदेव माधवराव कापसे एवं श्रीमती प्रयाग बाई के यहाँ हुआ।

आपने व्याकरणाचार्य (गुरुकुल झज्झर), विद्याभास्कर (गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर), एम. ए. (आगरा विश्वविद्यालय), शास्त्री (भारतीय विद्याभवन मुम्बई), पी-एच.डी. (अम्बेडकर वि. विद्यालय औरंगाबाद) की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

आप नेताजी सुभाषचन्द्र बोस महाविद्यालय नान्देड़ में हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

शास्त्री जी की स्वामी दयानन्द के जीवन और व्यक्तित्व- विषयक गवेषणा में विशेष रुचि है, जो कि वेदवाणी के दयानन्द विशेषांकों में प्रकाशित उनके लेखों से ज्ञात होती है। जैसे - ऋषि दयानन्द को लिखा गया मराठी पत्र (१९८३), विष्णुशास्त्री की निबन्धमाला में ऋषि दयानन्द विषयक संदर्भ (अनुवाद), ऋषिदयानन्द के महाराष्ट्रीय सहयोगी, स्वामी दयानन्द और दादा साहब खापर्डे। पं. गोपालराव हरि की मराठी पुस्तक 'पं. स्वामी श्रीमद् दयानन्द सरस्वती' का हिन्दी अनुवाद किया, जो वेदवाणी के १९८२ के विशेषांक में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार अन्य घटनाओं का आप २० वर्षो सें अनुवाद करके विभिन्न पत्रों में प्रकाशित करवाते रहे हैं।आपने बहुत सी अनुसन्धान गोष्ठियों में भी आलेख पढ़े हैं। जैसे - निजाम रियासत में विभिन्न भाषाओं की स्थिति, आर्य समाज और डॉ. भीमराव अम्बेडकर, तथाकथित फलित ज्योतिष पक्ष और विपक्ष, वेदों में वायुयान सिद्धान्त व उसके अनुप्रयोग, सत्यार्थप्रकाश और महाराष्ट्र इत्यादि।

गोरक्षा आन्दोलन में आप तीन महीने कारावास में रहे। आप महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधिसभा के मुखपत्र 'वैदिक गर्जना' के सम्पादक हैं।

पता :- सुभाषचन्द्र बोस महाविद्यालय, नान्देड़, ४३१६०१ (महा.)

दूरभाष - (०२४६२) - ४२०१७, ५०९२३

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

आपका जन्म २० अगस्त १९४६ को बिहार प्रान्त में सीवान जिले के दोन नामक ग्राम में पं. जगन्नाथ शास्त्री (आर्य पुरोहित) के घर हुआ ।

आपने शास्त्री , आचार्य , एम. ए., पी- एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। गुरुकुल अयोध्या एवं पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के आश्रम में विशेष अध्ययन किया ।

सन् १९७३ से आप फीरोजगांधी कॉलेज रायबरेली में संस्कृत के प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं । बहुत से छात्रों को पी-एच.डी. के लिए निर्देशन किया है ।

विगत २५ वर्षो से निरन्तर आर्यसमाज के मंचों से आर्य एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रवचनों के माध्यम से विशेष प्रचार कर रहे हैं ।

आपने संस्कृत गीतमाला, हास्यविलास (संस्कृत व्यङ्ग्य काव्य), संस्कृत व्यङ्ग्य विलास, 'आचार्य महीधर एवं स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य' (पी-एच.डी. शोध-ग्रन्थ) आदि ग्रन्थ लिखे हैं। डॉ. मित्र संस्कृत में हास्य व्यङ्ग्य की रचनाएं लिखने के कारण विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं ।

आपकी ऐसी कृतियां गत ३० वर्षों से संस्कृत की पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । राष्ट्रीय स्तर की दर्जनों संस्कृत - गोष्ठियों में आपने शोधपत्र वांचे हैं । कवि - सम्मेलनों, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि पर भी आपकी हास्य रचनाओं का प्रसारण होता रहता है ।

अनेक संस्कृत संस्थानों ने आपकी कृतियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है ।

पता :- वेद मन्दिरम् , बी - २९, आनन्दनगर, जेल रोड,
रायबरेली - २२९००१ (उ. प्र.), दूरभाष - (०५३५) - २०५३४५

आचार्य नन्दकिशोर ब्रह्मचारी

आपका जन्म २५ मई १९५१ को हुआ।

आपने ब्राह्म महाविद्यालय हिसार सें विद्यावाचस्पत्ति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से एम. ए. (वेद, हिन्दी) की उपाधियां प्राप्त कीं। ब्रह्मचारी जी गुरुकुल महा. ज्वालापुर के दिवंगत आचार्य नारायण मुनि को अपना गुरु मानते हैं।

आपने डॉ. सत्यकेतु द्वारा सम्पादित सप्तखण्डात्मक आर्य समाज के इतिहास - विषयक आधार भूत सामग्री को एकत्रित करने का अभूतपूर्व कार्य किया है। बहुत सें स्थानों पर जाकर दुर्लभ पुस्तकों, संस्थाओं के विवरणों तथा अन्य दस्तावेजों को इतिहास लेखक के लिए सुलभ कराया।

आप गुरुकुल विराट नगर नैपाल के संस्थापक सदस्य, अनीता - आर्ष-प्रकाशन, पानीपत के प्रेरक ; पं. रामप्रसाद वेदालङ्कार -न्यास के ट्रस्टी, वैद्य हंसराज जी द्वारा संस्थापित कल्पतरु ट्रस्ट के ट्रस्टी, सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रचार मन्त्री, वेदमन्दिर आर्य समाज होशंगाबाद के संस्थापक, दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ जमानी (म. प्र.) के संस्थापक, सार्व. दया. सं. वान. ज्वालापुर हरिद्वार के आचार्य, मराठी एवं नैपाली भाषा में आर्य साहित्य के प्रोत्साहक हैं। प्रायः सब विद्वानों, संन्यासियों का सान्निध्य प्राप्त है।

आपने मातृ-गौरव, पितृ-गौरव, विद्या-गौरव आदि एक दर्जन पुस्तकें लिखी हैं ; जो बहुत ही प्रेरक हैं।

पता :- वेद - मन्दिर, दयानन्द नगरी, ज्वालापुर,
हरिद्वार - २४९४०७ (उत्तरांचल)

श्री राधेश्याम आर्य

श्री आर्य का जन्म १० फरबरी १९४९ को उत्तर - प्रदेश में सुलतानपुर जिले के पूरे दरियावलाल ग्राम में श्री भगवतप्रसाद श्रीवास्तव एवं श्रीमती चन्द्रवती के घर हुआ।

आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की।

आपका व्यवसाय वकालत है। साथ ही आप एक सहृदय कवि हैं।

आर्य-समाज, ऋषि दयानन्द तथा अन्य विषयों पर लिखित आपकी सहस्रों कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। आप विगत २२ वर्षो से 'रश्मिरथी' नामक काव्यप्रधान द्विमासिक पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। गत- चार वर्षो से 'आर्य-दर्पण' नामक पाक्षिक पत्रिका का भी सम्पादन कर रहे हैं।

आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं-भारतभूमि, हिमालय, श्रद्धा के फूल, विश्वबन्ध बापू, महर्षि दयानन्द, नया सवेरा लाएं, आर्यमा, आर्य-समाज, अभिमन्यु, अमर बलिदान, रणाग्नि, प्रभाञ्जलि आदि। कर्णवीर, उन्मेष आदि लगभग दो दर्जन पुस्तकें अप्रकाशित हैं।

आपने रश्मि कुञ्ज, रश्मिकण आदि दर्जनों पुस्तकों का सम्पादन भी किया है।

आपकी रचनाएं / कविताएं आकाशवाणी लखनऊ से प्रायः प्रसारित होती रहती हैं।

साहित्यिक सेवाओं के लिए शीर्षस्थ विभिन्न साहित्यिक - संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया है।

पता : सम्पादक - आर्यदर्पण (पाक्षिक) मुसाफिरखाना,

सुलतानपुर - २२७५१३ (उ. प्र.) दूरभाष : (०५३६१) - २२११९

छाजूराम शर्मा शास्त्री

आपका जन्म सन् १९२१ में उ.प्र. में बुलन्दशहर जिले के बगसरा ग्राम में हुआ।

आपने शास्त्री, वैद्यविशारद (आर. एम.पी.) की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। सन् १९५५ में आर्यसमाज से प्रभावित हुए।

आपने वैदिक-प्रवचन, वैदिक - संस्कार, धर्म शिक्षा, वैदिक - सिद्धान्तों पर गीत, भजन, लेख आदि के माध्यम से प्रचार किया। पांच वर्ष तक शुद्धि कार्य में लगभग तीन सहस्र अहिन्दुओं को हिन्दुमत में प्रविष्ट किया। उत्तरभारत के सभी हिन्दी - भाषी प्रान्तों में प्रचार कार्य किया।

आपके द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें - रामायण परिचय, तुलसी-रामायण समीक्षा, रामायण के गीत, नारी जागरण गीत, ज्ञान गीतावली, सत्संग भजनावली, दयानन्द भजनावली, आत्मचिन्तन का वैज्ञानिक आधार, पाखण्ड-खण्डिनी, धर्म के दस लक्षण, आदर्श मित्रता (नाटक), सिद्धयोग संग्रह (आयुर्वैदिक परीक्षित प्रयोग) इत्यादि हैं।

आपने अनेकत्र धर्मार्थ-औषधालय भी चलाये हैं।

पता :- १२६, जनता डी.डी.ए. फ्लैट, पावर हाउस,
बदरपुर, नई-दिल्ली - ११००४४

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

आपका जन्म कार्त्तिक शु. १४/१९८४ वि. (सन् १९२७) को उ.प्र. में सुलतानपुर जिले के झौआरा ग्राम में पं. नागेश्वर उपाध्याय के घर हुआ।

कक्षा ५ तक आपकी शिक्षा गाँव में हुई। पश्चात् कोलकाता आकर आपने संस्कृत का अध्ययन किया और अर्थशास्त्र में एम. ए.।

३५ वर्षों तक जयपुरिया कॉलेज कोलकाता में आपने अर्थशास्त्र का अध्यापन किया। ३० वर्ष तक आर्यसमाज कोलकाता के आचार्य भी रहे। आर्य-समाज बड़ा-बाजार के भी २५ वर्ष तक आचार्य रहे। वैदिक सिद्धान्तों का आपने प्रखरता से प्रचार किया। साथ ही आपने बहुत से महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी लिखे हैं। जैसे - श्रावणी - उपाकर्म, भगवान् श्री कृष्ण, मूर्तिपूजा समीक्षा, अर्थ-शौच,

आर्यसमाज से परिचय, कम्युनिष्टों के मोर्चे पर स्वामी दयानन्द, वेदों में गोरक्षा या गोवध, श्राद्ध तर्पण, कर्मकाण्ड, हंसामत की मिथ्यावाणी, वेद में नारी, काशीशास्त्रार्थ इत्यादि। सभी ग्रन्थ आर्यसमाज कोलकाता से प्रकाशित हुए।

आप आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। अनेक वर्षो तक 'आर्य-संसार' (मासिक-पत्र) के सम्पादक रहे। आपका लिखा 'आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास' अपने विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

महत्त्वपूर्ण सेवाओं के लिए अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है।

पता :- पी - ३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम, पो. लेक टाउन

कोलकाता - ७०००८९ (प.बं.), दूरभाष - (०३३) - ५२२२६३६,

ईमेल : ukupadhyaya@yahoo.com.in

यशःपाल शास्त्री

आपका जन्म उत्तर - प्रदेश में बिजनौर जिले के मोरना स्थान पर चैत्र शु. ८/२००८ वि. को श्री कूडासिंह के घर हुआ।

आपने विद्याभास्कर, शास्त्री, साहित्याचार्य, प्रभाकर, साहित्यरत्न, एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी) की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

आप डी.ए.वी. कॉलेज आदि अनेक शिक्षण संस्थाओं में अध्यापक एवं प्राचार्य रहे।

आपने निःशुल्क सेवा के रूप में अनेक कॉलेजों में जाकर संस्कृत -भाषा का शिक्षण किया। पंजाब में अंग्रेजी विषय एवं अंग्रेजी माध्यम के विरोध में अनेक विशाल सम्मेलन किये।

संस्कृत एवं हिन्दी की सरल एवं परीक्षोपयोगी पुस्तकें लिखीं। कक्षा पहली से बारहवीं तक पढ़ाई जाने वाली धर्म- शिक्षा पुस्तकमाला का लेखन व सम्पादन किया।

विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में साहित्य, समाज, राजनीति एवं आर्य-सिद्धान्तों पर शताधिक लेख लिखे।

आर्य-समाज, संस्कृत व हिन्दी की सेवाओं के उपलक्ष्य में अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है।

पता :- बी. ५८, बुध- बाजार, विकास नगर, नई-दिल्ली - ११००५९

दूरभाष : (०११)-५६४४९०१

श्री गजानन्द आर्य

आपका जन्म ९ अगस्त १९३० को राजस्थान के शेरड़ा ग्राम में श्री लालमन आर्य के घर हुआ।

गांव में प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् हिसार के सी. ए. बी. स्कूल में और शेष अध्ययन कोलकाता के कॉलेज में पूरा किया।

कोलकाता में अपने उद्योग के साथ-साथ आपकी समाज सुधार एवं सेवा में भी विशेष रुचि है। आप सिद्धहस्त लेखक एवं विचारक भी हैं। आपने वीरांगना महारानी कैकेयी, आर्य-समाजोदय, आर्य-समाज की मान्यताएं, मानवनिर्माण के स्वर्णसिद्धान्त आदि पुस्तकें लिखी हैं। साथ ही आपके विद्वत्तापूर्ण लेख आर्य-समाज के पत्रों में प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं।

आप १९८६ से १४ वर्ष तक 'परोपकारिणी सभा' के मन्त्री रहे। गतवर्ष आप इस सभा के प्रधान मनोनीत हुए। आप अन्य अनेक संस्थाओं को भी सहयोग करते हैं।

पता :- सुक्षिति, १९-बालीगंज, सर्क्यूलर रोड, कोलकाता-७०००१९ (प. बं.)

दूरभाष :- (०३३) - ४७५०६१४, ४७५४३८६

ब्र. अग्निव्रत नैष्ठिक

आपका जन्म १० अक्टूबर १९६२ को उ.प्र. में हाथरस जिले के ऐंहन ग्राम में श्री इन्द्रपालसिंह सिसोदिया एवं श्रीमती ओंवती देवी के घर हुआ। आपका पूर्व नाम प्रदीप कुमार सिसोदिया था।

आपने बी. एस - सी., पशुचिकित्सक की उपाधि प्राप्त कर गुरुकुलों में संस्कृत-व्याकरण (आंशिक) पढ़ा। वेद- वेदाङ्गों एवं अनार्ष ग्रन्थों का भी विहङ्गमावलोकन किया।

वैदिक - सिद्धान्तों के प्रवचन एवं कुरीतियों, आडम्बरों के खण्डन के साथ-साथ विभिन्न पत्रिकाओं में आपके गो-कृषि-पर्यावरण-रक्षा, अर्थशुचिता, नैतिकता, पाखण्ड-आडम्बर-खण्डन आदि विषयों पर खोजपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

पता :- आर्य-समाज मन्दिर, भीनमाल, जि. जालोर - ३४३०२९ (राज.)

दूरभाष : (०२९६९) - २२२३८, २२५७३ पी.पी.

देवनारायण भारद्वाज

आपका जन्म श्रावण शु. ५/१९९४ वि. (सन्-१९३७) को उत्तर-प्रदेश में शाहजहाँपुर जिले के कोल्हापुर नामक ग्राम में श्री प्रभुदयाल एवं श्रीमती मुन्नीदेवी के घर हुआ।

आपने बी. एस.सी. (कृषि), पी.ए.एस., जी.बी. पन्तनगर विश्व-विद्यालय की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप पहले विज्ञान शिक्षक, पश्चात् स. कृषि निदेशक रहे। सन् १९९६ में सेवा-निवृत हुए।

आप कवि हैं। आपकी अनेक काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। यथा - स्वामी स्वराज्य-संग्रामी, प्रवर्त्तक, मुक्तायन, श्रुतिशाला, यज्ञ-अर्चना, गीत-स्तुति, बिन्दु-बिन्दु बोध, बोध-यामिनी, गीताहुति, साम-वन्दना, साम-श्रद्धा, मन्तव्यलता, अथर्वप्रभा, वेदवन्दना इत्यादि। विभिन्न आर्यपत्रिकाओं में लेख एवं कविताएं प्रकाशित होती रहती हैं। आपके लेख आकाशवाणी मथुरा एवं आगरा से भी प्रसारित होते रहते हैं। आप 'वेद-मनीषा-न्यास' के अध्यक्ष हैं।

पता :- वरेण्यम् एम. आई. जी., प्लाट नं. ४५,
अवन्तिका (ए.डी.ए.) कालोनी, रामघाट मार्ग,
अलीगढ - २००२००१ (उ. प्र.)

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

प्रसिद्ध पत्रकार और विचारक डॉ. वैदिक का जन्म ३० दिसम्बर १९४४ को मध्यप्रदेश में इन्दोर के आर्य कार्यकर्त्ता श्री जगदीशप्रसाद वैदिक के घर हुआ।

आपने इन्दौर से राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। १९६४ में दिल्ली आने पर हिन्दी माध्यम से राजनीति शास्त्र में शोध करने के लिए आपको कठिन संघर्ष करना पड़ा। अन्ततः आपको हिन्दी -माध्यम से शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने की अनुमति मिल गयी। सन् १९७९ में आपने 'अफगानिस्तान में सोवियत-अमेरिकी प्रतिस्पर्धा' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

आप १९७४ से १९८५ तक नवभारत टाइम्स के सम्पादकीय विभाग में रहे। आजकल समाचार एजेंसी 'भाषा' के सम्पादक हैं। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रिय-विषयों पर सैकड़ों लेख, हजारों सम्पादकीय टिप्पणियां, दर्जनों शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। संयुक्तराष्ट्र संघ में १९९९ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। शोध प्रबन्धक के अतिरिक्त आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। जैसे - 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम', 'अंग्रेजी हटाओ: क्यों और कैसे ?', 'वर्तमान भारत' इत्यादि। 'हिन्दी पत्रकारिता' में आर्य समाज के पत्रों और पत्रकारों पर मूल्यवान् सामग्री संगृहीत की गयी है।

आर्य समाज के विविध मंचों से आपके वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान बहुत तर्क पूर्ण एवं प्रामाणिक होते हैं।

आपके कार्यो पर आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

पता :- ए- १९, प्रेस एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००१७,

दूरभाष :-(घर)-(०११) - ६५१ ७२९५, (कार्यालय) -(०११) - ४६४५०३०

डॉ. सत्यदेव आर्य

आपका जन्म २६ दिसम्बर १९१२ को जोधपुर (राज.) में कर्मठ आर्य-कार्यकर्ता श्री च्यवन आर्य के घर हुआ।

आपने एम. बी. बी. एस. (कलकत्ता), डी.पी-एच. (इङ्गलैण्ड) की उपाधियां प्राप्त कीं।

आपने जोधपुर राज्य एवं राजस्थान राज्य के जनस्वास्थ्य-विभाग में कार्य किया तथा स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक पद से १९७१ में निवृत हुए।

सेवा - निवृत्ति के पश्चात् आप स्वाध्याय, समाज-सेवा, लेखन एवं प्रवचन आदि कार्यों में विशेषरूप से प्रवृत्त हुए। 'वेदों में विज्ञान' विषयक आपके लेख एवं प्रवचन बहुत रोचक और बोधगम्य सिद्ध होते रहे हैं।

आपने अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखी हैं। जैसे - हमारा आहार, स्वास्थ्य-विज्ञान, वैदिक संध्या मीमांसा, उपासना-रहस्य, शिवसंकल्प- मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या, ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों की विशिष्ट व्याख्या इत्यादि। आपके अनेक उपयोगी लेख आर्य पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

पता :- एस.बी. बापूनगर, गांधीनगर मार्ग, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

दूरभाष :- (०१४१) - ५१४२७७

डॉ. कोडूरि सुब्बाराव

आपका जन्म ३० दिसम्बर १९४३ को आं. प्र. में श्री वेंकटराजु एवं श्रीमती नागरत्नम्मा के यहाँ हुआ।

आपने ग्यारहवीं कक्षा तक अध्ययन के पश्चात् प्राकृतिक चिकित्सक, होमियो चिकित्सिक की उपाधियां प्राप्त कीं।

आपने अग्निहोत्र का रासायनिक विश्लेषण, जल-चिकित्सा, सूर्य-चिकित्सा आदि बारह पुस्तकें लिखी हैं।

आपका जीवन आडम्बर-रहित है। आपकी आय का अधिकांश भाग वैदिक-धर्म के प्रचार में व्यय होता है। "मेरे बाद भी मेरे धन का सदुपयोग हो" - इस उद्देश्य से आपने 'गायत्री आश्रम ट्रस्ट' का पंजीकरण करवाया है। इसी ट्रस्ट से आपकी तथा अन्य लेखकों की कुल ३० पुस्तकों का मुद्रण / प्रकाशन हो चुका है।

आजकल अतिक्षीण शारीरिक स्थिति में आप आर्ष-गुरुकुल वड्लूर, कामारेड्डी में मुमुक्षु की तरह ईश्वर के ध्यान में जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

पता : आर्ष गुरुकुल वड्लूर, कामारेड्डि,
जि. निजामाबाद - ५०३१११ (आं. प्र.)

डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री

आपका जन्म २० जनवरी १९६६ को उ. प्र. में गाजियाबाद जिले के फजलगढ़ ग्राम में श्री जयप्रकाश के कृषक परिवार में हुआ।

आपने शास्त्री, एम.ए. (संस्कृत), पी-एच.डी., डी.लिट्., धर्ममार्तण्ड, पौरोहित्य प्रवर की उपाधियां प्राप्त कीं।

आपने 'वैदिक उपमा कोश' नामक ग्रन्थ की रचना की है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। तीन वर्षों से गुरुकुल वि. विद्यालय कांगड़ी की मासिक शोध-पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं।

आर्यसमाज एवं अन्य संस्थाओं में वैदिक धर्म, संस्कृति, दर्शन आदि पर सैकड़ों व्याख्यान दिये हैं। बड़े बड़े यज्ञों में ब्रह्मा का कार्य किया है। आप वेदकथा एवं रामकथा करने में दक्ष हैं।

पता :- ३० योगी विहार कॉलोनी, (क्लासिक रेसिडेंसी के पीछे),
ज्वालापुर, हरिद्वार - २४९४०४ (उत्तरांचल),
दूरभाष :- (०१३३) - ४२०२२८

गोविन्द घनश्याम मैंदरकर

आपका जन्म १३ अगस्त १९३० को महाराष्ट के उस्मानाबाद में श्री घनश्याम एवं श्रीमती लक्ष्मीबाई के घर हुआ।

आपने बी. एस-सी., बी. एड की परीक्षाएं उत्तीर्णकर महाराष्ट्र शासन के विद्यालयों में अध्यापन किया। प्राचार्य के पद से १९८८ में सेवानिवृत हुए।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप आर्यसमाज उस्मानाबाद के सदस्य एवं छह वर्ष से प्रधान हैं।

आपने लक्ष्य बनाया है, कि उच्चकोटि का आर्ष तथा वैदिक - साहित्य, जो हिन्दी में उपलब्ध है, किन्तु मराठी में नहीं है, उसका मराठी में अनुवाद प्रकाशित किया जाय। इस योजना के अनुसार आपने निम्नलिखित पुस्तकों का

अनुवाद प्रकाशित किया है --

१. मनुस्मृति - (डॉ. सुरेन्द्रकुमार - झज्जर)

२. मनुस्मृति का विरोध क्यों ?

३. ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर - ९ उपनिषद् ।

४. आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या (विजयविहारी माथुर)

५. अद्वैत - मत - खण्डन (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, दिल्ली)

६. वेदों में राष्ट्रभक्ति, वैदिक राष्ट्रिय ऋचाएं, वेद परिचायिका, पुरुषार्थी बनो, वेद ईश्वरीय ज्ञान (लेखक - डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल) ।

७. मातृगौरव, पितृगौरव, आचार्य गौरव, अतिथिगौरव (ले.-ब्र. नन्दकिशोर)

८. स्वामी संकल्पानन्द की छह पुस्तकें तथा डॉ. कुशलदेव शास्त्री के लेख आदि

९. स्थानीय आकाशवाणी पर लगभग दो वर्ष (प्रतिदिन पाँच मिनट) उपनिषदों की व्याख्या की ।

पता : नेहरू चौक, उस्मानाबाद - ४१३००१ (महा.)

दूरभाष : (०२४७२) - २२७६१९, २२४५७१

५
आर्य - पुरोहित

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

पं कमलेश कुमार आर्य अग्निहोत्री

आपका जन्म १ सितम्बर १९३१ को राजस्थान में नागौर जिले के मारोठ नामक ग्राम में श्री दौलतराम एवं श्रीमती सुबाबाई के वैष्णव-मतानुयायी परिवार में हुआ।

उस समय प्रचलित रुढियों के कारण आपका विवाह १३ वर्ष की अल्पायु में हो जाने, १५ वर्ष की अवस्था में पिता जी का देहान्त हो जाने पर पूरे परिवार का आर्थिक भार आपके ऊपर आ जाने से आप विद्यालय में केवल तृतीयकक्षा तक ही पढ़ सके। कालान्तर में महात्मा विरक्तदेव जी की प्रेरणा से प्रायः सम्पूर्ण वैदिक एवं आर्यग्रन्थों का हिन्दी-भाषा-भाष्यों के माध्यम से स्वाध्याय तथा मनन करके सिद्धान्तशास्त्री बने। आपका व्यवसाय विशेषरूप से चित्रकारी रहा।

यद्यपि सत्यार्थप्रकाश आदि के अध्ययन एवं आचार्य भद्रसेन जी आदि के संग से आप आंशिकरूप से वैदिकधर्म का प्रचार एवं भजनोपदेश आदि तो १९५३ से ही कर रहे थे, परन्तु सन् १९७८ से चित्रकारी का व्यवसाय छोड़कर पूरा समय वैदिक प्रचार एवं पौरोहित्य में लगाने लगे। २० सितम्बर १९८० से आप अहमदाबाद (गुजरात) में वाणी एवं लेखनी से वैदिक प्रचार कर रहे हैं। आप प्रतिदिन हवन एवं दोनों समय संध्या करते हैं।

१० अप्रैल १९८६ से आर्यवन रोजड़ में स्वामी सत्यपति जी द्वारा चलाये गये दर्शन-शिबिर में आप प्रमुख सूत्रधार थे।

अहमदाबाद प्रवास की अवधि में अब तक आप ३१ हजार से अधिक प्रवचन कर चुके हैं, जो वैदिक धर्म-प्रचार के क्षेत्र में एक कीर्तिमान है। एक ही वक्ता (आप) को २१ वर्षो से प्रतिदिन १५० से २०० तक श्रोता दैनिक सत्संग में सुनने आ रहे हैं। आज भी आप प्रतिदिन ४ से ९ प्रवचन/कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे हैं। आपको स्वेच्छा से यजमान जो दक्षिणा देता है, वही स्वीकार्य होती है। देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप वैदिक-प्रचार द्वारा आपने हजारों व्यक्तियों को अण्डे, मांस, मछली, शराब, सिगरेट, बीड़ी, जूआ अदि अभक्ष्य पदार्थो एवं दुर्व्यसनों से मुक्त किया और आर्य-प्रेमी बनाया। लगभग ५०० परिवारों में यज्ञ होने लगा है। जो आर्यसमाज के नाम से बचते थे, वे आज आर्यसमाज के निष्ठावान् कार्यकर्ता अधिकारी बने हुए हैं।

आप प्रभावी वक्ता, सुयोग्य पुरोहित, कुशल लेखक, कवि, गायक, वादक, कथाकार एवं आसन-व्यायाम, प्राणायाम, ध्यान आदि के सुयोग्य प्रशिक्षक हैं ।

आपने एक सौ एक पुस्तिकाएं लिखकर प्रकाशित करवायी हैं, जो सामयिक विभिन्न विषयों पर हैं । इन पुस्तकों के प्रकाशन के लिए १९९७ में 'वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास ' की स्थापना की गयी है । अब ये पुस्तकें न्यास द्वारा प्रकाशित होकर भारत के विभिन्न नगरों, ग्रामों एवं विदेशों में निःशुल्क भेजी जाती हैं ।

आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं सैद्धान्तिक चर्चा (दस भाग), कर्मफल -चक्र, वैदिक भजन -गीत माला (५ भाग), बन्धन का कारण, आश्रम मर्यादा, मानस के मोती, मोक्ष का मार्ग, वाणी का उपयोग, मेरी जीवन-यात्रा, उत्तर-रामायण समीक्षा, महाभारत समीक्षा, वैकुण्ठपुरी का पत्र इत्यादि ।

पताः - आर्य समाज मन्दिर, देवाली बाजार, पो. कुबेर नगर,

अहमदाबाद - ३८२३४० (गुजरात) दूरभाष - (०७९) - २८१३७१३

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

आपने व्याकरणाचार्य, एम. ए., बी. एड. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

आपने कुछ समय शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर में सहायक प्राध्यापक के रूप में अध्यापन किया । एन.एस. एस. के अन्तर्गत ग्रामों में शिविर लगाये।

देश-देशान्तर में वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार के अतिरिक्त दिल्ली एवं अन्य नगरों में आपके ब्रह्मत्व में शताधिक महायज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं । आपने अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की है । गुवाहटी (असम) में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का सफलता पूर्वक संचालन करके एक मास में पचास विद्यार्थियों को पुरोहित बनाया। समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर अनेक बार निबन्धलेखन एवं भाषण-प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया है । संस्कृतप्रशिक्षण-शिविर भी लगाये हैं । अनेक समाजों तथा खुले पार्कों में निरन्तर वैदिक -प्रवचन का कार्य चल रहा है । आपकी वाणी में माधुर्य, प्रसाद एवं ओज का समावेश है ।

आपकी रचनाओं में मौलिक-चिन्तन झलकता है । अनेक पत्र-पत्रिकाओं

में आपके सैकड़ों लेख प्रकाशित हो चुके हैं । अनेक ऑडियो कैसेट भी बनाये हैं । आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं - यज्ञालोक, मनन कर मन मेरे, प्रेरणा के फूल, आहार विहार, एक वैज्ञानिक विवेचन, सुखी जीवन के सूत्र आदि ।

पता :- आर्य-समाज, बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी, नई-दिल्ली - ११००१८

दूरभाष : - (०११) - ५५१६९९६

ब्र. राजेन्द्र आचार्य

आपका जन्म जम्मू - कश्मीर में ऊधमपुर जिले के पौराणिक ब्राह्मण परिवार में हुआ ।

प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् लुधियाना के संस्कृत विद्यालय में पौराणिक कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष (जन्मकुण्डली आदि) का एक वर्ष अध्ययन किया ।

सरहिन्द में ब्र. नचिकेता जी के सम्पर्क एवं विचार विमर्श तथा उनके आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित होकर पौराणिक क्रिया-कलाप छोड़कर वैदिक-संध्योपासना प्रारम्भ कर दी । दोनों नान्देड़ (महाराष्ट्र) के आर्ष-गुरुकुल में अध्ययन करने लगे । पश्चात् आपने झज्जर-गुरुकुल एवं गुरुकुल ततारपुर में अध्ययन किया । सन् १९८९ में सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी से शास्त्री की उपाधि प्राप्त करके दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ से दर्शनाचार्य किया ।

गुरुकुल होशंगाबाद में अध्ययन - अध्यापन करते हुए जब आपने अनुभव किया कि निर्धन आदिवासियों को ईसाई बनाया जा रहा है, तो उसी क्षेत्र में विकास-कार्य करने का निश्चय किया ।

१० एकड़ भूमि पर 'जनकल्याण आश्रम' पंजीकृत कराया । आदिवासी बच्चों की शिक्षा के लिए चार स्कूल चलाये हैं। चरित्रनिर्माण, देशभक्ति, कुरीतिनिवारण के शिविर भी लगाते हैं । बचे हुए समय में आप वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार, पौरोहित्य आदि कार्य करते हैं । आजकल आप पश्चिम विहार के आर्य समाज में धर्माचार्य एवं पुरोहित का कार्य कर रहे हैं ।

पता : - आर्य-समाज, ए - ३, पश्चिम -विहार, दिल्ली - ११००६३

दूरभाष - (०११) - २५२५१८८०

पं. वेदप्रकाश वैदिक

आपका जन्म २अप्रैल १९३७ को उ. प्र. में मैनपुरी जिले के घिरोर ग्राम में आचार्य रामकुमार जी आर्य के यहाँ हुआ।

आपका अध्ययन गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ।

आप उद्योग एवं व्यापार करते हैं।

आपके लेख एवं कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आकाशवाणी आगरा, मथुरा, दूरदर्शन लखनऊ आदि पर भी आपके लेख प्रसारित होते रहते हैं। तत्त्वमसि एवं इन्द्रधनुषी कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पुरोहित एवं उपदेशक के रूप में विभिन्न आर्य-समाजों एवं संस्थाओं में जाते रहते हैं।

अभी तक ५० से अधिक वैदिक विवाह संस्कार, सैकड़ों यज्ञ, महायज्ञ करवा चुके हैं।

पता :- श्री गोपाल वैदिक सदन, घिरौर, मैनपुरी - २०५१२१ (उ. प्र.)

दूरभाष :- (०५६७२) - ८४१००, ८४२००, ८४३००, ८४४००

श्रीमती आशा ढींगरा

आपका जन्म ११ जनवरी १९३३ को मिटकुमारी (पाकिस्तान) में हुआ।

आपकी शिक्षा लाहौर में आठवीं कक्षा तक हुई।

१९४७ में विवाह के पश्चात् आप आर्य समाज में आती जाती थीं। स्वाध्याय सत्संग करतीं। महात्मा प्रभुआश्रित जी ने आपको वेद पढ़ने की प्रेरणा दी। विदुषी महिला विद्यावती ऋतम्भरा जी ने आपको शुद्ध वेदपाठ सिखाया तथा वेदपारायण यज्ञ करने कराने की प्रेरणा दी। आपने १०१ बार सामवेदपारायण यज्ञ अपने घर किया। सामवेद कण्ठस्थ भी कर लिया। पश्चात् आप परिवारों एवं आर्य समाजों में यज्ञ का प्रचार करने लगीं।

मधुर प्रवचनों से बहुत से परिवारों को आर्य बनाया। सैकड़ों महिलाओं को वेद पढ़ना सिखाया।

पता :- ए-२, २३६ - ए, एल- आइ-जी फ्लैट्स, पश्चिम - विहार, नई दिल्ली - ११००६३

पं. अर्जुनदेव स्नातक

आपका जन्म १ मार्च १९३५ को आगरा (उ. प्र.) निवासी श्री-गुलाबचन्द शर्मा एवं श्रीमती दमयन्ती देवी के घर हुआ।

आपने एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), सिद्धान्तशिरोमणि (वृन्दावन) की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप आगरा के एन. सी. वैदिक इंटर कॉलेज में प्रवक्ता रहे। आपका विवाह श्रीमती सुमन शर्मा से हुआ।

आप वैदिक सिद्धान्तों को सरलभाषा द्वारा समझाने में कुशल हैं। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों में उपदेशक एवं पुरोहित के रूप में प्रचार करते हैं। बहुत से वेदपारायण यज्ञ सम्पन्न करा चुके हैं।

आजकल आप आर्यपुरोहित- सभा आगरा के अध्यक्ष हैं। आपकी 'संस्कार - भास्कर' (संस्कार क्या, क्यों, कैसे) एवं 'आध्यात्मिक उन्नति का सोपान देवयज्ञ' पुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

पता :- ५ सीताराम भवन, फाटक, आगरा कैण्ट-२८२००१ (उ. प्र.)
दूरभाष :- (०५६२) - ३६७८७९

पं. मदनमोहन विद्यासागर

आपका जन्म २१ जनवरी १९१५ को कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में श्री नन्दलाल एवं श्रीमती यमुना देवी के घर हुआ।

आपकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में हुई, जहाँ से आपने १९३७ में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। तब आप 'सूर्यप्रकाश' के नाम से जाने जाते थे।

आप गुरुकुल कांगड़ी के उन सुयोग्य स्नातकों में से हैं, जिन्होंने वैदिक-साहित्य के अनुशीलन, निर्माण एवं प्रचार - प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। उत्तम लेखक होने के साथ-साथ आप सुयोग्य प्रभावशाली वक्ता भी हैं। आपके अध्यात्म-प्रवचन; वेद, उपनिषद् आदि पर विद्वत्तापूर्ण भाषण जनता में बहुत लोकप्रिय हैं। आप संस्कृत, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, तेलुगु, पंजाबी भाषाएं भी जानते हैं। आप विशेष कर आन्ध्र -प्रदेश में वैदिक-धर्म के विकास के लिए गत चालीस वर्षों से सतत प्रयत्नशील हैं।

आप बर्मा, केन्या, युगाण्डा, तंजानियां, जंजीवार, पेम्बा, लाशो (चीन) आदि देशों में भी आर्य-धर्म, आर्य-संस्कृति के प्रसारार्थ भ्रमण कर चुके हैं। आप विचारशील उदार एवं मधुर स्वभाव के व्यक्ति हैं।

आपके लिखे प्रमुख ग्रन्थ हैं -संस्कार-समुच्चय, मेनिफेस्टो, ईश्वर-प्रत्यक्ष, आर्य सिद्धान्तप्रदीप, वेदों की अन्तःसाक्षी का महत्त्व, आर्यसिद्धान्त, पञ्चमहायज्ञप्रदीप, सत्यार्थसरस्वती इत्यादि।

आपकी कुछ पुस्तकों का गुजराती एवं मराठी में अनुवाद हो चुका है।

पता :- प्रेममन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, नारायण गुडा,

हैदराबाद - ५०० ०२९ (आं. प्र.)

दूरभाष :- (०४०) - ७५६१११०

पं. प्रियदत्त शास्त्री

आपका जन्म १५ जनवरी १९५१ को महाराष्ट्र के गुंजोटी ग्राम में हुआ, जहाँ पर कि सन् १९३७ में अमर शहीद वेदप्रकाश का बलिदान हुआ था।

आपने सन् १९७४ में ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार से 'विद्या-वाचस्पति' किया। ज्वालापुर महाविद्यालय से विद्याभास्कर किया।

आपने अनेक स्थानों पर वैदिक-सिद्धान्तों का प्रचार एवं पौरोहित्य कार्य किया है। आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत में उन्नीस वर्ष तक पुरोहित रहे।

आप आर्य-वीर-दल के शिक्षक भी हैं। जहाँ भी रहे वहीं आपने आर्य वीरदल की स्थापना की। हिन्दी एवं मराठी भाषा में प्रचार करने का अच्छा अभ्यास है।

पता :- बहादुरपल्ली आश्रम, पो.बोरमपेट, ए.एफ. ए.

हैदराबाद - ५०० ०४३ (आं. प्र.),

दूरभाष :- (०४०) - २३०९४७३४

श्रीमती डॉ. सुनीति

आपका जन्म २३ मार्च १९३४ को कर्नाटक में बीदर जिले के हल्लीखेड़ नामक ग्राम में हैदराबाद सत्याग्रह के सूत्रधार, प्रसिद्ध आर्य नेता भाई वंशीलाल जी के घर हुआ।

आपने उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आप मुमताज कॉलेज हैदराबाद में २० वर्ष तक प्राध्यापिका रहकर सेवानिवृत्त हुईं। आपका विवाह पं. मंजुनाथ शास्त्री के साथ हुआ था।

आपने पंजाब के हिन्दी - सत्याग्रह एवं गोरक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

महिला पुरोहित के रूप में यज्ञ, प्रवचन, विभिन्न संस्कार सम्पन्न कराते हुए आपने आर्य-समाज के साप्ताहिक सत्संगों और वार्षिकोत्सवों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया है। अनेक वेदपारायण यज्ञों में ब्रह्मा का पद सुशोभित किया है।

वेदप्रतिष्ठान द्वारा संचालित पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविरों में आपकी सेवा बहुमूल्य एवं प्रशंसनीय रही है।

आपने 'ऋषि दयानन्द की वेदसम्बन्धी मान्यताएँ', 'वैदिक सांध्यगीत' आदि पुस्तकें लिखी हैं।

पता :- २-२-११६६/ए., फ्लैट नं. ३११ कोरट्ला पैलेस, तिलकनगर,
हैदराबाद - ५०००४४ (आं. प्र.), दूरभाष : - (०४०) - ७५६१३७७

श्रीमती डॉ. सन्ध्यावन्दनं लक्ष्मीदेवी

आपका जन्म १५ अगस्त १९५५ को आं.प्र. के राजमहेन्द्रवरम् नगर में मुदिगोण्ड वेंकटेश्वर राव एवं श्रीमती गौरीदेवी के घर हुआ।

आपने एम.ए., बी.एड., पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सामाजिक कुरीतियों के कारण आपका विवाह १३ वर्ष की अवस्था में हुआ। तब तक आपने ८ वी. कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। ११मई १९६८ को श्री सन्ध्यावन्दनं श्रीनिवास राव के साथ विवाहोपरान्त पति की प्रेरणा एवं

सहयोग से आगे शिक्षा पूर्ण की । आपके दो पुत्र-श्री सुधीर एवं भूतपूर्व कैप्टन दयानन्द हैं ।

१९७३ में इस दम्पती का परिचय श्री पं. गोपदेव शास्त्री से हुआ । उनके सत्संग, प्रेरणा एवं प्रशिक्षण से तथा अपने विशेष पुरुषार्थ से आपने वैदिक - सिद्धान्तों, पौरोहित्य आदि में विशेष योग्यता प्राप्त की । घर का सब कार्य करते हुए आपने संस्कारविधि के मन्त्र कण्ठस्थ किये ।

आपने वैदिक उपदेशों को अपने जीवन में भी उतारा, अन्य हजारों लोगों एवं परिवारों को भी सुधारा । आप सन् १९८० से वैदिक-विवाहादि संस्कार करवाती हुई, प्राप्त दक्षिणा को वैदिक- धर्म के प्रचार में लगाती हैं ।

आप विवाहादि संस्कार करवाती हुई अत्यन्त श्रद्धाभक्ति से आगन्तुक बन्धुओं को संस्कार की वैज्ञानिकता एवं उनकी क्रियाओं के गूढ रहस्यों को समझाती हुई मन्त्र मुग्ध कर देती हैं ।आन्ध्र-प्रदेश की आर्य-महिलाओं के लिए आप प्रेरणास्रोत हैं । प्रचार के क्षेत्र में आपका त्याग, धैर्य, साहस प्रशंसनीय है । तेलुगु भाषा में धाराप्रवाह स्पष्टप्रतिपादन की विशेष योग्यता के कारण आप १ अप्रैल २००१ से ई-टी.वी. नामक तेलुगु चैनल पर ' वेद और मानवजीवन की सफलता ' विषय पर प्रतिदिन प्रातः १५ मिनट का प्रवचन एक वर्ष करती रहीं । देश- विदेश की तेलुगु भाषी जनता इन प्रवचनों को श्रद्धा से सुनकर लाभान्वित हुई है । अब उपनिषदों पर टी.वी. पर प्रवचन आरम्भ होने वाले हैं । अपने प्रवचनों की प्रतिभा से आपने सैकड़ों परिवारों में मूर्तिपूजा को बन्द करवाकर नित्य- अग्निहोत्र की परम्परा डाली है ।

अपने कार्यों के विस्तार से आपने एक व्यक्ति के स्थान पर एक संस्था का रूप धारण कर लिया है । इन सब उपलब्धियों के पीछे आपके पति श्री सन्ध्यावन्दनं श्रीनिवास जी का विशेष परिश्रम, तप और प्रेरणा है ।

पता : - प्लॉट नं. ३९, सूर्या नगर, कौसल्य एस्टेट, कारखाना,

सिकन्दराबाद - ५०० ००९ (आं.प्र.),

दूरभाष : - (०४०) - ७७४१२९९

श्रीमती डॉ. वसुधा शास्त्री

आपका जन्म २ जुलाई १९६५ को आन्ध्र-प्रदेश में हैदराबाद के अलियाबाद स्थान पर श्री साम्बशिव एवं श्रीमती कलावती के घर हुआ।

आपकी शिक्षा पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में हुई। वहाँ ग्यारह वर्ष अध्ययन करके आपने सम्पूर्णानन्द वि.वि. वाराणसी की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। पश्चात् उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), एम.फिल्. एवं पी-एच.डी.की उपाधियां प्राप्त कीं।

आप नवजीवन महिला महाविद्यालय हैदराबाद में संस्कृत प्राध्यापिका हैं। आपका विवाह श्री अरविन्द शास्त्री से हुआ। आपके दोनों बच्चे (सुमेधा और यशस्वी) गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं।

आप सम्पूर्ण भारत में वैदिक-सिद्धान्तों के प्रचारार्थ जाते रहते हैं। विविध यज्ञों का सञ्चालन, संस्कारों का सम्पादन आदि पौरोहित्य कार्य बड़ी कुशलता और श्रद्धा से करते हैं।

पता :- फ्लैट नं. एच् - २०२, श्रुति-सिन्धु, साई कॉम्प्लेक्स, बाग अम्बरपेट, हैदराबाद - ५०० ०१३ (आं.प्र.), दूरभाष : - (०४०) - ७४२१७८१

पं. अरविन्द शास्त्री

आपका जन्म २९ मई १९५५ को हैदराबाद की याकूतपुरा छावनी में श्री कृष्णराव एवं श्रीमती तुलसी देवी के घर हुआ।

आपने एम. ए. (तत्त्वशास्त्र) तथा पं. गोपदेव शास्त्री जी से दर्शन-उपनिषद् आदि का अध्ययन किया।

२३ वर्ष बैंक में कार्य करके स्वैच्छिक पदविमुक्त हुए। आपका विवाह श्रीमती वसुधा शास्त्री से हुआ। आपके दोनों बच्चे गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं।

आप सम्पूर्ण भारत में वैदिक प्रचारार्थ भ्रमण, विविधि यज्ञों का सञ्चालन एवं पौरोहित्य श्रद्धा और परिश्रम से करते हैं।

पता :- फ्लैट नं. एच्-२०२, श्रुति-सिन्धु, साई कॉम्प्लेक्स, बाग अम्बरपेट, हैदराबाद - ५०० ०१३ (आं.प्र.), दूरभाष :- (०४०) - ७४२१७८१

पं. मुरली ब्रह्मचारी

आपका जन्म सन् १९४६ में आन्ध्र-प्रदेश के सिकन्दराबाद नगर में श्री-रामस्वामी एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी के घर हुआ।

विद्यालय में आपकी शिक्षा ८ वीं कक्षा तक हुई। पं. गोपदेव शास्त्री, पं. रुद्रदेव शास्त्री, पं. मुन्नालाल मिश्र, आचार्य आनन्दप्रकाश आदि विद्वानों के सान्निध्य में आपने वैदिक सिद्धान्तों, कर्मकाण्ड / पौरोहित्य आदि का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया।

आप आन्ध्र-प्रदेश के कोने-कोने के ग्रामों में भी जाकर वैदिक-सिद्धान्तों का प्रचार, संस्कार, यज्ञ, योगासन-प्रशिक्षण गत ३२ वर्षों से कर रहे हैं। आठ वर्ष तक आपने निःशुल्क प्राकृतिक-चिकित्सा करके बहुत से लोगों को स्वस्थ किया। हजारों व्यक्तियों को सेवाभाव से योगासन, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण दिया। यज्ञ आदि की दक्षिणा निर्धारित नहीं करते।

आप बहुत से बच्चों को उत्तर-भारत के गुरुकुलों में प्रविष्ट कराकर आर्थिक प्रबन्ध भी करवाते हैं। दूरदर्शन हैदराबाद पर भी यदाकदा आपके आसन-प्रशिक्षण का कार्यक्रम आता रहता है।

पता : ९-२-५८५, रेजिमेंटल बाजार, वैदिकनगर, जुल्मा गुडा,

सिकन्दराबाद - ५०० ०२५ (आं.प्र.), दूरभाष : (०४०) - ७७०९८५२

६

वानप्रस्थी

वानप्रस्थी ही देश के अपठितों की संख्या को शीघ्र घटा सकते हैं ।

आचार्य आनन्दमुनि

आपका जन्म ७ अगस्त १९३२ को हरयाणा में फरीदाबाद जिले के कुण्डल ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। आपका पूर्वनाम आचार्य रामदयालु था।

बचपन में ही पिताजी एवं माता जी का देहान्त हो जाने से आपके अध्ययन में बहुत विघ्न पड़े, भरण-पोषण की भी समस्या थी। पुनरपि आपने धैर्य, परिश्रम एवं श्रद्धा से एक-एक करके अध्ययन में सफलता प्राप्त की, बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त कीं।

आपने गुरुकुल गदपुरी में पढ़कर प्रथमा, मध्यमा (वाराणसी वि. विद्यालय); कक्षा १० वीं मथुरा (उ.प्र.) से, तिब्बिया कॉलेज करौलबाग दिल्ली से आयुर्वेदाचार्य द्वितीय वर्ष; शास्त्री (पंजाब वि.विद्यालय); ओ.टी. एम.आइ.एल.(शिक्षक ट्रेनिंग) चण्डीगढ़ से; विद्याभास्कर (गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर); एम.ए.(संस्कृत) मेरठ वि.विद्यालय से ; काव्य,वेदातीर्थ (कोलकाता); तमिल डिप्लोमा (दिल्ली) के प्रमाणपत्र प्राप्त किये।

आप संस्कृत-प्रवक्ता (डी.ए.वी.सीनियर सैकण्डरी स्कूल, दरियागंज, दिल्ली में) पद से सेवानिवृत्त हुए।

आपने अध्यापन काल में तथा १९९४ में सेवानिवृत्ति के पश्चात् संस्कृत एवं वैदिक - संस्कृति के प्रचार-प्रचार के लिए प्रवचन, बालसभा, संस्कृत-कक्षा शिविर, चार्ट प्रकाशन आदि कार्य किए। लगभग ५० पुस्तकें लिखीं, जिनमें ३ दर्जन प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकें-भाष्यभूमिका सारः (संस्कृत), रसालंकार-छन्दो-दीपिका (हिन्दी), हिन्दी-संस्कृत धातुकोषः, निरुक्त-निर्वचनिका, सांख्य-दर्शन (टीका), आनन्द-सूक्ति-सरोवर, चुटुकुला-शतकम् (दो भाग), प्रभुनाम-माला, संस्कृत-सम्भाषणविधि आदि हैं।

आर्य वन रोजड़ में स्वामी सत्यपति जी से वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर आप 'आनन्द-मुनि' नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

पता :- वेद मन्दिर, इब्राहिमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली - ११००३६

दूरभाष - (०११) - २७२०२२४९, २७२०३००१

महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी

आपका जन्म आश्विन शु. २/१९८५ वि. (सन् १९२८) को पंजाब में संगरूर जिले के धूरी नामक कस्बे में श्री कुन्दनलाल एवं श्रीमती लाजवन्ती के घर हुआ।

प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आर्यसमाज में दीक्षित होने पर हिन्दी एवं संस्कृत का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया। आपने १० अप्रैल १९८३ को वानप्रस्थ की दीक्षा ली। इससे पूर्व आप व्यापार करते थे।

आप पूरे भारत में प्रचारार्थ जाते हैं। वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अमेरिका भी गये। सन् १९४४ से १९७७ तक आर्य वीर दल की शाखा चलाते रहे। न्यूनतम ७०० संस्कार करवाये और दक्षिणा आर्य-समाज को दी। २६ चरित्र-निर्माण-शिविर लगाये। लगभग १०० परिवारों को आर्य बनाया।

१०वर्ष में ७९८२ ईसाइयों को हिन्दू (वैदिक) धर्म में प्रवेश करवाया और लगभग २० लाख रुपये का अन्न, वस्त्र आदि बंटवाया। अनेक मुस्लिम लड़कियों का शुद्धिसंस्कार करके हिन्दू परिवारों में विवाह करवाया।

कांगड़ा (हिमाचल) एवं उत्तर काशी के भूचालपीड़ितों को अन्न एवं वस्त्र आदि का सहयोग भिजवाया। दर्जनों वेदपारायण यज्ञ करवाये। अब तक ५ योगशिविर लगा चुके हैं।

आपने ६ पुस्तकें लिखी हैं-वीरतरंग, जीवनामृत, आत्मध्वनि, रचयिता की अद्भुत रचना, गायत्री - महिमा और यज्ञ-विज्ञान। आपके न्यूनतम ५०लेख पत्रिकाओं में छप चुके हैं। अब भी आप तन-मन-धन से आर्य-समाज की सेवा में संलग्न हैं।

पता :- आर्य-कुटिया, धूरी - १४८०२४ (पंजाब)

दूरभाष : - (०१६७५) - ६२१३७४

डॉ. मुमुक्षु आर्य

आपका जन्म १३ अप्रैल १९४८ को पंजाब में हुआ। आपका पूर्वनाम है- डॉ. अशोक बंसल आर्य।

आपने एम.बी.बी.एस., एम.डी., एम.आर.सी.पी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सन् १९७७ में एक वृद्ध व्यक्ति ने (जो प्रायः आपके पास रक्तचाप जंचवाने आया करते थे) महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश भेंट किया। जिसे पढ़कर जीवन में क्रान्ति आयी। पौराणिक विचार बदल गये। घर की सारी मूर्तियां उठाकर कूड़े के ढेर में फेंक दीं। पश्चात् उपनिषद्, दर्शन, वेदादि शास्त्रों एवं वैदिक / आर्य विद्वानों के सैकड़ों ग्रन्थों का गम्भीरता से अध्ययन, मनन किया।

२८ फरवरी १९९९ को स्वामी सत्यपति जी से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली तथा शेष जीवन साधना, स्वाध्याय, सेवा आदि कार्यों में लगाने का संकल्प किया। परिवार में पुत्र, पुत्री एवं पत्नी अपने-अपने कार्य में संलग्न हैं। धर्मपत्नी की भी योगाभ्यास एवं प्रचार-प्रसार में रुचि है।

आप आर्य-समाजों, स्कूलों, कॉलेजों आदि में प्रवचनों के माध्यम से प्रचार करते हैं। 'भूलोक की कहानियाँ / गागर में सागर' का प्रकाशन करके जनता एवं छात्रों में निःशुल्क बांटते हैं।

आपने नॉएडा में आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, साधना केन्द्र आदि की स्थापना की है।

पता - वेद-संस्थान, जी-६, सैक्टर-१२, नॉएडा - २०१३०१ उ.प्र.)

दूरभाष :- (०१२०) - ४५५३४६७

डॉ. अग्निव्रत वानप्रस्थ

आपका जन्म सन् १९३६ में बिहार-प्रान्त में नालन्दा जिले के बजिदपुर ग्राम में हुआ।

आपने आयुर्वेद विशारद तक पढ़कर स्वामी अभेदानन्द जी के पास वैदिक साहित्य पढ़ा।

आप ४० वर्षों से आयुर्वैदिक एवं होमियोपैथी से चिकित्सा कर रहे हैं। आपका पूर्वनाम डॉ. देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी था।

आप विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों में कथा, उपदेश, भजनोपदेश आदि के माध्यम से प्रचारार्थ जाते रहते हैं।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपने भारतीय स्वाधीनता - संग्राम का खोजपूर्ण इतिहास लिखा है, जो अभी अप्रकाशित है।

पता :- मानसरोवर भवन, न्यू चित्रगुप्त नगर, मूलचन्द पथ,
पटना - ८०००२० (बिहार), दूरभाष :- (०६१२) - ३५६३७१

श्री बलेश्वर वानप्रस्थ

आपका जन्म १ जुलाई १९३७ को पाकिस्तान में जिला मुजफ्फरगढ़ की अलीपुर तहसील में एक आर्य परिवार में हुआ। आपके पिता श्री जेसाराम एवं माता श्रीमती नियामती बाई थे।

आपने एम.ए., बी.एड. (अंग्रेजी) तक शिक्षा प्राप्त की। आध्यात्मिक रुचि के अनुसार स्वाध्याय, सत्संग एवं श्री आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्य जगद्देव जी, ब्र. नचिकेता जी शास्त्री आदि से दर्शन एवं ऋषिकृत ग्रन्थ पढ़े। स्वामी सत्यपति जी एवं स्वामी दिव्यानन्द जी के योगशिविरों में योग के विषय में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया।

१९५५ से १९७० तक वायुसेना में कार्यरत रहकर १९७१ से १९९७ तक दिल्ली के विद्यालयों में अध्यापन किया।

सेवा-निवृत्ति के पश्चात् आर्यसमाज की विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से प्रचार करने, कराने में लग गये। 'महर्षि दयानन्द-मिशन' की स्थापना करके

विद्यालयों, महाविद्यालयों, में प्रचार एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से नैतिक शिक्षा एवं वैदिक विचार धारा के प्रसार में संलग्न हैं।

आपने 'वैदिक-सिद्धान्त मीमांसा' (ले. आचार्य आनन्दप्रकाश), मनुस्मृति में महिला का स्थान (आ.आ.प्रकाश) वेदों में क्या है ?, (स्वा. जगदीश्वरानन्द), अमृत कण, सन्ध्याहवन की सरल विधि आदि पुस्तकें प्रचारार्थ निःशुल्क प्रकाशित एवं वितरित की हैं।

आप एक उदार एवं वैदिक धर्म के प्रति समर्पित मिशनरी हैं।

आपने धर्मपत्नी श्रीमती शान्ता बत्रा जी के साथ १०५ वार सामवेद पारायण यज्ञ पूरा करके 'आर्ष-कन्या गुरुकुल' अलियाबाद में १७/२/२००२ को वानप्रस्थ-दीक्षा लेकर बलवीर सिंह बत्रा से बलेश्वर नाम रखा है। प्रचार एवं साधना में संलग्न रहते हैं।

पता :- ए ३/७३, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - ११००६३

दूरभाष - (०११) - ५२५२९५९

श्री आदित्यमुनि

आपका जन्म ३ सितम्बर १९३७ को उत्तर - प्रदेश में फर्रुखाबाद जिले के चिलसरा नामक ग्राम में श्री जगनूलाल 'मित्र' के घर हुआ। आपका पूर्वनाम इं.आदित्यपाल सिंह आर्य है।

आपने सिविल इञ्जीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया।

आप मध्यप्रदेश के सिंचाई विभाग में नियुक्त हुए और १९९७ में सहायक अभियन्ता के पद से सेवा-निवृत्त हुए।

आप अनेकआर्यसमाजों केसदस्य, मन्त्री एवं प्रधान रहे। आर्यवीरदल म.प्र.के मन्त्री रहे। आपकेलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आपकी लिखित प्रमुख पुस्तकें - ऋषि दयानन्द और उनकी मान्यताएँ, दयानन्द :जैसा मैंने समझा, ऋषि दयानन्द के साढ़े पांच वर्ष, योगी का आत्मचरित्र आदि हैं।

आजकल आप आर्य - प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश, विदर्भ एवं छत्तीसगढ़ के मासिक मुखपत्र 'आर्यसेवक' के सम्पादक हैं।

पता :- एच-१२८, पुरुषार्थ सदन, राजहर्ष कॉलोनी, अकबरपुर, कोलार रोड, भोपाल - ४६२०४२(म.प्र.), दूरभाष - (०७५५) - ७९३००८

श्री आर्यमुनि

आपका जन्म हिसार (हरयाणा) में हुआ। आपका पूर्वनाम 'सीताराम' आर्य था।

युवावस्था में आर्य बनने के पश्चात् गृहस्थी के उत्तरदायित्व निभाते हुए भजन-मण्डलियां रख-रख कर गांव गांव में प्रचार करवाया। गुरुकुल आर्यनगर एवं धीरणवास की स्थापना में विशेष सहयोग किया। फरबरी १९९५ में वानप्रस्थ की दीक्षा के पश्चात् पूरा समय वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में लगाते हैं। कभी किसी से दक्षिणा नहीं लेते।

'ऋषि-सिद्धान्त-रक्षक' पत्रिका के माध्यम से आर्यों को पाखण्ड से बचाने में प्रयत्नशील रहते हैं।

पता :- आर्य-समाज, आर्य-नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली - ११० ०५५

राजपाल आर्य 'भारत यात्री'

आपका जन्म २० अगस्त १९२६ मध्य प्रदेश में इन्दौर जिले के राउ नामक ग्राम में हुआ।

आपकी शिक्षा मालव विद्यापीठ अर्वाचीन गुरुकुल म.प्र. में हुई। पूर्वजन्म के प्रभाव से बाल्यावस्था में ही वैदिक संस्कार जागृत हुए।

१९ वर्ष की अवस्था में ही विवाह होने पर घर के कार्य भार को सम्भालते हुए भी आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा १९६३ से पूर्णरूपेण प्रचार क्षेत्र में समर्पित हैं। आपने अपनी संतानों को गुरुकुलों में पढ़ाया। आपने प्रचारार्थ अभी तक साइकिल से १लाख कि.मी., मोटर साइकिल से १ लाख कि.मी., पदयात्रा १ लाख कि.मी. और रेल, बस द्वारा काश्मीर से कन्याकुमारी तथा नेपाल की दो बार यात्रा की।

सन् १९४५ से आर्य पत्र-पत्रिकाओं, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों, स्मारिकाओं में लेख तथा कविताओं का प्रकाशन निरन्तर चल रहा है। हिन्दी-रक्षा सत्याग्रह तथा गोरक्षा सत्याग्रह में जेल गये। आपकी छोटी - छोटी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। इस समय 'भारत यात्रा' प्रकाशन चल रहा है। आर्थिक स्थिति सामान्य होने पर भी निर्धनों की यथासम्भव सहायता करते हैं। ७६ वर्ष की अवस्था में भी तन-मन धन से प्रचार कार्य में संलग्न हैं।

पता :- आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन (म.प्र.)४५६००१

७

आर्य - भजनोपदेशक

गम्भीर व्याख्यानों की अपेक्षा भजन / गीत अधिक रुचिकर एवं प्रभावकारी होते हैं ।

कवि नरदेव आर्य

आपका जन्म ९ जुलाई १९४७ को राजस्थान प्रान्त में भरतपुर जनपद के बछामदी ग्राम में श्री सिरियाराम जी के यहाँ हुआ।

आपकी शिक्षा ग्राम में ५ वीं कक्षा तक, पश्चात् सुनारी नामक ग्राम में मिडिल तक हुई। डॉ. सूर्यदेव जी डी. लिट्. द्वारा चलाई गई वैदिक परीक्षाओं में विद्यावाचस्पति किया।

बाल्यकाल से ही धार्मिक प्रवृत्ति थी। विद्यार्थी जीवन में समाज सुधार व देशभक्ति के गीत, कविता गाने में विशेष रुचि रखते थे। सैकड़ों कवित्त, सवैया, गीत कंठस्थ थे। विद्यालय में प्रत्येक पर्वो व सम्मेलनों में भाग लेकर सुनाते रहते थे। ओंकार सिंह भक्त जी की प्रेरणा से 'दो बहनों की बातें' नामक पुस्तक पढ़ने के बाद आपकी सारी भ्रान्तियाँ व अवैदिक शंकाएं समूल नष्ट हो गईं और वैदिक विचारधारा के प्रति पूर्ण आस्था हो गई।

सन् १९६० में ग्राम के आर्यसमाज के उत्सव / सम्मेलन पर पं. किशोरीलाल जी आर्य के प्रवचन तथा भजन हुए। उनके भजनों, प्रवचनों और मैजिक लालटेन के प्रदर्शन ने तो स्त्री- पुरुषों, बाल तथा वृद्धों पर जादू सा कर दिया। पं. जी के भजन सुनकर आपकी प्रबल इच्छा हुई, कि मैं भी इसी प्रकार का उपदेशक बनूं। पं. किशोरीलाल जी के साथ रहकर भजनोपदेशक तो बने ही साथ ही मैजिक लालटेन से प्रचार करने का अनुभव भी हो गया। दो वर्ष स्वतन्त्र प्रचार करके, ४ वर्ष राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा में रहकर लगभग राजस्थान प्रान्तभर में प्रचार किया।

सन् १९७४ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को छोड़ कर स्वतन्त्र प्रचार किया। प्रचार कार्य का क्षेत्र भारत वर्ष के सभी प्रान्त रहे। एक दो बार नैपाल भी प्रचारार्थ गये। आपने वैदिक सिद्धान्तों पर बहुत से गीत लिखे। अब तक नरदेव गीतमाला, नरदेव गीताञ्जलि आदि लगभग बारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। नरदेव गीतमाला आदि केसेट भी बने हैं। आप सरल एवं मधुर स्वभाव के प्रसन्नचित्त व्यक्ति हैं। आपको सब पसन्द करते हैं।

पता :- कवि नरदेव आर्य, बछामदी (नोंह), भरतपुर ३२१००१ (राज.)

दूरभाष - (०५६४४) - २९८९९, ३३३३१

पं. कमलदेव आर्य

आपका जन्म सन् १९२२ में उ.प्र. में मथुरा जिले के गढ़ी महाराम ग्राम के किशनलाल जी तथा नारायण देवी जी के यहाँ हुआ।

आप सन् १९४२ में चौधरी तेजसिंह और पृथ्वीसिंह के भजनों से तथा आगरा आर्य-समाज फ्रीगंज के उत्सव से विशेष प्रभावित हुए। साधु-आश्रम (गुरुकुल) एटा से विशेष रुचि बढ़ी और भजनोपदेशक बनने की तीव्र इच्छा हुई। अपने बच्चों को भी गुरुकुलों में पढ़ाया।

आपने आगरा - मथुरा के आस पास के क्षेत्रों में प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस समय आपका जीवन संघर्षों से युक्त रहा। आध्यात्मिक पुस्तकों के अध्ययन तथा गायत्री मन्त्र के विशेष जप से वाणी का प्रभाव बढ़ता गया। आपका प्रचार क्षेत्र उत्तर भारत से महाराष्ट्र तक रहा। आपने अनेक जिलों में पैदल घूमकर भी प्रचार किया। घटिया घाट फर्रुखाबाद के मेले तथा शिविरों में आपने मुख्य प्रचारक के रूप में कार्य किया। एटा तथा कानपुर आपके प्रचार के मुख्य क्षेत्र हैं।

आपकी विशेषता है, कि आप जहाँ भी प्रचार के लिए गये, ऐसा कोई स्थान नहीं होगा जहाँ दुबारा न बुलाया गया हो। बढ़ती हुई कटुता को समाप्त कर प्रेम तथा शान्ति का वातावरण बनाने में आपका सफल प्रयत्न रहता है। भजनोपदेशक के रूप में आप सफल प्रचारक हैं।

पता :- महाराम गढ़ी, पो. नगला संज्ञा, जि. - मथुरा २८१००१ (उ.प्र.)
दूरभाष - (०५६६१) - २४४६२

पं. नन्दलाल ' निर्भय '

आपका जन्म कार्त्तिक-अमावस्या सं. १९९७ (सन् १९४०) को हरयाणा में फरीदाबाद जिले के बहीन ग्राम में स्व.पं. घासीराम शर्मा के घर हुआ।

आपने इण्टर, प्रभाकर, सिद्धान्ताचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

सन् १९६० से भजनों के माध्यम से वेदप्रचार का कार्य आरम्भ किया। आप भारत के प्रायः सभी हिन्दी-भाषी प्रान्तों में निर्भयता पूर्वक भजनों और व्याख्यानों के माध्यम से वैदिक प्रचार करके अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास

मिटाने में मिशनरी भावना से लगे रहते हैं। आप स्वतन्त्र प्रचारक हैं। आप आशुकवि एवं आर्य-समाज के समर्पित कार्यकर्ता हैं।

आपने आर्य भजनमाला, वीर भगतसिंह आदि दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। इसके अतिरिक्त आर्य जगत्, आर्य-सन्देश आदि आर्य-पत्रिकाओं एवं अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजाब केशरी आदि दैनिक राष्ट्रिय पत्रों में आपके लेख, कविताएं प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी लेखनी में तड़फ और वाणी में ओज है। आप सिद्धान्त के पक्के तथा वचन का पालन करने वाले हैं। गरीब, विधवा, अनाथों के सच्चे सहायक हैं।

आपने दर्जनों गो-हत्यारों को दण्डित कराया। बहुत सी स्त्रियों, बालिकाओं को मेवात के मुसलमानों से मुक्त करा चुके हैं। आर्य जनता को आप पर गर्व है।

पता :- ग्राम-बहीन, जिला-फरीदाबाद - १२१००१ (हरयाणा)

पं. चन्द्रभानु आर्य

आपका जन्म सन् १९३० में हरियाणा में जिला पानीपत के लोहारी ग्राम में श्री हरज्ञान सिंह तथा मानकौर के यहाँ हुआ।

उर्दू की चार-कक्षायें तथा गुरुकुल घरौंड़ा में कुछ काल तक पढ़ने के पश्चात् रामेश्वरानन्द जी से दर्शनों एवं उपनिषदों का अनौपचारिक अध्ययन किया। स्वामी भीष्म जी से भजनोपदेश का प्रशिक्षण लिया।

आपने पूरे भारत में प्रचार कार्य किया तथा नैपाल में भी प्रचारार्थ गये। आपने लगभग दस हजार भजन लिखें हैं और ७० भजन-इतिहास हैं। आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं - वीरांगना लीलावती, राणा राजसिंह, बलिदान (पं. लेखराम का जीवन) आदि। आप १९५७ में पंजाब हिन्दी-सत्याग्रह में जेल भी गये। १९९० में जीन्द में आपने 'स्वामी भीष्म भजनोपदेश महाविद्यालय' का संचालन किया तथा लगभग बारह शिष्यों को पूर्णकालिक प्रचारक बनाया। तीन वर्षो से आप वेद प्रचार को समर्पित 'शान्तिधर्मी' का सम्पादन कर रहे हैं।

प्रचार-कार्य की अर्द्धशताब्दी-सम्पन्न होने पर आर्य प्र.सभा हरयाणा द्वारा 'जीन्द आर्य महा सम्मेलन' में आपको सम्मानित किया गया।

पता :- शान्तिधर्मी कार्यालय, ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द - १२६१०२ (हरयाणा), दूरभाष : (०१६८१) - २७५१२, २७३१५

पं. सोमदेव आर्य

आपका जन्म उत्तर-प्रदेश में बुलन्दशहर जनपद के बनैल ग्राम में श्री खूबीराम आर्य एवं श्रीमती नियमा देवी के यहाँ हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव की ही पाठशाला में हुई। अपने गुरु श्री स्वामी राघवानन्द जी से आपने वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया, जिससे आपमें महर्षि दयानन्द के विचार पूर्णरूप से भर गये। छोटी आयु से ही गाने के इच्छुक थे। आपकी आवाज मधुर तथा मनमोहक थी। आप राघवानन्द जी के भजन गाते थे।

आपने गुरु की प्रेरणा से अपनी सन्तानों को गुरुकुलों में पढ़ाया जो वर्तमान में बम्बई तथा गुजरात के महानगरों में पुरोहित हैं और दयानन्द जी के मिशन में कार्य कर रहे हैं। इस तरह सोमदेव जी ने अपने सम्पूर्ण परिवार को विशुद्ध आर्य एवं वेदानुयायी बनाया और स्वयं भी इसी मार्ग पर अग्रसर हैं।

आप भजनों के माध्यम से वैदिक धर्म की सेवा कर रहे हैं। आपने उत्तर-प्रदेश के लगभग ८-१० जिलों में उत्सवों एवं आर्य समाज के कार्यक्रमों में जा जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। जिज्ञासुओं को वैदिक मान्यताएं जनाकर साहित्य आदि देते हैं। आपने उत्तर-प्रदेश के अलावा हरयाणा, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में भी प्रचार किया। वर्तमान में भी आप भजनों तथा उपदेशों से वैदिक धर्म की सेवा कर रहे हैं।

पता :- ग्राम+पो. बनैल, जि. बुलन्दशहर - २०२३९६ (उ.प्र.)

पं. प्रेमचन्द्र प्रेम

आपका जन्म महाराष्ट्र में परभणी जिले के हिंगोली तालुका में सन् १९१६ में श्री गणेशदास जी ठाकुर के घर हुआ।

घर पर आरम्भिक शिक्षा के समय पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के टैक्ट पढ़ने को मिले, जिससे विचारों में क्रान्ति आयी। भजन गाने की रुचि थी। उपदेशक विद्यालय लाहौर में 'सिद्धान्त-भूषण' का अध्ययन पूरा किया। पं. ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य एवं स्वामी सर्वानन्द जी आदि से भी शिक्षा प्राप्त की।

निजाम राज्य में लौटकर १० रु. मासिक के वेतन पर आर्य प्रतिनिधि

सभा की ओर से भजनों और उपदेशों के माध्यम से प्रचार करने लगे । आपने सैकड़ों ग्रामों, नगरों में घूम-घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार किया ।

आपने बहुत से भजन लिखे हैं । 'प्रेम भजनावली' नाम से पाँच खण्डों में छपे हैं । निजाम के अत्याचार, बंगाल की स्थिति आदि पर भी ऐतिहासिक गीत लिखे हैं ।

आप उत्साही एवं समर्पित कार्य कर्त्ता रहे हैं । निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह में आपको दो वर्ष एक मास का कठोर कारावास मिला । इस प्रकार आप लगभग ६५ वर्ष से वैदिक-धर्म के प्रचार में संलग्न हैं ।

आपने अपने पुत्र-पुत्रियों बहनों के विवाह जातिपांति तोड़कर गुणकर्मानुसार किये हैं ।

पताः-मारवाड़ी गली, ग्रा.पो.मदनूर, जि.निजामाबाद -५०३३०९(आं.प्र.)

श्रीमती पुष्पा शास्त्री

पुष्पा शास्त्री जी का जन्म हरयाणा में महेन्द्रगढ़ जिले के एक गांव में सन् १९६९ को हुआ ।

आपने सन् १९८७ में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की । मेरठ वि.वि. से एम.ए. (संस्कृत) किया । महर्षि दयानन्द वि.वि. रोहतक से 'प्रभाकर' की उपाधि प्राप्त की ।

आपको आर्य-विभूति, आर्य-वीरांगना तथा आर्यविदुषी आदि अलंकरणों से सम्मानित किया जा चुका है । आप सती-प्रथा की समाप्ति विषयक आन्दोलन, हरयाणा-शराब बंदी आन्दोलन, भ्रूण-परीक्षण प्रतिबंध विषयक आन्दोलन कर अनेक वार जेल यात्रा कर चुकी हैं ।

आप व्याख्यानों तथा ओजस्वी भजनों के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार में विशेष रूप से संलग्न हैं ।

पता :- ८ एस.आर. माडल टाउन, रेवाड़ी - १२३४०१ (हरयाणा)

दूरभाष - (०१२७४) - २५६७७

श्री सत्यपाल ' पथिक '

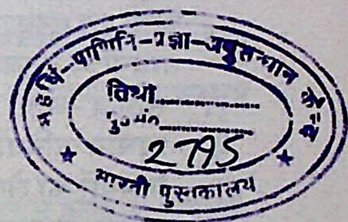
आपका जन्म १३ मार्च १९३८ को स्यालकोट (पंजाब, पाकिस्तान) में हुआ। इस समय आपका निवास अमृतसर (पंजाब) में है।

आपने सन् १९६५ से आर्यसमाज का प्रचार कार्य आरम्भ किया। आपकी ' महर्षि दयानन्द जीवन - गाथा ' (काव्य) आदि एक दर्जन से अधिक भजन-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपके पंजाबी एवं हिन्दी भाषा के वैदिक सिद्धान्तों से ओतप्रोत गीत बहुत सरल, प्रेरक, ज्ञानवर्धक और प्रभावपूर्ण होते हैं। देश-विदेश के आर्य-समाजों एवं परिवारों में आपके गाये हुए भजनों के ऑडियो- कैसेट बड़ी रुचि से सुने जाते हैं।

आपके अनेक शिष्य भी देश के विभिन्न प्रान्तों एवं विदेश में भजनों के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पताः- ७० ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड, अमृतसर - १४३००१ (पंजाब)
दूरभाष - (०१८३) - ४२६७२९



आर्ष-विद्या-प्रचार -न्यास (पं०)

(संक्षिप्त परिचय)

स्थापना : - पौष शु. १४/२०५६ वि.;२०/१/२००० ई.को आर्ष-विद्या-प्रचार-न्यास की अलियाबाद, शामीरपेट में स्थापना हुई ।

उद्देश्य : - इस न्यास (ट्रस्ट) का उद्देश्य वैदिक एवं प्राचीन ऋषियों की विद्या का अन्वेषण, रक्षण और प्रसार तथा भारतीय संस्कृति, शिक्षा; भारतीय विज्ञान एवं चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा करना है।

कार्य-क्रम :- उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए न्यास के कार्य-क्रम को निम्न विभागों में बांटा गया है, जिनमें कि न्यास की संपत्ति का उपयोग होगा:-

१. वैदिक विद्वानों /विदुषियों की अति- विरलता/न्यूनता को यथासम्भव पूरा करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा ' सत्यार्थ-प्रकाश ' में लिखित पाठ-विधि के अनुसार चैत्र शु.६/२०५७ वि.;१०/४/२००० ई. को ' आर्ष-कन्या- गुरुकुल ' अलियाबाद की स्थापना की गयी है, जिसमें पाणिनीय-व्याकरण, निरुक्त, वैदिक षड्दर्शन आदि सहित साङ्गोपाङ्ग वैदिक वाङ्मय को पढ़ा सकने वाली विदुषियां तैयार हो सकें तथा जो वैदिक- सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार एवं आवश्यकतानुसार वैदिक साहित्य का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करे सकें ।

न्यास इस गुरुकुल में पढ़ने पढ़ाने वालों की न्यूनतम आवश्यकताओं को अपने साधनों के अनुसार पूरा करेगा ।

२. संस्कृत -भाषा का गम्भीरता से अध्ययन-अध्यापन तथा प्रचार प्रसार ।

३. प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों का अनुसन्धान करके विभिन्न विषयों पर मौलिक -निबन्धों का लेखन और प्रकाशन ।

४. ऋषियों के ग्रन्थों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रामाणिक अनुवाद ।

५. ऋषियों के ग्रन्थों का शुद्ध सम्पादन तथा प्रकाशन ।

६. उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ' बृहत् पुस्तकालय ' का निर्माण ।

७. उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले विशिष्ट साहित्य के लिए ' विक्रय- विभाग ' का संचालन ।

८. क्रियात्मक पातञ्जल योगाभ्यास सिखाना ।

९. देशभक्त, वैदिक- पुरोहित एवं प्रचारक बनाना ।

१०. आर्ष-विद्या के प्रचार-प्रसार में संलग्न विद्वानों का सम्मान एवं यथाशक्ति सहयोग करना ।

विशेष

न्यास को दिये गये दान पर, आयकर अधिनियम की धारा ८० जी. के अन्तर्गत कर-मुक्ति की सुविधा है ।

आर्ष-कन्या-गुरुकुल (आर्ष-शोध-संस्थान)

२७ अक्टूबर २००० से ग्राम-अलियाबाद, मण्डल-शामीरपेट, जि.-रंगारेड्डी (आं.प्र.) में 'आर्ष-कन्या-गुरुकुल' व्यवस्थित रूप से चल रहा है ।

इस गुरुकुल में विभिन्न (उ.प्र., हरयाणा, राजस्थान, म.प्र., गुजरात, प. बंगाल, आं.प्र. आदि) प्रान्तों की छात्राएं बड़ी श्रद्धा और परिश्रम से अध्ययन कर रही हैं ।

इस संस्थान / गुरुकुल में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 'सत्यार्थ-प्रकाश' आदि में निर्दिष्ट पाठ-विधि के अनुसार अध्यापन होता है, जिससे अल्पकाल में ही पाणिनीय-व्याकरण, निरुक्त, षड्दर्शन तथा अन्य वेद वेदाङ्गादि विषयों की पारङ्गत विदुषी एवं दक्ष महिलाएं तैयार हो सकें, वैदिक विद्वानों की निरन्तर होती जा रही कमी को यथासम्भव पूरा किया जा सके, वैदिक एवं ऋषियों की विद्या का देश-विदेश में व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके तथा प्राचीन वैदिक- ग्रन्थों का विभिन्न भाषाओं में प्रामाणिक भाष्य / अनुवाद हो सके ।

आर्ष - पाठविधि से अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त इस संस्थान / गुरुकुल की विशेषताएं हैं :- समान भोजन, आवास, वस्त्र आदि की व्यवस्था; संस्कृत सम्भाषण; आध्यात्मिक प्रशिक्षण आदि । यहाँ के अध्ययन काल में किसी प्रकार की सरकारी-परीक्षाएं नहीं दिलाई जातीं । दक्षिण-भारत में यह एकमात्र 'आर्ष-कन्या-गुरुकुल' है ।

यहाँ प्रवेश की योग्यता :- न्यूनतम दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, छात्रा की आर्षपाठविधि में तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपनी रुचि, आध्यत्मिक रुचि तथा अनुशासन प्रिय हो । प्रवेश मई -जून में होता है ।

विशेष - सूचना

यह कन्या-गुरुकुल 'आर्ष -विद्या-प्रचार-न्यास' (ट्रस्ट) के संरक्षण में चल रहा है, जो कि सन् १९६१ के आयकर अधिनियम की धारा ८०जी. के अन्तर्गत आयकर-मुक्त है ।

पता :- आर्ष-शोध-संस्थान अलियाबाद,
मं. शामीरपेट, जि. रंगारेड्डी - ५०००७८ (आं.प्र.)

दूरभाष :- ९२८-२४४९५३, २४४९९७; एस.टी.डी (०८४१८)-२४४९५३, २४४९९७

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें

१. वेदाङ्ग -परिचय (ले.आचार्य आनन्दप्रकाश)

वेद धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरुषार्थ की प्राप्ति के प्रेरक एवं सहायक, ज्ञान-विज्ञान के भण्डार, संस्कृति के आधार, कर्त्तव्य-अकर्तव्य के बोधक तथा विश्वहित के सम्पादक हैं।

इन ज्ञान- राशि वेदों का अर्थ एवं गूढ रहस्यों को समझने के विशिष्ट साधन 'शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष' ये छह वेदाङ्ग हैं। वेदार्थ को समझने के साथ-साथ ये वेदाङ्ग लोक व्यवहार चलाने में भी महत्त्वपूर्ण हैं।

इनके विषय में हिन्दी भाषा में सरलता से संक्षेप में प्रामाणिक एवं रोचक जानकारी देने के लिए यह पुस्तक सफल प्रयास है। इस पुस्तक में १-वेदाङ्गों के लक्षण और स्वरूप, २- वेदार्थ में वेदाङ्गों की उपयोगिता, ३-विभिन्न वेदाङ्गों के प्रामाणिक ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का परिचय, ४- अलग-अलग वेदाङ्गों का प्रयोजन, ५-वेदाङ्गों के कुछ विवादास्पद सिद्धान्तों की समीक्षा इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक का प्रकाशन आकर्षक एवं बहुरंगी कवरपृष्ठ से युक्त है।

- डेमी साइज, मूल्य-४० रुपये।

२. देवों के वैद्य अश्विनीकुमार (ले. आचार्य आनन्दप्रकाश)

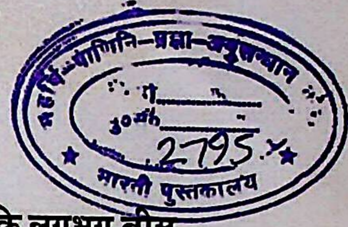
वृद्ध, जीर्ण-शीर्ण महर्षि च्यवन को पुनःयौवन देने वाले देवों के वैद्य अश्विनीकुमारों की कथा का वैदिक/वैज्ञानिक स्पष्टीकरण करने वाली इस लघु-पुस्तिका में मानो गागर में सागर भर दिया है। बहुत से वैदिक प्रमाणों के आधार पर यौवन-प्राप्ति एवं दैवी चिकित्सा-पद्धति का विस्तृत विवेचन किया गया है। पुस्तक छोटी होते हुए भी प्रेरक एवं उपयोगी है।

- क्राउन-साइज, मूल्य -५रुपये।

ट्रस्ट का अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

धातुप्रकाश :

(ले. आचार्य आनन्दप्रकाश)



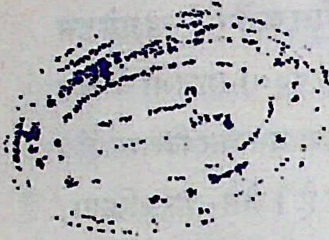
पाणिनीय संस्कृत-व्याकरण का यह ग्रन्थ डेमी साइज के लगभग बीस हजार (२०,०००) पृष्ठों में सरल संस्कृत-भाषा में है। बीस वर्षों में लिखे गये इस विशाल ग्रन्थ में पाणिनीय धातुपाठ के सब (लगभग २०००) धातुओं के सब प्रक्रियाओं एवं लेट्लकार सहित सब लकारो में धातुरूप बनाकर दिखाये हैं। सब रूपों के बनाने की पद्धति विस्तार से बतायी गयी है। जैसे-कर्तृप्रक्रिया, भावप्रक्रिया, कर्मप्रक्रिया, कर्मकर्तृप्रक्रिया, सन्नन्तप्राक्रिया, यङन्तप्रक्रिया, यङ्लुगन्तप्रक्रिया, णिजन्तप्रक्रिया, यङ्णिच्प्रक्रिया, यङ्सन्-प्रक्रिया, णिच्सन्-प्रक्रिया, यङ्णिच्सन् - प्रक्रिया इत्यादि ४० प्रक्रियाओं के सब लकारों के धातुरूप समझाकर करोड़ों शब्दों के बनाने की पद्धति सिखाई गयी है।

आर्ष कन्या-गुरुकुल (आर्ष-शोध-संस्थान) अलियाबाद में इस विशाल ग्रन्थ के हस्तलेख से ही पठन-पाठन चल रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर लौकिक - वैदिक सब शास्त्रों को समझने में बहुत सरलता होगी। ऋषियों की अनुपम मेधा का संसार को पता चलेगा। किसी को यह कहने का अवसर नहीं होगा कि संस्कृत मृत-भाषा है। छात्रों एवं शोधकर्ताओं को बहुत सुविधा होगी।

संस्कृत एवं वैदिक-शास्त्रों पर अभिमान करने वाले दानी भामाशाहों से निवेदन है, कि इस अप्रकाशित विशालग्रन्थ को प्रकाश में लाकर पुण्य के भागी बनें। लगभग २० खण्डों में प्रकाशित होने वाले इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण प्रकाशन व्यय अभी न्यूनतम ३०,००,०००/= (तीस लाख रुपये) होगा।







श्री डॉ. बी.एम्.मेहत्रे

(जिनके सौजन्य से यह पुस्तक छपी)



डॉ. बी.एम्.मेहत्रे (बाबू महादप्पा मेहत्रे) का जन्म बीदर (कर्नाटक) के भातम्बरा ग्राम के एक विपन्न ग्रामीण परिवार में श्री महादप्पा एवं श्रीमती रुक्मिणी बाई के घर सन् १९५९ में हुआ।

बाल्यावस्था में ही पिता का स्वर्गवास हो गया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में मेहनत-मजदूरी कर अपने छोटे भाई-बहनों का भरण - पोषण करते हुए अपनी शिक्षा जारी रखी। सन् १९८३ मे इंज़ीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। सन् १९८५ एवं १९९० में I.I.T. खडगपुर से क्रमशः एम.टेक. एवं पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में आप सी.एम.सी. लिमिटेड के हैदराबाद स्थित अनुसन्धान केन्द्र में उपमहाप्रबन्धक-अनुसन्धान एवं विकास पद पर कार्यरत हैं। आप बड़े ही सरल, नेक एवं विनम्र व्यक्ति हैं।

इंजीनियरिंग की शिक्षा के समय आप महाराष्ट्र के माननीय हरिश्चन्द्र गुरुजी (वर्तमान में स्वामी श्रद्धानन्द जी) के सम्पर्क में आये। उनकी सत्प्रेरणा से वैदिक सिद्धन्तों की ओर प्रवृत्त हुए। निरन्तर स्वाध्याय और सत्संग से आप अपने जीवन को पवित्र एवं वैदिक धर्मानुकूल बनाते गये। आपके परिवार में पञ्चमहायज्ञों का नियमित अनुष्ठान किया जाता है। स्वयं प्रतिदिन अग्निहोत्र करने के साथ-साथ आप अन्य परिवारों में भी कभी-कभी यज्ञ करवाते हैं। उसका वैज्ञानिक महत्त्व बताते हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन-सहयोग के लिए हम हृदय से श्री डॉ. मेहत्रे जी के आभारी हैं। इससे पूर्व आपके सौजन्य से 'वेदाङ्ग - परिचय' नामक पुस्तक का प्रकाशन हो चुका है। आपने 'आर्ष-कन्य गुरुकुल' अलियाबाद के निर्माण में भी विशेष सहयोग किया है। परमपिता परमेश्वर ऐसे धर्मात्मा, त्यागी और दानशील महानुभाव तथा उनके परिवार को सुख, शान्ति, आरोग्य समृद्धि एवं आनन्द प्रदान करें।